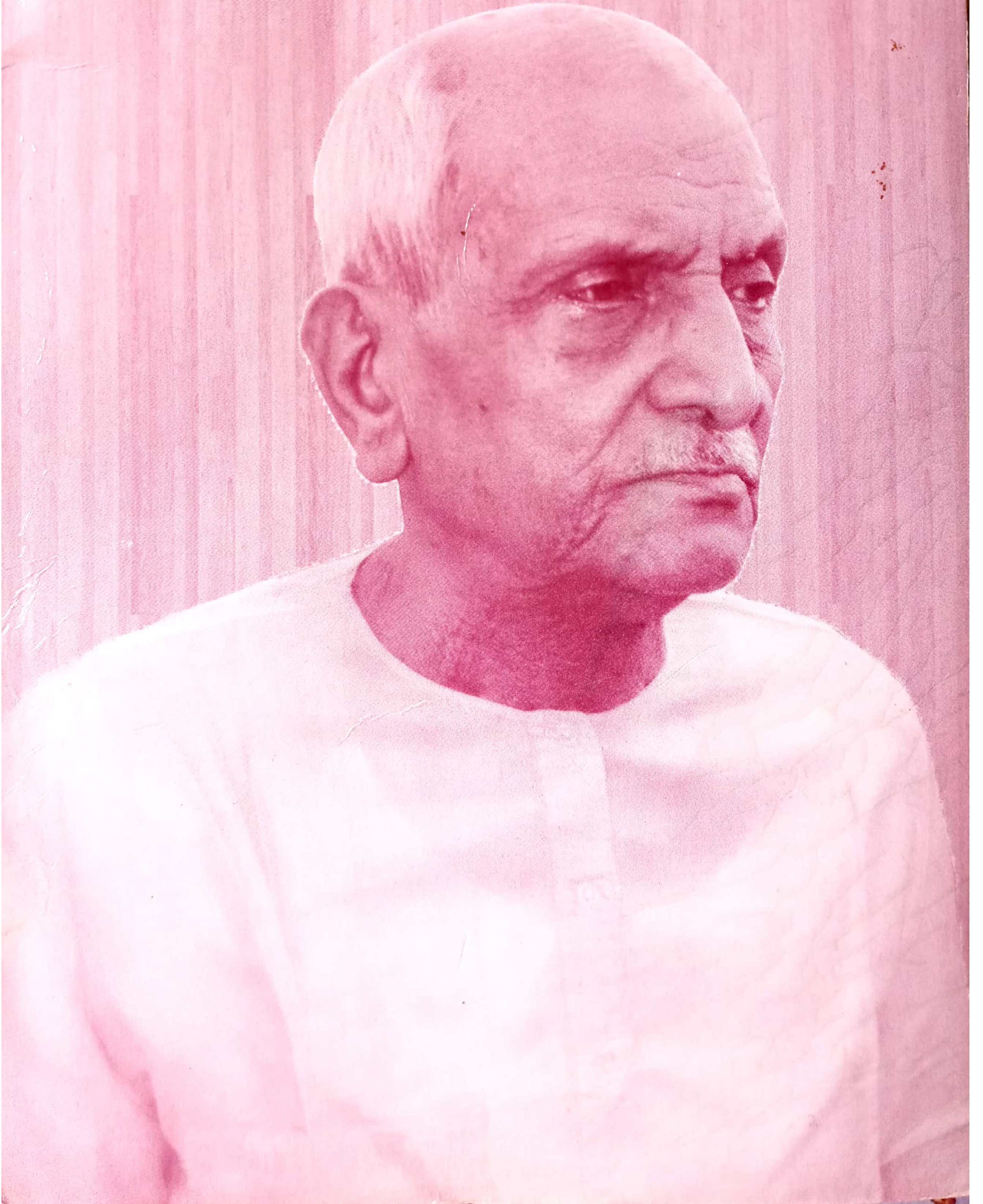
स जीवति गुणा यस्य

डा. शंकरदेव झा



स जीवति गुणा यस्य

(डा. रामदेवझा : जीवन रेखाङ्कन)

डा. शंकरदेवझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

Sa Jivati Guna Yasya (A Biographical Sketch of Dr. Ramdeo Jha; (A Versatile Genius of Maithili) by Dr. Shankerdeo Jha

प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001
9430639249

संस्करण : 2011

मूल्य : 150/- (डेढ़ सय टाका मात्र)

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

कीर्तियस्य स जीवति

गुण ओ कीर्तिमे कोन अन्तर ! जतऽ गुण ततऽ कीर्ति ओ जतऽ कीर्ति ततऽ गुण । रामदेवबाबूपर, विद्वान आ खोजी स्वभावक हुनक बालक श्रीशंकरदेवझा द्वारा लिखल जीवन-रेखाङ्कन **स जीवति गुणा यस्य** बहुत नीक लागल ।

विचार करी तँ मैथिलीक प्राध्यापक किंवा साहित्यकारमे विशुद्ध मैथिलीक छात्र ओ विद्वानमे प्रो. रामदेवझा एसगरे छथि । हिनक जोड़ा हमरा नहि भेटैत छथि । श्रीरामदेवबाबू मैथिलीक एहेन अध्यापक बनलाह, जे विशुद्ध मैथिलीक विद्वान छथि, बी.ए. ऑनर्स आ एम. ए.मे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कऽ तत्कालीन कुलाधिपति एवं बिहारक राज्यपाल डा. जाकिर हुसैनक हाथसँ स्वर्णपदक प्राप्त कयलनि आ अपन परीक्षाफल एवं विद्वत्ताक बलपर बिना कोनो पैरवी वा अन्य रास्ता अपनौने सोझे कमीशनसँ प्रथम स्थान प्राप्त कऽ मैथिलीक अध्यापकक पदकेँ सुशोभित एवं अलंकृत कयलनि । की पुरान आ की नवीन सभ मैथिलीक तथाकथित मठाधीश ओ विद्वानक बीचमे एक गोट धूमकेतु जकाँ प्रकाशित, प्रशंसित आ चर्चित बनि गेलाह । अध्यापन ओ साहित्यक लेखन दुनूमे उपर्युरि एहेन व्यक्ति दोसर हमरा तँ नहि भेटैत छथि, मैथिलीक संसारमे ।

ई बात फराक अछि जे रामदेवबाबूमे जे योग्यता, जे गांभीर्य, जे अन्वेषण करबाक प्रवृत्ति, जे गसल गद्यक लेखन आ भाषणक क्षमता भगवानसँ प्राप्त छनि, जाहि प्रकारक ई सरस्वतीक वरदपुत्र बनि कऽ एहि धरातलपर अवतरित भेल छथि, ताहि अनुरूप हिनकामे चमक-चुमक, ग्लैमर, रहन-सहन, पोशाक-परिधान नहि रहलनि । मुदा जतऽ गुण आ दक्षता आ वैदुष्यक प्रश्न उठतैक ताहिमे रामदेवबाबू अलग ठाढ़ छथि, हुनका कनहामे कनहा मिलयबाक ककरोमे से योग्यता नहि छनि । अपन छोट-छिन गुट्ट बना कऽ दुनू ठोरक बीचसँ कुटिल मुसकी दैत, नवीन लेखक-साहित्यकारसँ अपन आवासपर चाह ओ जलपान परोसनिहारकेँ राखि जतेक बड़प्पन देखयबाक चेष्ठा केओ करैत होथु; एहि जमातिक मैथिलीक तथाकथित साहित्यकार आ अध्यापककेँ अपन मुँह अएनामे देखबाक साहस तँ अवश्ये नहि छनि ।

प्रो. रामदेवबाबूकेँ केन्द्रीय साहित्य अकादेमीक दूनू पुरस्कार प्राप्त भेल छनि । दू खेप ओ मैथिली भाषा सलाहकार परिषद्क सम्माननीय सदस्य रहल छथि आ तेसर खेप तँ ओहि संस्थाक मैथिलीक प्रतिनिधि बनलापर ओकर संयोजके बनलाह ।

साहित्यकारक हैसियतसँ रामदेवबाबू साहित्यक कोनो विधाकेँ नहि छोड़लनि ।

मुदा मुख्य रुपसँ ओ नाटककार, समीक्षक, कथाकार तथा अन्वेषणक क्षेत्रमे अपन ख्याति स्थापित कयलनि । नेपालक राजकीय वीर पुस्तकालयमे किछु झाँपल मैथिली साहित्यक अमूल्य रत्नकेँ प्रकाशमे अनबाक लेल तँ ओतऽ कतोक गोटे गेलाह, मुदा मध्यकालीन मैथिलीक नाटक ओ नाटककारक अन्वेषण करबाक कार्यमे जे सफलता रामदेवबाबूकेँ प्राप्त भेलनि, से दोसराकेँ नहि भेटलैक । हालहिमे डा. सुभद्रझापर जे ओ विनिबनध लिखलनि अछि आ साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेलनि अछि, से वैहटा लिखि सकैत छलाह । साहित्यमे गद्य लिखब सबसँ अधिक कठिन होइत छैक । ओकरा जतेक चाँछल जयतैक, ततेक चमकतैक । प्रो. रामदेवझाक गद्यमे गाम्भीर्य छनि, भाषाक सौन्दर्य छनि, तथ्यपरक विवेचना रहैत छनि । मैथिली साहित्यमे सम्प्रति एहि प्रकारक गद्य वैहटा लिखि सकैत छथि ।

हमरा रामदेवबाबूसँ बहुत बादमे परिचय भेल । ओना हुनक नाम सुनैत रहियनि आ हुनक कृति पढ़ैत रही । हम जखन पटनासँ अपन 'इनिंग्स' समाप्त कऽ चल अयलहुँ, तकर बाद रामदेवबाबू ओतऽ गेलाह । दरभंगा सेहो हम 1985 इ.सँ स्थायी रूपसँ रहऽ लगलहुँ । मुदा एतेक पृष्ठभूमि तँ अवश्य समान अछि, जे दरभंगाक जिलाधीशक आवास लग सटल जे गुलटेनी मिड्ल स्कूल छैक, ताहिमे हमर नामांकन 1941इ. मे भेल छल । झाझनक टाटक भवन सभ छलैक आ जमीन ईंटासँ पाटल छलैक । 1942क अगस्त-क्रान्तिक बाद हम लहेरियासरायमे नहि रहि सकलहुँ । रामदेवोबाबू ओही गुलटेनी स्कूलसँ 1948 इ.मे मिड्लक बोर्ड परीक्षा पास कयलनि आओर 1949मे एम. एल. एकेडमी, लहेरियासरायमे हुनक नामांकन कराओल गेलनि । हम 1957 इ.मे देशक दोसर आम चुनावक बाद पटनामे रहब छोड़ि देलहुँ, आ रामदेवबाबू 1959 मे ओतऽ गेलाह । मुदा रहलाह ओही कंचन भवन होटलमे, जाहिमे हमहूँ दस वर्ष पूर्व 1949 इ. मे पटना कॉलेजक-होस्टलमे जयबाक पूर्व लगभग दू मास रहल रही ।

रामदेवबाबूक 'मैथिली शैव साहित्य', जगज्ज्योतिर्मल्लक विराट साहित्य साधनाक परिचय आ कथा संग्रह 'एक खीरा : तीन फाँक', 'मनुक संतान, 'धरती माता' तथा 'आजी माँ' साहित्यिक कृति पर्याप्त छनि । रामदेवबाबू प्रारम्भिक अवस्थासँ नाटकमे भाग लैत रहलाह आ बादमे नाटकसँ सम्बन्धित अनेक शोध-प्रबन्ध अपना निर्देशनमे लिखौलनि तथा स्वयं नाटकक कृतिकारक रुपमे प्रतिष्ठित भेलाह । नाटककार एवं रंगकर्मी दुनू होयब एकटा असाधारण बात छैक । प्रो. रामदेवझा मैथिलीक अध्यापक ओ साहित्कारमे एक गोट फराके शीर्षपुरुष छथि, हुनक तुलना मात्र हुनकेटासँ कयल जा सकैछ । हुनका सन विद्वानकेँ एतेक मृदुभाषी होयब सोनामे सुगंधिक कार्य करैत अछि । हम रामदेवबाबूपर एतेक विस्तृत आ सुगठित जीवनी लिखनिहार हुनक सुपुत्र विद्वान श्रीशंकरदेवझाकेँ हार्दिक आशीर्वाद दैत छियनि ।

1 अक्टूबर 2011

सुरेश्वरझा

स जीवति गुणा यस्य

कुल-वंश

दरभंगा जिला मुख्यालय लहेरियासरायसँ सटले पूब एकटा गाम अछि- कबिलपुर। पूरब भीगो परगनाक अन्तर्गत मौजे बलभद्रपुरमे 'टोले कबिलपुर' नामसँ पुरान सरकारी अभिलेखादिमे प्रसिद्ध ई गाम, आब वास्तवमे गाम नहि रहि गेल अछि। अर्द्ध शहरी परिवेशवला ई गाम आब लहेरियासरायक एकटा अंगे बनि गेल अछि। गाम पुरान अछि। अतीत कालमे एहि गामक प्रसिद्धि एहि गाम मध्य अवस्थित एकटा कबीरपन्थी मठकेँ लऽ कऽ छल। प्राय: एही कारणे पहिने एहि गामक नाम 'कबीरपुर' छल, पछाइत ई मुखसुखक कारणे कबिलपुर कहाबऽ लागल।

कबिलपुरमे शाण्डिल्य गोत्रीय, सामवैदिक छान्दोग्य शाखाक ब्राह्मण लोकनिक निवास छनि, जनिका लोकनिक कुलदेवता थिकथिन- नरसिंह। हिनका लोकनिक मूल थिकनि- छतिवनय-छतिवन। छतिवन गाम, दरभंगा-सकरी रेलपथक बीच स्थित तारसराय स्टेशन लग अछि। कबिलपुरक छतिवनय मूलक ब्राह्मणलोकनिक बीजीपुरुष छलथिन भीमसिंहझा। हिनक आठम पीढ़ीमे भेलथिन वासुदेवसिंहझा प्रसिद्ध बलभद्रझा। बलभद्रझाकेँ अपन पैतृक सम्पत्तिक बँटवारामे भीगो परगना भेटल छलनि। कोनो कारणवश भीगो परगनाक दू भाग भऽ गेल। पूरब भीगो ओ पच्छिम भीगो। बलभद्रझा अपन पुरखाक डीह छतिवनकेँ छोड़ि पूरब भीगो परगनामे अपना नामपर बलभद्रपुर गाम बसौलनि। पुरान पंजीमे एहि वंशक मूल दीघो-छतिवन अछि, मुदा अपन निवास स्थान परिवर्त्तनक बादसँ हिनक वंशज लोकनिक मूल बदलि कऽ भऽ गेलनि छतिवनय-छतिवन। वासुदेवसिंहझा प्रसिद्ध बलभद्रझाक चारि गोट पुत्रमेसँ पहिल, दोसर आ चारिम बलभद्रपुर छोड़ि आन-आन स्थानपर जा कऽ बसलथिन। तेसर पुत्र जगन्नाथसिंहझा प्रसिद्ध जयभद्रझा बलभद्रपुरहिमे रहलथिन। जगन्नाथसिंहझाकेँ छओ गोट बालक भेलथिन। एहिमेसँ कोनो कारणावशात् पहिल पुत्र नरोत्तमसिंहझा महुआ, चारिम पुत्र परमानन्दसिंहझा वैशाली, पाँचम श्यामसिंहझा भोजपट्टी, छठम सदानन्दसिंहझा नजरपट्टीमे जा कऽ बसलथिन। पितामहक भूमिपर रहि गेलथिन दोसर पुत्र उमापतिसिंहझा प्रसिद्ध बाबूजीझा

आ तेसर पुत्र मानसिंहझा। बलभद्रपुर निवासी एहि दुनू भाइक मध्य भीगो परगनाक अपन अधिकारक अवशिष्ट भागमे जे जेना बँटवारा भेल होइनि। मुदा मौजे बलभद्रपुरक दू भागमे विभाजन भेल-बलभद्रपुर-बाबू आ बलभद्रपुर-मानसिंह। मानसिंहझा बलभद्रपुरहिमे अपन पितामहक डीहपर रहलाह, मुदा उमापतिसिंहझा प्रसिद्ध बाबूजीझा बलभद्रपुर मौजेक कबिलपुरमे अपन नवीन आवास स्थिर कयलनि। कबिलपुरमे बसबाक कारणे पछाति पंजीमे हिनक सन्तति लोकनिक संग डेरा-कबिलपुर जुड़ि गेलनि।

कबिलपुर निवासी उमापतिसिंहझा प्रसिद्ध बाबूजीझाक नवम पीढ़ीमे भेलथिन रामशरणझा। रामशरणझाकेँ छओ गोट सन्तानमे चारि गोट कन्या क्रमशः पार्वती, रामरती, रामसखी ओ रामसती तथा दुइ गोट पुत्र भेलथिन- कुशेश्वरझा ओ कपिलेश्वरझा। कपिलेश्वरझा अपन पिताक चारिम सन्तान छलाह।

पिता

यैह कपिलेश्वरझा भेलथिन आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक शलाकापुरुष डा. श्रीरामदेवझाक पिता। कपिलेश्वरझाक जन्म सन 1301 साल अर्थात् 1894इ.मे भेलनि। ई विशुद्ध गृहस्थ रहथि। पुरखा लोकनिक जमिन्दारी यद्यपि रिआइत-खिआइत आना-गण्डामे शेष रहि गेल छलनि तथापि मरौसी ओ अर्जित रैयतियो जमीन-जथा कम नहि छलनि। सब मिला कऽ बढ़ियाँ आस्था-पात। गृहस्थ रहितो कपिलेश्वरझाकेँ पढ़बा-लिखबाक प्रति विशेष अभिरुचि। देवनागरीक संग-संग तिरहुता, कैथी, उर्दू ओ अंग्रेजी लिपिक ज्ञाता। जमीन-जालक कागज-पत्र बुझबामे बेस पटु ओ हिसाब-बारी करबामे निपुण। जमीनक हिसाब-किताब, नाप-जोख, रसीद-फारक, लगान-मालगुजारी आदिक विशेष ज्ञान ओ अनुभव रहबाक कारणे ई अपन गाम-इलाकामे मनसीजी (मुनशीजी)क नामसँ सेहो जानल जाइत छलाह। कपिलेश्वरझा अपन परिश्रम ओ बुद्धिसँ अपन जमीन-जथाकेँ बचा-बढ़ा कऽ अपन घर-गृहस्थीकेँ सुदृढ़ बना कऽ रखने रहथि। तेँ दलानपर गाय-बड़द, हर-पालो आ घरमे कोठी सबमे भरल नाना प्रकारक अन्न।

भायमे छोट कपिलेश्वरझाक विवाह हुनक बीसम वर्षमे 1913मे लहेरियासरायसँ सटले दच्छिन स्थित सहोड़ा गामक पं. जीतलालमिश्रक आठ वर्षीया कन्या देवयती प्रसिद्ध बच्चादाइसँ भेलनि। दुःसंयोगवश विवाहक वर्ष बितैत-बितैत चैत मासक पूर्णिमा दिन गाममे पसरल महामारीमे हिनक पिता रामशरणझाक देहान्त भऽ गेलनि। रामशरणझा ओहि समयमे प्रौढ़ तँ छलाह, परन्तु मृत्युक अवस्था नहि छलनि। परिवारपर विपत्तिक पहाड़ खसि पड़लनि। हुनक पुत्रद्वय घर-परिवार, खेत-पथारकेँ जेना-तेना सम्हारलथिन।

कपिलेश्वरझा युवावस्थामे प्रवेश कयनहि छलाह, तखनहि पितृवियोग भेलनि। ओ छोट होइतो अपना समयमे बेस बुझनुक, बुधियार ओ कर्मशील छलाह। ओ ने केवल

घर-परिवारकेँ सम्हारलनि, अपितु अपन दुइ गोट छोटि बहिनिक बियाहदान सेहो नीक जकाँ करौलनि। किछु भू-सम्पदा सेहो अरजलनि। परन्तु ई सब होइतो बड़का विपत्ति पड़ि गेलनि हुनक नवपरिणीता पत्नी बच्चादाइपर जनिका सासु चतुरमनि (ओझौलवाली) अलच्छी बूझऽ लगलथिन। हुनक मोनमे अपन छोट पुत्रवधूक प्रति जे ओ शत्रु भाव जगलनि से मृत्यु पर्यन्त बनल रहलनि। बच्चादाइकेँ सासुरमे चिरकाल धरि प्रताड़ना देल जाइत रहलनि। पत्नीक प्रति परिवारक दुर्व्यवहार देखितो कपिलेश्वरझा लोक-लाजक कारणे मौन रहि घर सम्हारैत रहलाह। समय एहिना बीतैत रहल। कतेको वर्ष बीति गेल। कपिलेश्वरझाकेँ कोनो सन्तान नहि भेलनि।

एही क्रममे 1934क बड़का भूकम्पसँ किछु वर्ष पूर्व हिनक जेठ भाय कुशेश्वरझा एकटा कन्या आ नवजात दूटा जौंआँ बालककेँ छोड़ि असमये दिवंगत भऽ गेलथिन। परिवारपर भेल ई दोसर बज्रपात जेना हिनक घरकेँ फेरसँ अस्त-व्यस्त कऽ देलक। तथापि कपिलेश्वरझा साहसपूर्वक समस्त परिवारक बोझ अपन कान्हपर उठा लेलनि। एकर बादो कपिलेश्वरझाकेँ सुखद पारिवारिक जीवन दुर्लभे रहलनि। परिवारक स्त्रीगण लोकनि द्वारा बच्चादाइकेँ औरो बेसी उकसोबास देल जाय लगलनि।

कपिलेश्वरझा अपन परिवारक एहि विषम परिस्थितिसँ सदिखन सीदित रहल करथि। एहि मानसिक क्लेशक कारणेँ ओ रुग्ण रहऽ लगलाह। पारिवारिक कलहसँ दूर रहबाक उद्देश्यसँ ओ अपन बेसी समय खाजासराय स्थित 'डेरापर' बिताओल करथि।

डेरा पर : लहेरियासरायमे आफिसर्स क्वार्टर्ससँ पच्छिम मिडिल स्कूलक निकट हथौड़ी रोडक तिनबट्टीसँ सटले सड़कक पच्छिम राजदरभंगाक एकटा सात-आठ बीघाक कोठी छलैक। एहिमे सड़क दिससँ पैघ मकान ओ तकरा पाछाँ खेत, चभच्चा, गाछी, बँसबिट्टी, तड़बनी आदि छलैक। कोनो समयमे राजक एकटा मनेजर गौरीशंकर प्रसादक ई कचहरी छलनि। पाछाँ ई राजनगरक जिम्मामे चल गेल। उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे एहि कोठीक स्थानीय व्यवस्थापक छलाह रामशरणझा। हुनक मृत्युक पश्चात कपिलेश्वरझा हुनक स्थान लेलनि। राजक जे पुरना मकान छलैक से भूकम्पमे ध्वस्त भऽ गेलैक। ओकर किछुए अंश सुरक्षित रहि सकल छल। यैह कहबैत छल-डेरा। कपिलेश्वरझाकेँ राजदरभंगाक राजनगर कार्यालयसँ वेतन भेटैत छलनि तथा भूमिक बन्दोवस्ती सेहो हिनकहि भेटैत छलनि। तेँ ओहि क्षेत्रक वास्तविक मालिक यैह बूझल जाइत छलाह।

खाजासरायक एहि डेराक चारू कातक क्षेत्र ओहि समयमे बुद्धिजीवीक केन्द्र मानल जाइत छल। महात्मा गान्धीक सहयोगी प्रसिद्ध अधिवक्ता ब्रजकिशोर प्रसाद, धरणीधर प्रसाद, प्रियनाथमित्र, हरिवंशी सहाय, शिवनारायणसिंह आदि लोकनिक आवास एही ठाम छलनि। खराड़ी ओ केओटसा-बरुआरीक डेउढ़ी, पुस्तक भंडारक अधिष्ठाता

रामलोचनशरणक फुलवाड़ी ओ गोदाम एही डेराक अगल-बगलमे छलनि । कपिलेश्वरझाकेँ अपन एहि ठामक उक्त प्रतिवेशी लोकनिक संग बड़ आपकता छलनि । हिनका लोकनिक संग निरन्तर साहचर्यमे रहबाक कारणेँ कपिलेश्वरझाकेँ देश-दुनियाँक बात बुझबाक अवसर भेटल करनि । ब्रजकिशोरबाबूक पुत्रक संगे हिनक विशेष घनिष्ठता रहनि । दुनू परिवारक बीच खान-पीन, आन-जानक सम्बन्ध छलनि । कपिलेश्वरझाक छोट बहिन रामसखी ओ ब्रजकिशोरबाबूक पुत्री तथा जयप्रकाशनारायणक पत्नी प्रभावतीक बीच बहिनपा लागल छलनि ।

माता

रामदेवझाक माय देवयतीक विवाह सहोड़ा निवासी पं. जीतलालमिश्र बड़ मनोरथसँ कबिलपुरक निट्ठाह गृहस्थ परिवारक कर्मठ ओ पटु बालक कपिलेश्वरझासँ कयलथिन । जीतलालमिश्र स्वयं सहोड़ाक भगिनमान रहथि । केतुका (दरभंगा) निवासी वत्स गोत्रीय हरिअम्मय-आही मूलक भलमानुस वंशक संस्कृत पंडित कालिकामिश्रक विवाह सहोड़ाक शकिलवारे मूलक श्री-सम्पन्न जमीन्दार परिवारक कन्यामे भेल छलनि । कालिकामिश्र अपन सासुरमे बसलाह वा नहि से केओ कहनिहार नहि अछि, परन्तु हुनक पत्नी अपन तीनगोट पुत्रक संग नैहरेमे रहि गेलथिन । हुनक सबसँ ज्येष्ठ पुत्र छलथिन जीतलालमिश्र । जीतलालमिश्रक ममियौत छलथिन सहोड़ाक श्यामसुन्दरचौधरी प्रसिद्ध नन्हकूबाबू । जीतलालमिश्रकेँ एक गोट बालक ओ ताहिसँ छोटि तीनटा कन्या छलथिन । एहिमे जेठि कन्या छलथिन देवयती, जनिक दुलारक नाम छलनि बच्चादाइ ।

माय-बापक अतिशय दुलारी बच्चादाइ अत्यन्त गुणवती छलीह । लिखिया-पढ़िया, गीत-नाद, सियाइ-कढ़ाइ, सीकी-मौनी आदि सब लूरि-व्यवहारमे निपुण, तेहने व्यवहार-पटु । जखन अपन बेटीक विवाहक घटकैती हेतु जीतलालमिश्र कबिलपुर गेल छलाह तँ अपन कन्याक साक्षरा होयबाक प्रमाणस्वरूप बच्चादाइसँ पोड़ोक पाकल भुटकाक रंगमे कड़चीक कलमसँ कागतपर अपन, अपन पिता ओ पितामह तथा गामक नाम लिखबा कऽ लऽ गेल छलाह । एतावता 1913मे रामशरणकझाक कनिष्ठ पुत्र कपिलेश्वरझाक संग हिनक विवाह सम्पन्न भेलनि ।

द्विरागमन भऽ कऽ सासुर अयलाक बाद बच्चादाइकेँ सासुक स्नेह नहि भेटलनि । जा धरि ई अबोध छलीह ता धरि बेसी काल नैहरेमे रहथि । मुदा जखन सज्ञान भेलीह तखन हरसट्ठे नैहर जायब बन्द कऽ देलनि । अपना प्रति सभक प्रतिकूल व्यवहारकेँ देखितो मुँहपर सपटी लगौने सब किछु सहैत रहलीह । विवाहक 23 बरखक बाद हिनक आँचर भरलनि । ओहि समयमे कपिलेश्वरझाक वयस तैंतालिस ओ बच्चादाइ एकतीस बरखक रहथि । हिनक एहि नव समाचारसँ सासुरमे कोन तरहक प्रतिक्रिया भेल

से नहि कहल जा सकैछ, मुदा नैहर सहोड़ामे हर्षक सागर उमड़ि पड़ल। पिता अपन बेटीकेँ लेयाओन करा कऽ लऽ गेलथिन। सहोड़ामे सन 1343 साल अर्थात 1936 इ.क अगस्त मासमे श्रावणी पूर्णिमाक दिन (शैक्षणिक प्रमाण-पत्रमे 3 मइ 1936)बच्चादाइ एकटा पुत्रकेँ जन्म देलनि। रामक परम भक्त मातामह जीतलालमिश्र अपन एहि प्रथम दौहित्रक नाम रखलनि- रामदेव। रामदेवक जन्मक चारि साल बाद 1940मे बच्चादाइकेँ दोसरो पुत्र भेलनि, जनिक नाम राखल गेल-बलदेव।

यद्यपि रामदेवक जन्मक संग बच्चादाइपर लागल बाँझिनक अभिशाप समाप्त भऽ गेलनि, परन्तु कबिलपुरमे पिताक अतिरिक्त परिवारक अन्य लोकक मनमे हर्षक स्थानमे विषादेकेँ जन्म देलक। अपन एहि नवजात प्रथम पुत्रकेँ लऽ कऽ जखन ओ अपन सासुर कबिलपुर अयलीह तँ एहि ठामक दुर्व्यवहारमे वृद्धिए भऽ गेल। कुलमे बेटा जन्मक उत्साहक कोन कथा, उनटे किछु गोटाकेँ विषाद भऽ गेलनि जे पटीदार जन्म लऽ लेलक। दुनू माय-पूतक अवहेलना कयल जाय लगलनि। बच्चादाइकेँ भेलनि जे एहि स्थितिमे अपन सन्तानकेँ पोसबाक कोन कथा, ओकर प्राणरक्षो करब हुनका लेल असम्भव भऽ जयतनि। एहनामे एकदिन कुशल-क्षेमक जिज्ञासामे हुनक जेठभाय रामजतनमिश्र अयलथिन। बच्चादाइ अपन मातृत्वपर नियन्त्रण रखैत, अपन छातीकेँ वज्र बना कऽ दुधमुँहा शिशुकेँ अपन भायक कोरमे दऽ कऽ पालन-पोषणक हेतु सहोड़ा पठा देलथिन।

बाल्यकाल

मायक दूध छोड़ा कऽ अबोध शिशुकेँ मातृक लऽ आनल गेलनि। मातामही सीतासुन्दरि पाथरपरक दूभि सन अपन नातिकेँ करेजसँ सटा लेलनि। गायक दूधपर बच्चाकेँ पोसल जाय लागल। एतहि रामदेव बाजब सिखलनि, डेगा-डेगी दऽ कऽ चलब सिखलनि। बच्चा भरि घरक खेलौना बनि गेल। नाना-नानी, मामा-मौसी, ममियौत भाइ-बहीन सभक अजस्र स्नेह पबैत रामदेवक बाल्यावस्था ओतहि बितलनि।

ठाकुरजीक भरिया : हिनक मातामहक परिवार वैष्णव रहनि, सेहो दुद्धा वैष्णव। ठाकुरजीक विशेष पूजा होइनि। राम-सीता ओ गोपालजीक विग्रहक संग-संग शालग्राम-नर्मदेश्वर तथा महावीरजीक मूर्त्ति सब एकटा विशेष सिंहासनपर सजाओल रहैत छलनि। विष्णुक प्रति हुनका लोकनिक विशेष आस्थाहिक कारणे अपन परिवारक अधिकांश बच्चाक नामकरण रामहिक नामपर कयल गेल छल। जीतलालमिश्रक ममियौत नन्हकूबाबूकेँ सेहो ठाकुरजी रहथिन। कोनो अशौचक स्थितिमे ओ ठाकुरजीकेँ मिश्रजीक ओतऽ पठा देल करथिन। तहिना मिश्रजीक ओहि ठामसँ सेहो ठाकुरजीकेँ हुनका ओतऽ पठा देल जाइत छलनि। परगोत्री होयबाक कारणेँ बालक रामदेवकेँ बेसी काल ठाकुरजीक भरिया बनबाक सौभाग्य भेटल करैत छलनि। एहि धार्मिक वातावरणक प्रभाव बालक रामदेवक संस्कारपर पड़ैत चल गेलनि।

साधु संगति : हिनक एहि आस्थावादी संस्कारकेँ औरो बेसी सुदृढ कयलक हिनक साधु-संगति । रामदेवक एकटा मातामह-भ्राता अर्थात् जीतलालमिश्रक कनिष्ठ सोदर रहथिन बिहारीमिश्र । बिहारीमिश्र बाल ब्रह्मचारी नागा सन्त छलथिन । हुनक आहार दूध मात्र छलनि । अपन जीवनक आरम्भिक कालमे बिहारीमिश्र विभिन्न तीर्थादिक भ्रमण करैत साधनामे लागल रहलथिन । वृद्ध भेलापर अपन गाममे दलानेपर धूनी रमा कऽ रहऽ लागल छलथिन । हुनक दर्शनार्थ दूर-दूरसँ श्रद्धालु लोकनि अबैत रहैत छलथिन । इलाकामे नागाबाबा नामसँ प्रसिद्ध सन्त बिहारीमिश्र पहर रातियेसँ बाँसुरीक संग पराती ओ भजनक टाहि उठा देल करथिन । शिशु रामदेवकेँ नागाबाबाक सान्निध्य ओ आशीर्वाद भेटल करनि । रामदेव जँ-जँ बोधगर भेलाह तँ-तँ नागा बाबाक प्रति हुनक अन्तस्मे भक्ति आ अनुरक्ति बढ़िते गेलनि । बालक रामदेव हुनक विशेष सेवा-टहलमे रहल करथि । नागाबाबा जखन वैकुण्ठवासी (माघ, 30 जनवरी, 1948) भेलाह तँ रामदेवकेँ मातामही हुनक बाँसुरीकेँ नागाबाबाक आशीर्वाद कहि कऽ दऽ देलथिन । ओ बाँसुरी एखनहुँ हिनक परिवारमे जुगता कऽ राखल छनि । नागाबाबाक स्मृतिस्वरूप राखल एहि पित्तरिक बाँसुरीक नित्यप्रति पूजा कयल जाइछ ।

कहबी छैक जे कोनो बच्चाकेँ दूरि करबाक हो तँ ओकरा मातृकमे छोड़ि दी, मुदा रामदेव एकर अपवाद भेलाह । मातामह जीतलालमिश्र अपन दौहित्रकेँ शिक्षित-संस्कृत करबाक प्रति विशेष साकांक्ष रहल करथि । संस्कृतक पंडित, कर्मकांडी मातामह अपन दौहित्रकेँ सन्ध्या-वन्दन, पूजा-पाठक समय अपना लगमे बैसा कऽ रखथिन । नाना प्रकारक श्लोक ओ सूक्ति सब रटबथिन ।

मैञाक दुलार : मातामही सीतासुन्नरिकेँ परिवारक बच्चा सब मैञा कहल करनि तेँ रामदेव सेहो नानी नहि कहि हुनका मैञे कहल करथिन । मैञा विभिन्न विधि-बाधक विशेष ज्ञान रखबाक कारणे ओ लूरि-व्यवहार, गीतनादमे पटु रहबाक कारणे गामभरिमे पंडिताइन मानल जाथि । कोनो काज-प्रयोजनक अवसरपर हुनकेसँ पूछल जाइनि । मातामही नित्य सूतऽ कालमे अपन नातिकेँ रंग-विरंगक खिस्सा-पिहानी सुनबथिन । मैञाक मुँहेँ सुनल अनेक गीत, फकड़ा, कहबी आदि जेना बालक रामदेवकेँ कण्ठस्थ होइत चल गेलनि आ क्रमशः हिनक लौकिक संस्कार दिन-प्रतिदिन प्रगाढ़ होइत चल गेलनि ।

रामदेवक मातृक सहोड़ासँ सटले अछि आनन्दपुर । सहोड़ा-आनन्दपुर नामसँ इलाकामे ख्यात एहि परिसरक अपन फराके सांस्कृतिक महत्त्व रहलैक अछि । आनन्दपुर डेउढ़ीक खरोड़य बबुआन लोकनिक जेहने बबुआनी नामी तेहने ओहि ठामक दुर्गापूजाक मेला प्रसिद्ध । सहोड़ा गाममे सेहो जमीन्दारी वैभवक प्रतीक स्वरूप सदिखन कोनो ने कोनो आयोजन भेले करय । जीतलालमिश्रक ममियौत श्यामसुन्दरचौधरीक दलान गाममे

बड़का दलानक नामसँ प्रसिद्ध छलनि । कृष्ण, बलराम, सुभद्रा, नन्दमहर, वसुदेव, देवकी इत्यादिक मूर्त्तिक निर्माण कऽ कृष्णाष्टमी पूजा आ मेलाक आयोजन भेल करैत छल । ओहि अवसरपर भजन-कीर्त्तन, गीत-संगीत, नटुआ-पमरिया आदिक नाचक आयोजन भेल करैत छल । बालक रामदेव सेहो अपन ममियौत लोकनिक संग नाच-तमासा देखऽ जाथि । जयबा कालमे मैञा हिनका लोकनिक हाथमे तमही पैसा दऽ देल करथिन नटुआकेँ बख्शीशक रूपमे देबाक हेतु ।

मामाक छाया : रामदेवक एकमात्र माम पं. रामजतनमिश्रकेँ रंगकर्ममे विशेष अभिरुचि रहनि । उपनयनक बाद हुनका पिता संस्कृत पढ़यबाक हेतु काशी पठौलथिन । मुदा कोना ने कोना ओतऽ जा कऽ ओ नाटक-रंगकर्मसँ जुड़ि गेलाह । पश्चात् रंगकर्मेकेँ अपन वृत्ति बना पारसी थियेटर ओ रामलीला मंडलीमे रमि गेलाह । रामजतनमिश्र जाहि थियेटरसँ सम्बद्ध छलाह से हिन्दीमे तँ नाटक करिते छल, आमन्त्रण भेटलापर उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषहुमे नाटक खेलाइत छल । तेँ रंगकर्मी रामजतनमिश्रकेँ एहि सब भाषाक ज्ञान भऽ गेल छलनि । ओ जखन कोनो अवसरपर गाम आबथि तँ गामोमे नाटकक आयोजन होइक । बालक रामदेवकेँ नेनेसँ नाटक ओ रंगमंचक वातावरण भेटलनि ।

रामजतनमिश्र जेहने सिद्धहस्त रंगकर्मी छलाह तेहने काव्य रचनामे सेहो पटु रहथि । ओ आशुकवि छलाह । ककरोपर कविता गढ़ि देबामे निपुण । ओ 'पतित' उपनामसँ मैथिली आ ब्रजभाषा दुनूमे काव्य रचना करैत छलाह । चौगमा निवासी कविवर सीतारामझाक मातृक सेहो सहोड़े छलनि । काशी दुनू गोटेक कर्मभूमि छलनि, तेँ दुनूगोटामे बेस आपकता । सीतारामझा जखन देश आबथि तँ अपन मातृक जाथि । ओहि ठाम साहित्यिक गोष्ठी जमि गेल करय । बालक रामदेवकेँ एहि साहित्यिक गोष्ठीकेँ विशेष काल देखबा ओ सुनबाक अवसर भेटल करनि । मामक साहित्यिकता ओ मातृकक ई साहित्यिक परिवेश हिनकामे साहित्यक बीज-वपन कयलक जे क्रमशः झमटगर होइत आइ विशाल वटवृक्षक रूप धारण कऽ लेलक अछि ।

अपन गामक षड्यन्त्रमय वातावरणसँ दूर मातृकमे रामदेवकेँ स्वच्छ परिवेश भेटलनि, जतऽ नाना-नानीक असीम दुलार पबैत, स्वच्छन्द भावसँ नाटक-तमासा देखैत, सहोड़ाक अपन बाल संगी अपन जेठ ममियौत भाइ-बहीन रामसुजान ओ रामकलाक संग बाध-बोन, पोखरि-झाँखरि, गाछी-बिरछी, खेत-पथार घुमैत हिनक बाल्यावस्था बितलनि ।

शिक्षा-दीक्षा

रामदेवकेँ हुनक मातृकहिमे भट्ठा धराओल गेलनि । जखन ई पाँच वर्षक भेलाह तँ वसन्तपंचमीक दिन मातामह भट्ठासँ धरतीपर 'आँजी सिद्धिरस्तु' आ 'ओनामासीधं'

दुनू लिखा विद्यारम्भ करौलथिन । तत्पश्चात् हिनक नामांकन सहोड़ाक लोअर प्राइमरी स्कूलमे कराओल गेलनि । रामदेव जखन लोअरमे रहथि तावत धरि हिनक माता-पिता अपन परिवारसँ भिन्न भऽ थोड़ेक व्यवस्थित भऽ गेल रहथिन । अपन जेठ बालककेँ निर्भय भऽ कऽ गामपर राखि पढ़यबाक विश्वास भऽ गेलनि, तखन ओ लोकनि रामदेवकेँ कबिलपुर लऽ अनलथिन ।

गाम अयलाक बाद डेरापरसँ निकट रहबाक कारणेँ खाजासरायक अपर प्राइमरी स्कूलमे हिनक नाम लिखाओल गेलनि ।

सम्पर्क विस्तार : एहि स्कूलमे आबि कऽ रामदेवकेँ पहिल बेर ब्राह्मणसँ इतर वर्गक विस्तृत मैथिल समाजकेँ निकटसँ देखबाक ओ संग रहबाक अवसर प्राप्त भेलनि । खाजासराय स्कूलमे सवर्णक विशेषतः ब्राह्मण छात्रक संख्या अत्यल्प । ताहि तुलनामे राजपूत आ कायस्थक संख्या बेशी । मुख्यतः एहि स्कूलमे धुनित्रा आ कुजरा जातिक मुसलमान, सूड़ी, हलुआइ, तेली, मलाह, कुम्हार, लहेरी, यादव, मोची आदि जातिक धीयापुता सब पढ़ैत छल । मिथिलाक एहि सर्वजन समाजक संग हिनक सान्निध्य-लाभ हिनक भावी साहित्यिक जीवन ओ साहित्य-धाराक दिशाकेँ जेना निश्चित कऽ देलक । एहि स्कूलक बहुतो सवर्णेतर मित्रसँ आइयो हुनका ओतबे घनिष्ठता छनि ।

इतिहास पुरुषक अबोध दर्शन : एही खाजासराय मोहल्लामे डेरा रहनि महात्मा गान्धीक अनन्य सहयोगी वकील बाबू धरणीधर प्रसादजीक । ओहि समयमे ओ शहरक प्रबुद्धतम व्यक्तिमेसँ एक मानल जाइत छलाह । 1945मे जखन ओ बूढ़-झुनकुट भऽ गेल रहथि, हुनकहि डेराक सामने दऽ कऽ रामदेवक स्कूल अयबा जयबाक बाट छलनि । से स्कूलक शिक्षक लोकनि रामदेवकेँ दूटा काजसँ नित्यप्रति धरणीधरबाबूक डेरापर पठबैत छलथिन । पहिल बेर टिफीनक छुट्टीमे हुनका ओतऽसँ अखबार अनबाक हेतु आ दोसर बेर छुट्टीसँ पहिने अखबार दऽ कऽ हुनका ओतऽसँ समय बूझि कऽ आबऽ लेल, जाहि आधारपर ठीक चारि बजे स्कूलक छुट्टीक घंटी बजाओल जाइत छल ।

धरणीधरबाबूसँ कपिलेश्वरझाकेँ पूर्वहिसँ आपकता छलनि । प्रतिदिनक आवाजाहीसँ ओ रामदेवकेँ सेहो नीक जकाँ जानि गेल छलथिन । ई जहाँ हुनका ओतऽ पहुँचथि की ओ अपनेसँ अखबार लऽ कऽ दैत पुछथिन- मन लगाकर पढ़ते हो न ?' रामदेव अपन मूड़ी डोला देथि । दोसर बेर जखन ई अखबार आपस करऽ जाथि तँ ओ टेबुलपर राखल टाइमपीस दिस एक नजरि देखि समय कहि देल करथिन । एक दिन धरणीधरबाबू कोनो काजमे लागल रहथि । रामदेव अखबार टेबुलपर राखि चुपचाप प्रतीक्षा करऽ लगलाह । धरणीधरबाबू हिनका थकमकायल ठाढ़ देखि कहलथिन- घड़ीमे देखकर बताओ कितना बजा है ?' रामदेव अकबका गेलाह । तथापि ओ घड़ी दिस देखलनि । दूर बैसल

धरणीधरबाबू मुस्कियाइत पुछलथिन- बताओ कितना समय हुआ है ?' रामदेव अन्दाजेसँ कहलथिन- जी, चारि बाजि गेलै ।'

-ओ ! तो तुम जल्दी छुट्टी करबाना चाहते हो । घर जाने की जल्दी है क्या ? भूख लग गयी है !' एतेक कहैत धरणीधरबाबू पुनः अपनेसँ उठि कऽ अयलथिन । घड़ीमे तखन साढ़े तीने भेल रहैक । ओ बूझि गेलथिन जे एहि बच्चाकेँ घड़ी देखऽ नहि अबैत छैक । ओ अत्यन्त स्नेहसँ रामदेवकेँ बैसाय ओहि दिन घड़ी देखब सिखौलथिन । तकर बाद तँ रामदेवकेँ हुनकासँ समय पुछबाक प्रयोजने नहि रहि गेलनि । धरणीधरबाबू हँसैत कहथिन- बहुत काबिल हो गया है कपिलेश्वरझा का लड़का' । ताहि दिन की रामदेव जनैत रहथि जे जाहि व्यक्तिक संग हुनक प्रतिदिन गप्प होइत छनि से कोनो सामान्य हस्ती नहि, इतिहास पुरुष छथि । महात्मा गान्धीक आत्मकथामे जहिया ई धरणीधरबाबूक नाम देखलनि, तहिया ई चौंकल रहथि आ अपनापर गर्व भेल रहनि ।

भारत बालमंडली : अपर प्राइमरी पास कयलाक बाद रामदेवक नाम लहेरियासराय मिडिल इंगलिश स्कूलमे लिखाओल गेलनि । ओहि समयमे इलाकामे गुलटेनी स्कूल (गुरु ट्रेनिंग स्कूल) नामसँ प्रख्यात एहि स्कूलक जिलामे बड़ प्रतिष्ठा छलैक । ताहि दिन देशमे स्वतन्त्रता आन्दोलनक लहरि चरमपर छल । बच्चा-बच्चामे अंग्रेजी अत्याचारक प्रतिशोध लेबाक भावना जेना जागि गेल छलैक । स्कूलक हेडमास्टर रामदेवसिंह रहथि, नित्य खद्धड़क धोती-कुर्त्ता ओ गान्धी टोपी पहिरनिहार । मिडिल स्कूलमे अयला उत्तर रामदेवक मित्र मंडलीक परिधि औरो बेसी बढ़लनि । एहिनामे एक दिन राष्ट्रवादी भावनासँ प्रेरित भऽ रामदेवक अपन वर्गक दस गोट छात्रक एकटा गुप्त **भारत बालमंडली** बनल छल । एहि मंडलीक नियमित बैसाड़ स्कूलक छुट्टीक बाद कोनो एकान्त स्थानमे भेल करैत छल । एहि मंडलीमे हिनका अतिरिक्त रामबिहारीझा (देकुली), गंगाप्रसादझा (कबिलपुर), रामाश्रयउपाध्याय (कबिलपुर), वामदेवझा (थलवार), दिगम्बरचौधरी, आशनारायणचौधरी, नरसिंहचौधरी (तीनू पनिचोभ), महेन्द्रनारायण मण्डल इत्यादि व्यक्ति छलथिन । एहि मंडलीक बैसाड़मे एकदिन एकटा छूरा किनबाक निर्णय लेल गेल । एकर पाछाँ उद्देश्य छल जे जँ कदाचित् 'गोर्रा पलटन' मंडलीक कोनो सदस्यकेँ पकड़त वा किछु कहत तँ सब गोटा मीलि कऽ एहि छूरासँ ओकर प्रतिकार करताह । बैसाड़मे एहू बातक निश्चय भेल जे मंडलीक प्रत्येक सदस्य लग एक-एक दिन ओ छूरा रहत आ ई चक्र निरन्तर चलैत रहत । छूरा किनबाक हेतु मंडलीक प्रत्येक सदस्य द्वारा किछु किछु पैसा बेहरीमे देल गेल ।

एक दिन चुपचाप बजारसँ छूरा कीनि कऽ लऽ आनल गेल । मुदा भारत बाल मंडलीकेँ ओहि छूराक प्रयोगक प्रयोजने नहि पड़लैक । 15 अगस्त 1947केँ देश स्वतन्त्र भऽ गेल । स्वतन्त्रता आन्दोलनक ओ अन्तिम समय रामदेवक बाल-मनपर कोन

तरहक राष्ट्रवादी प्रभाव अंकित कयलक तकर अभिव्यक्ति छल ओ घटना । हिनक चिन्तन, साहित्य-लेखन ओ व्यक्तित्वमे जे असीम राष्ट्रप्रेम निहित अछि तकर उत्स एहि घटनामे ताकल जा सकैछ ।

शिक्षामे व्यवधान

1948मे मिडिल बोर्डक परीक्षा पास कयलाक बाद 1949क जनवरीमे सरस्वती हाइस्कूल (एम.एल.एकेडमी, लहेरियासराय)मे रामदेवक नाम लिखाओल गेलनि । उत्साहसँ भरल छात्र रामदेव स्कूल जायब प्रारम्भे कयलनि कि हठात् एकटा नव संकट आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलनि । फरीक दिससँ देल जाइत मानसिक यातनाकेँ सहैत-सहैत हिनक पिता रुग्ण भऽ गेलथिन । हृदयशूलक रोगसँ पीड़ित भऽ ओछाओन धऽ लेलथिन । खेती-बारी सबटा चौपट होअऽ लगलनि । खाजासरायवला डेरा जे आयक बड़ पैघ स्रोत छल तकर 1949मे दरभंगा राज बन्दोवस्ती समाप्त कऽ जमीने बेचि देलक । कपिलेश्वरझाकेँ राजसँ जे वेतन भेटैत छलनि सेहो स्थगित कऽ देल गेलनि । लागल जेना चारू दिससँ एकहि बेर परिवारपर संकटक आक्रमण भऽ उठल । हिनक चिर शत्रु लोकनिकेँ ई नीक अवसर भेटलनि । ओ लोकनि नाना प्रकारक उपद्रव करऽ लगलथिन । स्थिति एहन भऽ गेल जे रुग्ण पिताकेँ कोनो उपाय नहि बुझा रहल छलनि जे अपन चिकित्सा कराबथु, की दुनू बेटाकेँ पढ़ाबथु, आ कि चारि प्राणीक बुतात जुटाबथु । रामदेवक पढ़ाइ कोना छूटि जाउन ताहि हेतु फरीक लोकनि प्रतिदिन एकटा कऽ नव षड्यन्त्र रचि हिनका ओझरा देल करथिन । कतहु कोनो मरनी-हरनी भेल कि अपन समाङसँ लऽ कऽ हुनक किछु पक्षधर लोकनि ठोंठपर सवार भऽ कऽ ई कहैत हिनका कठियारी चलऽ कहथिन जे अपन बाप ओछाओन धेने छौ मरतौ तँ के उठेतौ ?' लाचार, अप्रतिभ बनल रामदेवकेँ अपन जमीन-जालक ताक-क्षेम ओ सामाजिकताक निर्वाह हेतु स्कूल छोड़ऽ पड़ि जाइनि ।

प्रेसक शरणमे : स्थिति अन्ततः तेहन भऽ गेल जे रामदेवकेँ छमाही परीक्षामे नीक अंक पबितो पढ़ाइ छोड़ि देबऽ पड़लनि । घरक गाड़ी खिचबाक हेतु हिनका कोनो उद्यम करब आवश्यक भऽ गेलनि । ओहि समयमे कन्हैयामिश्र पोखरिपर मन्नाबाबूक प्रकाश प्रेस चलैत छलनि । रामदेव ओहि प्रेसमे कम्पोजिंगक काज सीखऽ लगलाह । एक साल काज सिखलाक बाद हुनका प्रेस दिससँ प्रतिमास किछु टाका भेटऽ लगलनि । ई टाका हुनका हेतु बड़का सम्बल बनलनि । एहिसँ कोनहुना अपन न्यूनतम आवश्यकता पूरा कयल करथि ।

एक तरहेँ ई निश्चित जकाँ भऽ गेल जे घोर आर्थिक संकटक कारणेँ रामदेवक पढ़ाइ आब आगू नहि भऽ सकतनि । एही प्रेस लाइनमे ओ आगू बढ़थि । मुदा ईश्वरक विधान तँ किछु दोसरे छल । ओ तँ हिनका लोकनिक धैर्यक परीक्षा लऽ रहल छलथिन । प्रेसमे कोनो महत्त्वपूर्ण सरकारी फारम छपि रहल छलैक । प्रिंटिग मशीनपर

फर्मा चढ़ि गेल छलैक । मुदा कम्पोजिंगमे कोनो बड़ पैघ त्रुटि रहि गेल छलैक । फारम छपब प्रारम्भ भऽ गेल की तखन ओहि त्रुटिपर रामदेवक दृष्टि गेलनि । ओ तत्काल प्रेसक मैनेजर अलखबाबूकेँ एकर सूचना देलथिन । प्रेस मैनेजर आबि कऽ देखलक तँ सन्न रहि गेल । छपाइ रोकि देल गेलैक । अलखकुमार सिन्हा रामदेवकेँ भरि पाँज कऽ धरैत कहलथिन-बड़का नोकसानसँ तोँ हमरा बचा लेलह ।'

एकर बाद तँ रामदेव प्रेस मालिक ओ मैनेजरक प्रियपात्र बनि गेलाह । दुनू गोटा हिनका अपन बेटा जकाँ मानऽ लगलनि । प्रेसक मैनेजरकेँ जखन ई बूझल भेलनि जे आर्थिक संकटक कारणेँ रामदेव पढ़ाइ छोड़ि देलनि अछि तँ हुनका एहि बातक बड़ पीड़ा भेलनि । ओ रामदेवक पीठ ठोकैत कहलथिन - तोँ फेरसँ अपन पढ़ाइ सुरू करह, भगवान सबटा पार लगौथुन ।'

छापाखानामे बीतल रामदेवक बालजीवनक ई डेढ़ दू वर्ष अत्यन्त कष्टप्रद ओ संघर्षमय रहलनि । मुदा एहि दू वर्षमे हिनका जे प्रेसक ज्ञान भेलनि से हिनक भावी साहित्यिक जीवनक बड़ पैघ सम्बल बनलनि । छपराक सखी सम्प्रदायक तेसर पीढ़ीक सन्त प्रदीप सखी, अपन सम्प्रदायक संस्थापक सन्त लक्ष्मी सखीक पदक संग्रह 'अमर कहानी' प्रकाश प्रेसमे अपनहि देख-रेखमे छपबैत रहथि । ओ हिनक भाषा ज्ञान, प्रूफ करेक्शनमे पटुता आदिसँ ततबा प्रभावित भेल छलाह जे ओ अपन 'अमर कहानी'क मुद्रणक मुख्य दायित्व हिनकहिपर दऽ देलथिन । हिनक कार्यक प्रति एकाग्रता ओ समर्पण देखि बाबा प्रदीप सखी माथ ठोकि आशीर्वाद दैत 'अमर कहानी' क एक प्रति प्रदान कयने छलथिन जे सम्प्रतियोमे ओ पुस्तक हिनक संग्रहमे विद्यमान छनि ।

पढ़ाइ पुनः पटरीपर

एकटा नव संकल्प ओ अभिनव आत्मविश्वासक संग 1951मे एम.एल. एकेडमीक आठम वर्गमे रामदेव पुनः अपन नाम लिखौलनि । 1950मे उच्च विद्यालयमे पुरना पाठ्य-पद्धतिक स्थानमे नव पाठ्य प्रणाली लागू भेलैक । एहि प्रणालीमे आठमे वर्गमे छात्रकेँ चुनाव करबाक रहैत छलैक जे ओ विज्ञान पढ़य वा कला ! विज्ञानोमे गणित सहित पूर्ण विज्ञान अथवा बायोलोजी सहित विज्ञान । गणित सहित विज्ञानक छात्रक हेतु आगाँ इंजीनियरिंगमे जयबाक विकल्प भेटैत छलैक । बायोलोजीक छात्रकेँ मेडिकलक पढ़ाइ कऽ डाक्टर बनबाक अर्हता भेटैत छलैक । भविष्यमे डाक्टर बनबाक संकल्पक संग रामदेव बायोलोजी सहित विज्ञान पढ़बाक निश्चय कयलनि ।

ओहि समयमे एम्.एल्. एकेडमीमे आठमसँ एगारहम वर्ग धरि तीन गोट सेक्सन रहल करैत छलैक । समान भाषा पत्र सहित सेक्सन- Aमे एडवान्स गणित सहित विज्ञान विषय, सेक्सन- Bमे गणित ओ विज्ञानसँ इतर इतिहास-भूगोल इत्यादि विषय तथा

सेक्सन- Cमे बायोलोजी सहित विज्ञानक विषय । रामदेव भविष्यमे डाक्टर बनबाक उद्देश्यकेँ ध्यानमे राखि बायोलोजी विषय रखलनि आ सेक्सन- C केर विद्यार्थी बनलाह । आठम वर्गक छमाही परीक्षामे ई फर्स्ट कयलनि । हिनक मेधा ओ लगनसँ प्रभावित भेल कठोर अनुशासनक लेल प्रसिद्ध स्कूलक प्रधानाचार्य झिंगुरकुमर हिनका फुल फ्री-स्टुडेंटशिप दऽ देलथिन । ओमहर पिता सेहो मिश्रटोलाक वैद्य श्रीधरमिश्रक चिकित्साक कारणे पूर्वक अपेक्षा नीकेँ होअऽ लागल छलथिन । माय बच्चादाइ अपन साहस ओ श्रमसँ परिवारक बिखरल व्यवस्थाकेँ क्रमशः सरिआबय लगलीह । एवं प्रकारेँ जेना-तेना परिवारक गाड़ी घिचाय लागल ।

श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'सँ निकटता

ओहि समयमे एम.एल.एकेडमीमे मैथिली-संस्कृतक शिक्षक रहथि स्वनामधन्य मनीषी साहित्यकार पं. श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' । अमरजीक पारखी दृष्टि रामदेव सन प्रतिभाशाली छात्रपर पड़लनि । अमरजी एक दिस कठोर अनुशासन ओ समय पालनक पर्याय छलाह तँ दोसर दिस स्कूलमे साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनक प्रतीक सेहो । स्कूलमे प्रतिवर्ष सरस्वती पूजाक भव्य आयोजन भेल करैत छलैक । पूजाक अवसरपर विशेष सांस्कृतिक आयोजन होइत छलैक जकर कर्त्ता-धर्त्ता अमरहिजी रहैत छलाह । छात्र रामदेवक सांस्कृतिक चेतना ओ साहित्यिक रुचि हिनका अमरजीक प्रियभाजन बना देलकनि । रामदेव स्कूलक प्रत्येक आयोजनमे बढ़ि-चढ़ि कऽ हिस्सा लेबऽ लगलाह । अमरहिजीक सान्निध्यक कारणे हिनका मातृभाषा प्रेमक पहिल पाठ पढ़बाक अवसर भेटलनि आ मैथिलीक हेतु सर्वस्व अर्पण कऽ देबाक भावना विकसित होअऽ लगलनि ।

मैथिली प्रेम बनल संकटक कारण

अमरजी जहिया एम.एल.एकेडमीमे ज्वाइन कयने रहथि तहिया ओहि ठाम मैथिलीक हेतु अनुकूल वातावरण नहि छलैक । स्कूलमे मैथिलीक जड़ि रोपबाक हेतु अमरजीकेँ बड़ संघर्ष करऽ पड़ल छलनि । स्कूलमे हिनक प्रबल प्रतिद्वन्द्वी रहथिन हिन्दीक शिक्षक महेशशर्मा 'प्रभाकर' । पतोर (दरभंगा) निवासी मैथिल ब्राह्मण शर्माजी मैथिलीक प्रबल विरोधी । ओ अपप्रचार कयल करथिन जे भुसकौल छात्र सब मैथिली पढ़ैत अछि । तेँ अमरजीक वर्ग पर्यन्तसँ ओ छात्र सबकेँ बलजोरी उठा कऽ लऽ जाथिन ।

नवीन पाठ्य-प्रणालीमे अंगरेजी, राष्ट्रभाषा हिन्दी (उच्चस्तर एव अहिन्दी भाषीक हेतु निम्न स्तर) आ मातृभाषा अनिवार्य विषय छलैक । मातृभाषा पत्रमे आब मैथिलीयोकेँ स्थान भेटि गेल छलैक । एहि बातक जनतब अमरजी छात्र लोकनिकेँ विधिवत् दऽ देने छलथिन । विद्यालयक प्रधानाध्यापक झिंगुरकुमर मैथिली विरोधी छलाह से बात नहि । कला-विषय (B-सेक्सन)क छात्रकेँ ई सुविधा सहजेँ प्राप्त छलैक । परन्तु

विज्ञान-विषय (सेक्सन- B एवं C)क छात्र मैथिली पढ़य तकर पक्षपाती नहि छलाह । आ एहि धारणाकेँ शर्माजी प्रयत्नपूर्वक पोख्ता करैत रहैत छलथिन ।

आठम वर्गमे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयनिहार रामदेव सन मेधावी छात्र एम.एल. एकेडमीमे अमरजीक टीममे चल गेलाह । अमरजीक निर्देशनमे ई नाटक सबमे भाग लेथि । स्कूलक साहित्यिक गोष्ठीमे सक्रिय रहल करथि । ई बात शर्माजीकेँ नीक नहि लगनि । शर्माजी हिनका एकान्तमे बजा कऽ बेसी काल पाठ पढ़बथिन, अमरजीक विरोधमे भड़कबथिन, मातृभाषा पत्रमे हिन्दी पढ़बाक हेतु कहथिन । मुदा रामदेवपर तँ मातृभाषा प्रेम से प्रगाढ़ भऽ गेल छलनि, जाहिपर चढ़ो न दूजो रंग । आरम्भिक वर्षमे रामदेवकेँ मैथिली पढ़बाक अनुमति नहि भेटलनि । परन्तु ओ बेर-बेर हेडमास्टर साहेब लग मातृभाषा मैथिली पढ़बाक दुराग्रह करैत रहलाह । अन्ततः हेडमास्टरकेँ अनुमति देबऽ पड़लनि ।

रामदेव स्कूलक परम्पराक विपरीत विज्ञानक छात्र होइतो मातृभाषा पत्रमे मैथिली रखलनि । रामदेवक देखा-देखी हुनक बायोलोजी वर्गक अधिकांश छात्र लोकनि मैथिलीए राखि लेलनि । स्कूलमे मैथिलीक झंडा बुलन्द भऽ उठल । तिलमिला उठलाह शर्माजी । हुनका अछैत हिन्दीमे छात्रक अकाल भऽ उठल । ओ एहि स्थितिक हेतु शिक्षक अमरजी ओ छात्र रामदेव अर्थात् एहि गुरु-शिष्यकेँ उत्तरदायी मानऽ लगलाह । हिनका दुनूक प्रति मोनमे एकटा कुन्नह भऽ गेलनि ।

स्कूलमे मैथिलीक हवा चलि पड़ल छलैक । विज्ञानक छात्र मैथिली विषय राखय ताहिमे प्रधानाचार्य झिंगुरकुमरकेँ सेहो अनिच्छे छलनि । शर्माजी एकर लाभ उठबैत अमरजीक विरोधमे प्रधानाचार्यक कान भरऽ लगलथिन । 1954मे स्कूल प्रशासनक संग अमरजीक तनाव बढ़ऽ लगलनि । 1954क मार्चमे अकारण छात्र रामदेवक फ्री-स्टुडेंटशिप समाप्त कऽ देल गेलनि । बिना कोनो दोषक भेटल एहि दंडसँ रामदेव हतप्रभ रहि गेलाह । हिनका सन मेधावी ओ अनुशासित छात्रकेँ बिना कोनो अपराधेँ दंडित कयल जयबाक घटनासँ स्कूलक शिक्षक लोकनि क्षुब्ध भऽ उठलाह । अपन छात्रक संग भेल अन्यायक विरोधमे हिनक वर्गशिक्षक देवेन्द्रप्रसादवर्मा प्रधानाचार्य संगे भीड़ि पर्यन्त गेलथिन । वर्माजी प्रधानाचार्यसँ रामदेवक अपराध दऽ पुछलथिन । तखन प्रधानाचार्य झिंगुरकुमर स्पष्ट कयलथिन जे- महेशशर्मा अभियोग लगौलथिन अछि जे छात्र रामदेव हुनका संग अपमानजनक व्यवहार कयलथिन अछि ।'

ई सुनि कऽ वर्माजी अवाक् रहि गेलाह । ओ प्रधानाचार्यक एहि एकदिशाहे निर्णयसँ क्षुब्ध भेल कहलथिन- की अपने एहि आरोपक सम्बन्धमे छात्रकेँ अपना दिससँ सफाइ देबाक अवसर देलियै ?'

प्रधानाचार्य चुप रहि गेलाह । वर्माजी पुनः कहलथिन – की एकटा शिक्षकक रूपमे अपनेक अन्तरात्मा ई कहैए जे कोनो छात्रक जीवनकेँ एना बरबाद कऽ देल जाय !' प्रधानाचार्यकेँ तखन अनुभव भेलनि जे क्रोधातिरेकमे हुनकासँ एना भऽ गेलनि । मुदा हुनक तरकससँ तँ तीर निकलि चुकल छलनि । तखन प्रधानाचार्य कहलथिन जे जँ रामदेव लिखित रूपसँ क्षमा माँगि लेथि तँ स्कूल प्रशासन हुनक विषयपर पुनर्विचार करत ।'

रामदेव जखन अपनापर लागल एहि आरोपकेँ सुनलनि तँ ओ आश्चर्यचकित रहि गेलाह । हुनक दोष मात्र एतबे छलनि जे ओ शर्माजीक बात नहि मानि मैथिली रखलनि । एकर अतिरिक्त जखन ओ कोनो गलती नहि कयलनि तँ ओ क्षमा किएक माँगथु ? स्वाभिमानी छात्र रामदेव स्कूलसँ टी.सी. लेबऽ लय तत्पर भऽ गेलाह ।

रामदेवक संग घटित ई घटना स्कूलमे हलचल मचा देलक । समस्त शिक्षक समुदाय स्कूल प्रशासनक विरोधमे आबि गेलाह । एहि घटना ओ स्कूलक वातावरणसँ विषण्ण भेल अमरजी सेहो एम.एल.एकेडमीक सेवासँ त्यागपत्र दऽ देबाक निश्चय कऽ लेलनि । जिला स्कूल, दरभंगाक तत्कालीन प्रधानाचार्य पी.टी.रुद्र एहि दुनू गुरु-शिष्यकेँ अपना स्कूलमे लऽ जयबाक हेतु उत्सुक भऽ उठलाह । अन्ततः प्रधानाचार्य झिंगुरकुमरकेँ भेलनि जे एकटा व्यक्ति विशेषक कारणेँ समस्त स्कूलक वातावरण विस्फोटक भऽ रहल अछि । अपन कानि उतारबाक हेतु हुनक दुरुपयोग कयल गेलनि । हुनक कठोर प्रशासक हृदय हारल, उदार शिक्षक-मन जीति गेल । ओ अमरजी सन कुशल छात्रप्रिय शिक्षककेँ बौंसि लेलनि आ रामदेव सन भविष्णु छात्रक फ्री-स्टुडेंटशिप पूर्ववत् बहाल कऽ देल गेलनि । मैथिलीक लेल अपन छात्र जीवनमे रामदेव द्वारा लड़ल गेल ई पहिल लड़ाइ छल, जाहिमे ओ विजयी रहलाह ।

वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि

एम.एल.एकेडमीमे रामदेव अपन स्कूली जीवनक आठमसँ लऽ कऽ एगारहम वर्ग धरि अपन कक्षामे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करैत रहलाह । 1955मे मैट्रिक्यूलेशन बोर्डक परीक्षामे ई प्रथम श्रेणी प्राप्त कयलनि । हिनक स्कूली जीवनक दोसर महत्त्वपूर्ण बात ई भेल जे एहि चारि वर्षक अवधिमे एको दिन अनुपस्थित नहि रहि अपन एकटा अद्‌भुत रेकॉर्ड बना लेलनि । हिनक एहि विशिष्टताक कारणे 1954मे प्रदेशक तत्कालीन मुख्यमंत्री डा. श्रीकृष्णसिंह ननएवसेंस प्राइजक रूपमे चानीक मेडल आ लालटेन प्रदान कयलथिन । 1955मे हिनका तत्कालीन बिहार सरकारक स्वास्थ्य मंत्री पं. हरिनाथमिश्रक हाथेँ सेहो पुस्तकादि रूपमे पुरस्कार प्राप्त भेलनि ।

कॉलेज जीवन : जीवनक मोड़

1955मे मैट्रिकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक बाद रामदेवक अग्रिम पढ़ाइक प्रश्न

उठलनि । अपन मेधा ओ परिश्रमसँ बायोलोजी विषयक संग ई मैट्रिक पास कयलनि । सी.एम.कालेजमे नामांकनक हेतु आवेदन कयलनि आ विज्ञान विषयमे नामांकन हेतु हिनक चयन सेहो भऽ गेल । आइ.एस-सी. कयलाक बादे मेडिकल कॉलेजमे प्रवेश भऽ सकैत छल । मुदा ताहिसँ पूर्वहि एक बेर पुनः अर्थक समस्या ठाढ़ भेल । विज्ञान विषय लऽ कऽ पढ़बामे तत्काल प्रचुर टाकाक आवश्यकता तँ छले, संगहि आगाँक पढ़ाइ सेहो छल । एहि टाकाक ओरिआओन कोना आ कतऽसँ होअय ? परन्तु धुनि लागल छलनि निरन्तर पढ़ैत जयबाक । शिक्षाक उच्चतम शिखर धरि पहुँचबाक जे अभिलाषा छलनि तकरा संकल्पक आधार दैत विज्ञानक बदला कला-निकायमे आगाँ बढ़बाक साहसिक निर्णय कयलनि । रामदेव सी.एम. कॉलेजमे आइ.ए.मे अपन नामांकन करौलनि । आइ.ए.मे हिनकर विषय सब छलनि- अंग्रेजी, मैथिली (मातृभाषा), हिन्दी (राष्ट्रभाषा), अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र ओ साहित्य (मैथिली) ।

सी.एम.कॉलेज (आब सी.एम. साइंस कालेजक परिसर) हिनक गाम कबिलपुरसँ पाँच-छओ किलोमीटर दूर । रामदेव प्रतिदिन पैरे जाय क्लास कयल करथि ।

कॉलेजमे मैथिलीक ध्वजारोहण

स्कूलहिसँ आपादमस्तक मैथिलीक प्रेममे रंगल छात्र रामदेवकेँ सी.एम. कॉलेजमे आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन', प्रो. ईशनाथझा, प्रो. शैलेन्द्रमोहनझा प्रभृति मैथिली प्राध्यापक लोकनिक स्नेह ओ सान्निध्य प्राप्त भेलनि । ओहि समयमे कॉलेजहुमे मैथिली विषयमे छात्रक संख्या बड़ कम रहल करैत छलैक । जागरुकताक अभावमे ग्रामीण क्षेत्रक छात्र सब मैथिली पढ़बा दिस उन्मुख नहि भऽ पबैत छल । कॉलेजमे मैथिलीक छात्र बढ़यबाक हेतु रामदेव अपन किछु सहपाठी मित्रक संग बड़ चतुरतासँ काज लेबऽ लगलाह । गाम-देहातक जे अनभोआर छात्र कॉलेजमे नामांकन कराबऽ आबय तकरा बड़ आपकता ओ तत्परताक संग सब काज कराबथि आ ओकर एडमीशन फॉर्ममे कलासिक्स ओ मातृभाषा पत्रमे मैथिली भरबा देल करथिन । एहिना विज्ञानोक छात्रक मातृभाषापत्रमे मैथिली रखबा देल करथि । एम.एल. एकेडेमीक विज्ञान (गणित)क छात्रकेँ मैथिली पढ़बासँ वंचित कयल गेल छलनि अथवा जे स्वेच्छया मैथिली नहि पढ़ने छलाह, सेहो सभ मैथिली भाषा राखि लेलनि । हिनक एहि अभियानक सुफल ई भेल जे आइ.ए. क 1955-57क सत्रमे मैथिली विषयमे छात्रक संख्या ततेक बेसी भऽ गेल जे कॉलेज प्रशासनकेँ एहि हेतु दुइ गोट सेक्सन बनाबऽ पड़लैक । पूर्वमे सी.एम. कालेजमे मैथिली छात्रक संख्या बड़ थोड़ रहैत छलैक- एक-आध दर्जन मात्र । एहि लय छोटका रूम आवंटित रहैत छलैक । एका-एक छात्रक संख्या ततबा बढ़ि गेलैक जे दूटा सेक्सन बनाबऽ पड़लैक । प्रत्येक सेक्सनमे डेढ़-पौने दू सय विद्यार्थी । दुनू लेल दूटा बड़का हॉल अपेक्षित छलैक । तहिना मैथिली छात्रक राष्ट्रभाषा (अहिन्दी) पत्रक स्थिति छलैक । एहने

समस्या विज्ञानोक मैथिलीभाषी छात्रक भऽ गेल छलैक । 10.30 बजे सँ 4.20 बजे धरिक रूटिनमे कतहु अटावेस सम्भव नहि छलैक । तेँ मैथिली विषय (साहित्य ओ मातृभाषा)क हेतु 9.40 बजेसँ प्री–फर्स्ट पीरियड ओ 4.20सँ 5.10 बजे धरि राष्ट्रभाषा (अहिन्दी)क हेतु एक्स्ट्रीम लास्ट पीरियडक व्यवस्था भेलैक जे दुइ वर्ष धरि यथावत् चलैत रहलैक ।

स्वभावतः क्लासक संख्या सेहो बहुत बढ़ि गेलैक । विभागमे तखन दुइए गोट प्राध्यापक छलाह– प्रो. ईशनाथझा ओ प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन' । अतः दुइ गोट प्राध्यापक प्रो. रामचन्द्रमिश्र ओ प्रो. अमरनाथझा (वरिष्ठ)क अस्थायी नियुक्ति भेलनि । सी.एम. कॉलेजमे सेहो मैथिलीक सिक्का चलि पड़लैक ।

पिताक निधन

रामदेव आइ.ए. सेकेंड इयरमे पहुँचलाह । फाइनल परीक्षाक समय लगिचा गेल छलनि । तैयारी करबामे जी–जानसँ भिड़ल छलाह कि अकस्मात् 30 नवम्बर 1956 (अगहन कृष्ण चतुर्दशी, शुक्र)केँ हिनक पिता कपिलेश्वरझाक देहान्त भऽ गेलनि । ई आघात जेना रामदेवक जीवनमे एक बेर पुनः हरविरड़ो मचा देलकनि । तथापि ई अपनाकेँ सम्हारलनि, निःसहाय भेल अपन परिवारकेँ सम्हारलनि । परिस्थितिसँ लड़ैत आइ.ए.क परीक्षा देलनि ।

साहित्यक डाक्टर बनबाक पथपर

आइ.ए. कयलाक बाद एक बेर पुनः कोन विषयमे प्रतिष्ठा राखल जाय से प्रश्न ठाढ़ भेल । ई आइ.ए.क जाहि विषयमे चाहितथि ताहिमे प्रतिष्ठा राखि सकैत छलाह । अपन मातृभाषा प्रेमक कारणेँ रामदेव बी.ए.मे मैथिली प्रतिष्ठा ओ अर्थशास्त्र विषय रखलनि । हिनका प्रति स्नेह रखनिहार कतेको अध्यापककेँ तत्काल ई नहि रुचल छलनि आ ओ लोकनि एहि निर्णयसँ आहतो जकाँ भेल रहथि । बाधा तँ अनेक प्रकारक अबैत रहलनि तथापि समस्त बिघ्न बाधाकेँ पार करैत अपन मेधा ओ परिश्रमक बलपर रामदेव 1959 मे बिहार विश्वविद्यालय (पटना)मे मैथिली प्रतिष्ठामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि । हिनक एहि सफलताक उपलक्ष्यमे बिहार विश्वविद्यालयक दीक्षान्त समारोहमे तत्कालीन कुलाधिपति डा. जाकिर हुसैनक द्वारा हिनका स्वर्णपदक प्रदान कयल गेलनि ।

पटना विश्वविद्यालयक प्रवास–जीवन

ओहि समयमे सम्पूर्ण बिहारमे एकमात्र पटना विश्वविद्यालयटामे मैथिलीमे स्नातकोत्तर अध्यापनक व्यवस्था छलैक । रामदेवकेँ पटना जा कऽ एम.ए. करबामे

तारतम्य बुझाय लगलनि । एकर पाछाँ कारण छल वैह आर्थिक समस्या। दरभंगामे तँ अपना घरसँ खा कऽ कॉलेज करैत रहथि । मुदा पटनामे तँ सब किछु लय टका चाही। रामदेव ततमतमे पड़ि गेलाह । एक मोन भेलनि जे आगाँक पढ़ाइ छोड़ि कोनो नोकरी-चाकरी ताकल जाय मुदा दोसर दिस उच्चतम शिक्षा ओ उपाधिक अदम्य इच्छाक कारणे पटना प्रवासक व्ययक निमित्त आर्थिक साधनक सम्बन्धमे बिना विचार कयने सोझे पटना विश्वविद्यालयमे एम.ए. (मैथिली)मे नामांकन करा लेलनि ।

1959क जुलाइमे रामदेव पटना विश्वविद्यालयमे नामांकन करौलनि । पटनाक नया टोला मोहल्ला स्थित मैथिलक प्रसिद्ध होटल कंचन भवनमे डेरा लऽ कऽ रहऽ लगलाह । तावत धरि मैथिलीक लेखक ओ मैथिलीक समर्पित कार्यकर्त्ता रूपमे हिनक ततेक परिचिति भऽ गेल रहनि जाहि कारणे पटनामे किनको लग अपन परिचय देबाक हिनका प्रयोजन नहि पड़लनि । अपन मेधाविता, विनीत स्वभाव ओ सांस्कृतिक रुचिक कारणे ई शीघ्रे पटनाक मैथिली जगतक समस्त प्रतिष्ठित व्यक्ति लोकनिक प्रिय पात्र बनि गेलाह । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक विभागाध्यक्ष डा. सुधाकरझा शास्त्री, प्रो. आनन्दमिश्र, सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. हरिमोहनझा, आर्यावर्त्तक सम्पादक श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार आदि हिनका विशेष रूपसँ मानऽ लगलथिन । पं. हीरानन्दशास्त्री, कुलानन्ददास 'नन्दन', बाबू लक्ष्मीपतिसिंह, आचार्य परमानन्दनशास्त्री, राजेश्वरझा (बिहार रिसर्च सोसाइटी), पं. जयनाथमिश्र, गोपेशजी, बाचाल बाँकीपुरी आदिसँ निकट परिचय भेलनि ।

सितम्बर 1960सँ पटनासँ मिथिला मिहिरक साप्ताहिकक पुनः प्रकाशन सुरू भेल । एकर सम्पादक बनाओल गेल रहथि दरभंगाक मिश्रटोला निवासी सुधांशुशेखरचौधरी । हिन्दीमे तावत लेखन कयनिहार शेखरजी मैथिली जगतक हेतु अनचिन्हारे रहथि । मुदा बेरोजगार शेखरजीकेँ कोनो तरहेँ रोजी लागि जाइनि, ताही उपकार भावसँ सुरेन्द्रझा 'सुमन', श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', रमेन्द्रनारायणचौधरी आदि सम्पादक पदक हेतु पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र ओ राजपण्डित बलदेवमिश्र लग हिनक पैरवी कयने रहथिन । हिन्दीक कोनो व्यक्ति मैथिलीक सुप्रतिष्ठित पत्रक सम्पादक बनय से स्वाभाविक रूपसँ सबकेँ अनसोहाँत लागल रहैक, तेँ पटनामे शेखरजीक लेल वातावरण सर्वथा प्रतिकूल छलनि । पुबारि आ पछबारि पारक मतभेद से फराके । मिहिरक सम्पादक बनबाक लेल प्रयत्नशील श्रीमायानन्दमिश्र सन स्थापित साहित्यकार एहिमे पछड़ि गेलाह, तेँ ओ फराके रुष्ट रहथिन । ओहि विषम कालमे पटनामे अध्ययनरत रामदेवझा पटनामे शेखरजीक परिचिति बनयबामे, एकटा सफल सम्पादकक रूपमे हुनका स्थापित करबामे ओ मिहिरक निरन्तर प्रकाशन होइत रहबामे खुलि कऽ सहयोग देबऽ लगलथिन । दरभंगासँ विभिन्न लेखक सबसँ रचनाक संकलन, ओकर व्यवस्थित सम्पादन आदि कऽ कऽ देथिन ।

शेखरजीक सहायता करबाक कारणे पटनामे किछु गोटाक तँ ई कोपभाजन

बनलाहे, प्रत्युत स्नातक प्रतिष्ठा जकाँ एम.ए.मे सेहो बाधकताक परिस्थिति अयलनि तथापि ई दृढ़तापूर्वक अपन साधनामे लागल रहलाह । 1961 मे एम.ए.क परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम भेलाह आ स्थापित कयलनि एम.ए मैथिलीमे सर्वोच्च अंकक पटना विश्वविद्यालयमे नवीन कीर्त्तिमान । 1962मे पटना विश्वविद्यालयक दीक्षान्त समारोहमे बिहारक तत्कालीन कुलाधिपति ओ राज्यपाल डा. जाकिर हुसैनक हाथेँ पुनः दोसर बेर हिनका स्वर्णपदक ओ प्रमाणपत्र प्रदान कयल गेलनि । ई हिनक जीवनक एकगोट ऐतिहासिक उपलब्धि रहलनि ।

आजीविका

जुलाइक प्रथम सप्ताहमे एम.ए.क परीक्षा भेलनि आ अगस्तक अन्तिम सप्ताहमे रिजल्ट बहरयलनि । एम. ए. कयलाक बाद रामदेवक समक्ष आजीविकाक प्रश्न उपस्थित भेलनि । तीनटा क्षेत्रमे विकल्प छलनि- पत्रकारिता, आकाशवाणी आ अध्यापन । पटनामे अपन शैक्षणिक प्रवासक क्रममे मिथिला मिहिरक जाहि तरहेँ सेवा कयने छलाह ताहि आधारपर मिहिरक सम्पादकीय विभागमे हिनक नियुक्तिक सम्भावना बनैत छलनि । ताही समयमे पटना आकाशवाणीमे सेहो मैथिली उद्घोषकक एकटा पद रिक्त छल । रेडियोक नोकरी तहिया कम ग्लैमरवला नहि छलैक । परिस्थितिक अनुसार जाहि क्षेत्रमे पहिल आजीविका भेटितनि, पहिने ओकरहि स्वीकार करितथि । परन्तु आरम्भेसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यमे अभिरुचि रखैत प्रचुर सामग्री-संकलन ओ तैयारी करैत रहलाह आ रिजल्टो तेहने उत्तम होइत गेलनि, से एहि बातक सूचक छल जे ई अध्यापन-वृत्तिकेँ आजीविका बनाबऽ चाहैत छलाह ।

एस.पी. कॉलेजमे योगदान

भागलपुर विश्वविद्यालयक अन्तर्गत एस.पी.कॉलेज, दुमकामे मैथिलीमे प्राध्यापक पद हेतु विज्ञापन बहरयलैक । रामदेवझा ओहि हेतु आवेदन कयलनि । 23 नवम्बर 1961 केँ इंटरव्यू भेलनि । पैनलमे हिनक नाम सबसँ पहिल छलनि । दोसरे दिन अर्थात् 24 नवम्बर 1961केँ सन्ताल परगना कालेज, दुमकामे (साम्प्रतिक झारखण्ड राज्यक) मैथिलीक आद्य प्राध्यापकक रूपमे अपन योगदान देलनि । दुमकाक वातावरण मैथिलीक लेल बंजर छलैक, मुदा प्रो. रामदेवझा अपन विदग्धता ओ कॉलेजक प्रिंसिपल प्रो. सुरेन्द्रनाथझा एवं अनेक सहकर्मी प्राध्यापकक सहयोगसँ सन्ताल परगनाक पठारी भूमिकेँ जोति-कोड़ि मैथिलीक हेतु उर्वर बनौलनि । शीघ्रे देवघर, गोड्डा, मोतिया, महेशपुर, बासुकीनाथ, दुमका आदि स्थानक कॉलेज-छात्रक भीतर एहि तरहक भावना विकसित करबामे सफल रहलाह जे कने-मने उच्चारणक भिन्नता रहितो हुनको लोकनिक मातृभाषा मैथिलीए थिकनि । दुमकामे मैथिलीक पक्षमे ताहि तरहक वातावरण बनल जे आरम्भमे

जतऽ मैथिलीक छात्र आङुरपर गनबा योग्य रहैत छल, से किछुए समयक अभ्यन्तर छात्रक संख्यामे आशातीत वृद्धि भेल। दुमकामे हिनक दू वर्षक प्राध्यापकीय परिश्रमक प्रतिफल ई भेल जे पछाति देवघर, साहेबगंज स्थित कॉलेजहु सबमे विधिवत् मैथिली विभाग फूजल। नवम्बर 1962 मे सी.एम. कालेजमे एम.ए.क पढ़ाइ आरम्भ भेल। ओहिमे रामदेवझा व्याख्याता पदपर अस्थायी रूपसँ नियुक्त भेलाह। परन्तु मइ 1963मे पुनः एस. पी.कॉलेज आपस चल गेलाह।

1963 मे पटना विश्वविद्यालय आ बिहार विश्वविद्यालय दुहू ठाम मैथिली व्याख्याताक नियुक्ति हेतु बिहार पब्लिक सर्विस कमीशन दिससँ विज्ञापन भेलैक। ई दूहू विश्वविद्यालय हेतु आवेदन कयलनि। पटना विश्वविद्यालयक हिनक इंटरव्यू अत्यन्त सफल रहलनि। विशेषज्ञ रहथिन म.म. डा. उमेशमिश्र ओ डा. सुधाकरझा 'शास्त्री'। पैनलमे हिनक नाम पहिल स्थानपर अनुशंसित भेलनि।

बिहार लोकसेवा आयोगक समक्ष

बिहार विश्वविद्यालयक अन्तर्गत सी.एम.कालेजमे मैथिली व्याख्याता पदक हेतु बिहार पब्लिक सर्विस कमीशनक इंटरव्यू बोर्डमे एक्सपर्ट लोकनि रहथिन डा. सुभद्रझा ओ प्रो. रमानाथझा। इंटरव्यू कालमे डा. सुभद्रझा अभ्यर्थी रामदेवझाकेँ अयोग्य सिद्ध करबाक हेतु जेना सबटा शक्ति लगा देलथिन। एक घंटा धरि हिनकासँ एकसँ एक विकट प्रश्न सब पुछैत रहलथिन आ ई आत्मविश्वासपूर्वक तकर उत्तर दैत रहलथिन।

नाटकक प्रसंगमे अनेक प्रश्न करैत अन्ततः डा. सुभद्रझा एकटा प्रश्न पूछि देलथिन- अभिज्ञान शाकुन्तलमे बीच सभासँ नायिका शकुन्तलाक प्रत्याख्यान भऽ जाइत अछि। नाट्य-प्रदर्शन कालमे ई कोना सम्भव अछि ?'

रामदेवझा एहि प्रश्नक उत्तर दैत कहलथिन- नाटककेँ जीवनक अनुकरण कहल गेलैक अछि तेँ एहिमे बहुत बात संकेतेसँ प्रदर्शित कयल जाइत अछि। एहि संकेतक अभिज्ञान नाटकक पात्रक संग-संग दर्शकहुकेँ होयब आवश्यक अछि। शकुन्तला नाटकक आरम्भेमे शकुन्तला ओ सखी लोकनि द्वारा घैलसँ गाछक जड़िमे पानि पटयबाक प्रसंग अछि। जँ एकर अभिनय कालमे यथार्थमे पानि पटाओल जाय लागय तँ रंगमंचपर पानिक धारे बहि जायत। तेँ एहि प्रसंगक प्रतीति सांकेतिके अभिनयसँ दर्शककेँ कराओल जाइत छैक, तहिना बीच सभासँ शकुन्तलाक प्रत्याख्यान हेतु कोनो विशिष्ट प्रकारक संकेतक आश्रय लेल जाइत होयतैक। नाट्यशास्त्रमे एहन अभिनयकेँ नाट्यधर्मी कहल गेलैक अछि।' अभ्यर्थीक एहि तर्कसम्मत व्याख्यासँ बोर्डक सब सदस्य सन्तुष्ट भेलाह। डा. सुभद्रझा प्रश्नवाचक मुद्रामे प्रो. रमानाथझा दिस तकलथिन। ओ किंचित बिहुँसैत कहलथिन - हूँ ऽऽ।'

बिहार विश्वविद्यालयक मैथिली पैनलमे सेहो हिनक नाम प्रथम स्थानक लेल अनुशंसित भेलनि । बादमे डा. सुभद्रझा दरभंगामे नेपथ्यमे रामदेवझाकेँ अभिघात पहुँचयबाक लेल प्रच्छन्न दुरभिसंधिक संकेत दैत अनेक ठाम बाजल रहथि जे – हम तँ विचारि कऽ गेल रही जे कोनो स्थितिमे हम बिहार विश्वविद्यालयमे एहि छौंड़ाकेँ नोकरी नहि होअऽ देबैक । मुदा ई तँ अपन असाधारण योग्यताक बलपर हमरा लोकनिकेँ निरुत्तर करैत हाथसँ नोकरी छीनि लेलक ।' वस्तुतः डा. सुभद्रझाक मोनमे आरम्भमे हिनका प्रति जे वितृष्णाक भाव रहल होइनि मुदा बादमे तँ ई डा. रामदेवझाक ततेक पैघ प्रशंसक भऽ गेलथिन जे निःसंकोच भावसँ कहल करथिन– ओझाजी मैथिलीक विद्वाने नहि, मैथिलीक आचार्य थिकाह ।' ओ अपन व्याकरण विषयक व्याख्यानक सम्पादन–प्रकाशनक विश्वास पूर्वक भार हिनकेपर देने छलथिन ।

सी.एम. कॉलेजमे योगदान

अस्तु, पटना ओ बिहार दुनू विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थानकलेल नाम अनुशंसित भेलाक बाद हिनका समक्ष विचारक प्रश्न ठाढ़ भेलनि जे ई कतऽ योगदान करथि । डा. सुधाकरझा 'शास्त्री' ओ प्रो. अमरेशपाठकक विचार छलनि जे ई पटना विश्वविद्यालयमे योगदान करथि । मुदा अन्ततः हिनक अपन विचार भेलनि जे बिहार विश्वविद्यालयक चयन कयल जाय । एहि निर्णयक पाछाँ हिनक मैथिली–सेवाक ध्येय छलनि । मैथिलीक जमीनपर रहि जे काज कयल जा सकैत अछि से प्रवासमे रहि कऽ नहि, जकर अनुभव हिनका अपन दू वर्षक दुमका प्रवासमे भऽ चुकल छलनि । पटना सन राजधानीमे ई नोकरिहारा बनि कऽ आरामसँ रहि सकैत छलाह, मुदा सामान्य लोकक मध्य जाय, विशेषतः छात्र वर्गमे मातृभाषा (मैथिली) चेतना जगायब ओ मैथिली आन्दोलनकेँ जमीनपर आनब सम्भव नहि होइत । तहिना मैथिलीक अवडेरल, छिड़िआयल अजस्त्र साहित्यक अन्वेषण, संकलन, सम्पादन ओ प्रकाशन तथा मैथिली लोकवृत्तक क्षेत्रमे अनुसन्धान करबाक जे हिनक प्रवृत्ति छल तकर पूर्त्ति पटनामे रहि कऽ सुगम नहि छलनि। अतएव 6 दिसम्बर 1963केँ ई पटना विश्वविद्यालयसँ इतर बी.पी.एस.सी.सँ पहिल कमीशण्ड मैथिली व्याख्याताक रूपमे बिहार विश्वविद्यालयक तत्कालीन अंगीभूत एकांश दरभंगाक चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयमे योगदान कयलनि ।

निविष्ट प्राध्यापक

सी.एम.कॉलेजमे अयलाक बाद किछुए दिनमे छात्र वर्गमे हिनक छवि अनुशासनप्रिय विद्वान प्राध्यापकक रूपमे स्थापित भऽ गेलनि । मैथिलीक ई विश्वकोश मानल जाय लगलाह । मैथिलीक प्राचीन साहित्य हो वा आधुनिक, गद्य हो वा कि पद्य, महाकाव्य हो कि नाटक, समालोचना हो वा इतिहास, भाषाविज्ञान हो वा काव्यशास्त्र, सबपर समाने अधिकार, प्रत्येक विषयकेँ एकसमान गतिसँ पढ़ा देब, कोनहुँ विषयपर धाराप्रवाह

बजबाक हिनक क्षमता अद्वितीय रहलनि । हिनक व्याख्यानमे सदिखन किछु मौलिकता, किछु नवीनता रहलनि । सिद्धान्त प्रतिपादनक हिनक एही विशिष्ट क्षमताकेँ देखैत मैथिलीक मनीषी लोकनि हिनका आचार्यक उपाधिसँ विभूषित करैत रहलथिन । सब दिन अपनाकेँ अपडेट बना कऽ रखनिहार प्रो. रामदेवझाकेँ वर्गमे नोट वा किताब लऽ कऽ पढ़यबाक प्रयोजन नहि पड़नि । भाषा–विज्ञान सन कठिन विषयकेँ जाहि सहजताक संग ई छात्रक हेतु बोधगम्य बना दैत छलथिन किंवा काव्यशास्त्र सन दुरूह विषयकेँ अथवा कीर्त्तिलताक अवहट्ठकेँ जाहि रोचकताक संग पढ़बैत छलाह तकर वर्णन हिनक शिष्य लोकनिक मुँहसँ सुनल जा सकैत अछि ।

प्रो. रामदेवझा शिक्षण कार्यकेँ कहियो नोकरी नहि बुझलनि, सब दिन एकरा मैथिलीक बड़ पैघ दायित्वक रूपमे लैत रहलाह । हिनक मान्यता छनि जे प्राध्यापकक छओ गोट दायित्व छैक– पढ़ब–पढ़ायब, शोध करब–शोध करायब, लिखब ओ लिखबायब । एकटा प्राध्यापकक रूपमे उपर्युक्त छओ गोट दायित्वक सम्यक् निर्वहन करैत रहलाह । सर्वप्रथम ई स्वयं 1970 मे 'मैथिलीमे शैव साहित्य' विषयपर पी–एच. डी. कऽ मैथिलीमे शोधक एकटा मानकता स्थापित कयलनि । तत्पश्चात् हिनक सान्निध्यमे अगणित छात्र शोधक क्षेत्रमे कीर्त्तिमान स्थापित कयलनि । कतेक छात्र हिनक प्रेरणा ओ प्रोत्साहन पाबि आइ साहित्यक क्षेत्रमे स्थापित भेल छथि । वर्त्तमानमे हिनक शिष्यक कोन कथा, शिष्यक शिष्य लोकनि अध्यापनक क्षेत्रमे छथि । एहि अर्थमे हिनका मैथिली शिक्षा परम्परामे महामहोपाध्यायक विशिष्ट पद ओ गरिमा स्वतः प्राप्त भऽ गेल छनि । यद्यपि अपन छात्र जीवनहि जकाँ डा. रामदेवझाकेँ अपन प्राध्यापकीय जीवनहुमे निरन्तर प्रतिकूल हवा–बिहाड़िक सामना करऽ पड़ैत रहलनि, तथापि एहिसँ हिनक मेधा ओ विद्वत्ता कदापि प्रभावित नहि भेलनि । एकटा निविष्ट प्राध्यापकक रूपमे छात्र वर्गमे अजस्र ख्याति ओ विद्वद्वर्गमे अपरिमित सम्मान भेटैत रहलनि । मइ 1996मे ई यूनिवर्सीटी प्रोफेसरक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह तथापि एखनहुँ प्राध्यापकीय षट्कर्म–बूझब–बुझायब, पढ़ब–पढ़ायब, लिखब–लिखायब केर नैरन्तर्य यथावत् बनौने छथि । आइयो हिनक आवासपर जिज्ञासु–ज्ञानपिपासु लोकनिक भीड़ ओहिना लागल रहैत छनि जे मिथिलाक प्राचीन चौपाड़ि परम्पराक आभास दियबैत अछि ।

प्रख्यात शोधप्रज्ञ

डा. रामदेवझा अपन छात्र जीवनहिसँ अनुसन्धानी स्वभावक रहलाह अछि । आरम्भमे ई अपन मातामही, माय ओ अन्यान्य महिला लोकनिक कण्ठसँ गीत, कथा, वचन, लोकोक्ति, वाग्धारा, लोक शब्दावली आदिक संकलन कयलनि । मैथिली लोकवृत्तक ओ प्रचुर संग्रह एखनहु हिनक संग्रहमे सुरक्षित राखल छनि । एहि सामग्री सभक उपयोग ई अपनहुँ करैत रहलाह अछि ओ अन्यहु शोधार्थीकेँ उपलब्ध करबैत रहलथिन अछि ।

1961मे मैथिलीमे एम.ए. कयलाक बाद ई पटना विश्वविद्यालयसँ डा. सुधाकरझा 'शास्त्री'क निर्देशनमे 'मैथिलीमे शैव' साहित्य विषयपर शोध करबाक हेतु पंजीयन करौलनि । एकर बाद तँ मिथिलामे शैव परम्परा, मैथिल जनजीवनमे शैवभावना, मिथिलामे रचित साहित्यमे शैव तत्त्वक अन्वेषणक जेना हिनकापर धुनि सवार भऽ गेलनि । मिथिलाक विभिन्न शैव तीर्थ ओ शिव मन्दिरक परिभ्रमण ओ गामे-गाम घूमि पांडुलिपि, टिपौत, हस्तलेख आदिक संग्रह-कार्य जेना हिनक व्यसन भऽ गेलनि । एहि गवेषणा-यात्रामे हिनका मैथिलीक एक-सँ-एक दुर्लभ, अनभिज्ञात सामग्री सब भेटलनि । उमापति ओ नन्दीपति सन नाटककारक नाट्येतर स्फुट गीतक संकलन, धीरमती सन अज्ञात कवयित्रीक गीतक उपलब्धि, विष्णुपुरी ओ सदानन्द प्रभृति अनेक कविक रचना ओ परिचयक उद्घाटन ओही अन्वेषणी संचारक परिणाम कहल जा सकैत अछि ।

हरगौरीविवाहक उद्धार

मध्यकालमे नेपालमे रचित मैथिली साहित्यमे शैवभावक अन्वेषण करबाक क्रममे नेपालपर लिखित अनेक देशी-विदेशी लेखकक पोथी सभक अध्ययन सुरू कयलनि । डेनियल राइट नामक एकटा यूरोपीय विद्वान द्वारा लिखित 'हिस्ट्री ऑफ नेपाल' मे प्रो. रामदेवझाकेँ एक ठाम सूचना भेटलनि जे नेपाल उपत्यकाक मल्ल राजा जगज्ज्योतिर्मल्लक मैथिलीमे रचित हरगौरी विवाह नाटकक पाण्डुलिपि इंग्लैंडक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयक लाइब्रेरीमे संरक्षित छनि । एहि सूचनाक आधारपर प्रो. झा कैम्ब्रिजसँ पत्राचार कयलनि । ओतऽसँ आशानुकूल उत्तर भेटलनि । तदुपरि सी.एम. कॉलेजक तत्कालीन प्रधानाचार्य डा. लक्ष्मीकान्तमिश्रक सहयोगसँ ओतऽसँ हरगौरी विवाह नाटकक पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्म मङबाओल गेल । ई कार्य जतबे श्रमसाध्य छल ततबे व्यय साध्य, तथापि हिनका एकर श्रेय नहि भेटउन ताहि लेल कतेक गोटा कतेक खेल कयलनि, कतेक षड्यन्त्र रचल गेल से एकटा फराके अन्तःकथा थिक । मुदा सूत्रमे एतबे जे लाख व्यवधानक बादो अपन अदम्य शोध प्रवृत्तिक बलपर प्रो. झा अत्यन्त श्रम ओ कौशलपूर्वक एहि गजपट पाण्डुलिपिकेँ क्रमबद्ध कऽ, एकर पाठोद्धार कऽ एहि दुर्लभ कृतिकेँ 1969 मे सी.एम.कॉलेजक पत्रिका 'विदेह'क माध्यमसँ उपस्थित कयलनि । पछाति 1970मे ई पुस्तकाकार भेल आ एकर अनेक संस्करण बहरायल । साहित्यमे सम्पादन कार्य कतेक कठिन होइत छैक ओ कोनो सिद्धहस्त सम्पादकक हेतु विराट ज्ञान ओ विशेष दृष्टिबोध होयब कतेक आवश्यक रहैत छैक तकर परिचय हिनक एहि सम्पादित कृतिसँ भेटि जाइत अछि । वस्तुतः हिनक **हरगौरी विवाह नाटक** सम्पादन-कलाक एकटा प्रतिमान स्थापित कयलक जकर भूरिशः प्रशंसा डा. सुनीतिकुमार चटर्जी आ डा. सुकुमार सेन प्रभृति विद्वान लोकनि कयने छथिन ।

नेपाल यात्रा

हरगौरी विवाहक अन्वेषणसँ जे हिनका प्रतिष्ठा प्राप्त भेलनि से हिनक जिज्ञासु प्रवृत्तिकेँ औरो बेसी बढ़ा देलकनि। नेपालक राजकीय अभिलेखागारमे संरक्षित मैथिली साहित्यक अजस्र निधिकेँ अपना आँखिए जा कऽ देखबाक हिनक लालसा औरो प्रबल भऽ उठलनि। हरगौरी विवाहक प्रकाशनसँ पूर्व नेपालक मैथिली साहित्यक सम्बन्धमे विस्तारसँ जनबाक उद्देश्यसँ सर्वप्रथम 1967 मे ई शोध-यात्रापर नेपालक राजधानी काठमांडू गेलाह। ओतऽ मल्ल राजवंशक कालमे मैथिलीक स्वर्णिम अतीतक प्रत्यक्ष दर्शन करबाक अवसर प्राप्त भेलनि। नेपालक राजकीय अभिलेखागारमेसँ ताकि-ताकि कऽ जगज्ज्योतिर्मल्लक विभिन्न कृतिकेँ बाहर कऽ ओकर प्रतिलिपि करबौलनि। तदतिरक्त अपन शैव साहित्य विषयसँ सम्बद्ध नेपालक अन्यान्य रचनाकार लोकनिक कृतिक संकलन कयलनि। नेपालीय मनीषाक मर्मज्ञ पं. घनश्याम पोड्येलसँ सम्पर्क कऽ हुनक निजी संग्रहमे राखल कतोक पाण्डुलिपिक सेहो स्वयं प्रतिलिपि कयलनि। नेपाल उपत्यकाक मन्दिर सभमे घूमि-घूमि ओहिमे शिलापर उत्कीर्ण मैथिली गीत सभक अन्वेषण कऽ कऽ ओकरा उतारलनि। एकर बाद तँ ई कतोक खेप काठमांडूक यात्रा कयलनि आ प्रति बेर किछु अभिनव सामग्रीक संग आपस भेलाह।

नेपालसँ आनल एहि सारस्वत सामग्रीक उपयोग ई यथा प्रयोजन करैत रहलाह। सर्वप्रथम तँ हरगौरी विवाह नाटकक विस्तृत भूमिकामे जगज्ज्योतिर्मल्लक विराट साहित्य-साधनाक पहिल बेर विस्तारसँ परिचय प्रस्तुत कयलनि। हिनकासँ पूर्वक इतिहासकार लोकनि जगज्ज्योतिर्मल्लपर मात्र किछु शब्द खर्च कयने रहथिन। मुदा प्रो. रामदेवझाक शोधसँ ई पहिल बेर जानल जा सकल जे मल्ल राजा जगज्ज्योतिक साहित्यिक अवदान कतेक पैघ छनि। वस्तुतः प्रो झाकेँ मैथिलीमे जगज्ज्योतिक उद्धारक मानल जाइत छनि। पश्चात् हिनक अन्यान्यहु नाट्यकृति यथा कुञ्जविहार नाटक, दशावतारनृत्यम्, षोडशगीतम् आदिक सम्पादन कऽ कऽ ई प्रकाशित करौलनि। वर्त्तमानहुँमे जगज्ज्योतिक विशिष्टतम नाट्यकृति **मुदित कुवलयाश्व**क सम्पादन कार्य सम्पन्न कयलनि अछि।

नेपालक मन्दिर एवं अन्यत्र स्थित शिलालेख सबसँ उतारल मैथिली गीत सभक पाठोद्धार कऽ एकर प्रकाशन **नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत** नामसँ कयलनि। तद्वते नेपालसँ जे ज्ञात-अज्ञात कवि लोकनिक पद सभ हिनका प्राप्त भेलनि तकरा वैज्ञानिक ढंगसँ सम्पादित कयलनि जे **मैथिली प्राचीन गीतावली** नामसँ प्रकाशित भेल। नेपालहिसँ प्राप्त एहि सामग्री सभक आधारपर प्रो. झा पारिजातहरणक रचयिता कीर्त्तनिञा नाटककार उमापतिक परिचय, काल ओ हुनक आश्रयदाता राजवंशकेँ लऽ कऽ ग्रियर्सनहिक कालसँ चलि रहल विवादक समाधान कऽ देलनि।

मैथिली गवेषणाक क्षेत्रमे हिनक जे सबसँ महत्तम कार्य छनि ओ थिक मैथिली शैव साहित्य, जाहिपर 1970मे हिनका डाक्टरेटक उपाधि प्राप्त भेलनि। ई उपाधि हिनका मैथिली भाषा ओ साहित्यक आधिकारिक 'डाक्टर'क मान्यता ओ ख्याति प्रदान कयलकनि। पश्चात दू खंडमे प्रकाशित ई ग्रन्थ मैथिलीसँ इतरहु क्षेत्रक विद्वानक बीच चर्चित-समादृत भेल। मैथिली शैव साहित्यक अविच्छिन्न परम्पराक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करैत ई ग्रन्थ एहि भ्रमाह मान्यताकेँ समाप्त कयलक जे मैथिलीमे दुइये गोट काव्य परम्परा रहलैक अछि कृष्ण काव्य ओ शक्ति काव्य।

निरन्तर अनुसन्धान

आधुनिक मैथिली साहित्यमे सेहो हिनक अनेकानेक नवीन अनुसन्धानसँ इतिहासमे बेर-बेर संशोधन करबाक स्थिति उत्पन्न भेल अछि। मैथिलीक प्रथम उपन्यास जीवनाथमिश्र प्रसिद्ध पुलकितमिश्र रचित **मोहिनी-मोहन,** मैथिलीक आद्य कथा जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्य,** जनार्दनझा जनसीदनक कथा **ताराक वैधव्य,** कुमार गंगानन्दसिंहक **मनुष्यक मोल,** चन्दाझाक **वाताह्वान,** म.म. परमेश्वरझाक **दुर्गाचरित नाटक** एवं **सीमन्तिनी आख्यायिका** जीवनझाक रचना-समग्र, **नर्मदा सागर सट्टक** आदिकेँ इतिहासक गर्त्तसँ निकालि कऽ जँ ई नहि प्रस्तुत करितथि तँ मैथिलीक अध्येता लोकनि एहि निधि सबसँ अपरिचिते रहि जैतथि। एहिना मैथिलीक आद्य पत्रिका **मैथिल-हित-साधनक** वास्तविक कर्त्ता-धर्त्ता चन्द्रदत्तचौधरीक अवदानक उद्घाटन नहि कयने रहितथि तँ इतिहासमे ई भ्रम पसरले रहि जैतय जे मैथिल हित साधनक संरक्षक सम्पादक म.म. मधुसूदनझा ओ न्यायाधीश रामभद्रझा रहथि। वस्तुतः डा. रामदेवझाक अनुसन्धान कार्यक ई विशेषता रहलनि अछि जे एक बेर ई इतिहास बनबैत छथि आ तकर बाद पुनः अपन नूतन अनुसन्धानक आधारपर अपनहिसँ ओहि इतिहासकेँ खंडितो करैत छथि। हिनक अनुसन्धानक मैथिली क्षेत्रमे खूब सोरहो होइत रहल अछि। मैथिलीक प्रथम कथाकेँ लऽ कऽ कोनो इतिहासकारक मत सुनिश्चित नहि छलनि। जखन 1917 मे मिथिला मिहिरमे प्रकाशित जर्नादनझा जनसीदनक कथा **ताराक वैधव्य**केँ ताकि कऽ सामने अनलनि तँ मैथिली जगत तरंगित भऽ उठल। मैथिली कथापर किछु लिखबासँ पूर्व **ताराक वैधव्य**क ढोलहो पीटब जेना सभक लेल आवश्यक भऽ गेल। एवं प्रकारेँ जखन ई मान्यता स्थापित भऽ गेल जे मैथिलीक आद्य कथा यैह थिक तखन डा. झा अपन गवेषणाक तरकसमेसँ पुनः एकटा तीर निकालि कऽ चलौलनि जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्य** जे 1906इ.मे मैथिल-हित-साधनमे प्रकाशित भेल छल। वस्तुतः हिनक ई प्रवृत्ति एहि तथ्यक परिचायक अछि जे अनुसन्धानमे पूर्णविराम नहि, अपितु ई निरन्तर चलैत रहऽवला प्रक्रिया थीक। तेँ अपन अनुसन्धानपर स्वयं आत्ममुग्ध होइत एकरा चरम उपलब्धि नहि मानि ई इतिहासक अन्तस्तलमे जा कऽ प्रतिक्षण किछु नवीन तथ्यक प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहैत

छथि । तेँ हिनक अनुसन्धान ओ अनुसान्धानिक निष्कर्ष सदिखन अभिनवत्वसँ परिपूर्ण रहैत छनि, विद्यापतिक **तिले-तिले नूतन होय** सन उक्तिकेँ चरितार्थ करैत रहैत छनि आ अपन इतिहासकेँ नव ढंगसँ लिखबाक हेतु इतिहासकार लोकनिकेँ प्रभूत सामग्री उपलब्ध करबैत रहैत छनि ।

अनुसन्धानक मानकसँ समझौता नहि

डा. रामदेवझा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे शोध-अनुसन्धानक पर्याय मानल जाइत रहलाह अछि। मैथिलीसँ इतरहु विषयक गवेषक लोकनि शोध कार्यमे हिनकासँ परामर्श लैत रहलथिन अछि । शोध विषयक चयन, ओकर परिकल्पना ओ सामग्रीक उपलब्धताक मार्ग देखयबामे हिनका निष्णात मानल जाइत रहलनि अछि । शोध-निर्देशकक रूपमे हिनक एहि ख्यातिक कारणे अन्य प्रान्तीय, अपितु विदेशहुसँ अनुसन्धित्सु लोकनि आबि हिनक परामर्शसँ लाभान्वित होइत रहलाह अछि ।

डा. झा जेना अपनेसँ अनुसन्धान करैत रहलाह अछि तद्‌वते अपना निर्देशनमे अनुसन्धान कयनिहार अनुसन्धाता सबसँ परिश्रम करबैत रहलाह । एहि कारणे ई बदनामो भेलाह जे स्कॉलरकेँ बड़ चरियबैत-पैरैत रहैत छथिन, नेपाल, काशी, गोहाटी, कलकत्ता आदि स्थान जाय लय कहैत छथिन, गामे-गामे दौड़बैत छथिन, लाइब्रेरी सबमे घुमबैत छथिन। तथापि एहि तरहक अपप्रचारक बादो ई अनुसन्धानक मानकतासँ कथमपि समझौता नहि कयलनि । एक बेर एकटा प्रभावशाली पिताक गवेषक पुत्र हिनका निर्देशनमे शोध कऽ रहल छलथिन । गवेषकक इच्छा जे अपन पिताक नामपर जे–से किछु लिखि छुतिया छोड़ा लेल जाय । मुदा डा. रामदेवझा एहि हेतु तैयार नहि भेलथिन । गवेषककेँ विभिन्न लेखकक पोथी ताकि कऽ पढ़बाक निर्देश दैत मिथिला ओ असमक प्राचीन सम्बन्धक सन्दर्भमे कालिकापुराण ताकि कऽ पढ़ऽ कहलथिन । बापक दुलारू गवेषक पूत अपन पितासँ जा कऽ से कहलथिन । प्रभावशाली पिता तमतमाइत विभागाध्यक्ष डा. शैलेन्द्रमोहनझाकेँ जा कऽ उपराग देलथिन जे- हम एखन जीवितहिँ छी आ रामदेवबाबू हमर बेटाकेँ गरुड़पुराण पढ़ऽ कहैत छथिन ।' शैलेन्द्रबाबू तँ तत्काल किछु नहि बुझलथिन, मुदा बादमे जखन ओ सब बात बुझलनि तकर बाद जे ठहक्का बजरल तँ गवेषक ओ हुनक पिताकेँ अपन गलतीक बोध भेलनि ।

वस्तुत: जे गवेषक लोकनि हिनक अनुसन्धान करयबाक पद्धतिक अक्षरश: अनुपालन कयलनि तनिकर काज मैथिलीक किछु मानक शोध-प्रबन्धक रूपमे जानल गेल अछि । मैथिली भाषा ओ साहित्यक सर्वथा अस्पृष्ट क्षेत्रमे अनुसन्धान करायब हिनक विशेषता रहलनि अछि । मैथिली नाटक ओ रंगमंच, लोकगाथा, लोक शब्दावली, विशेष साहित्यिक प्रवृत्ति आदि क्षेत्रक विषयमे हिनक निर्देशनमे सर्वाधिक अनुसन्धान भेलनि अछि । एखन धरि हिनक निर्देशनमे दर्जनाधिक गवेषक पी-एच.डी.क उपाधि प्राप्त

कयलथिन अछि । एहिमेसँ अनेक शोध-प्रबन्ध समस्त मैथिली अनुसन्धानक क्षेत्रमे अनुपम श्रीवृद्धि कयलक अछि ।

सर्वांगपूर्ण शब्दकोषक संकल्पी

मैथिलीक ठेँठ शब्दावलीक प्रयोग साहित्य लेखनमे होअय आ शब्दकोषमे सेहो ई स्थान पाबि सकय ताहि दिशामे डा. रामदेवझा आरम्भहिसँ प्रयत्नशील रहलाह अछि । मैथिलीक विलुप्त होइत मैथिलीक ठेँठ शब्दावली, लोकोक्ति, वाग्धारा, युग्म ओ सहचर शब्द आदिक संकलनक व्यसन, ओकर उद्गम ओ व्युत्पत्तिक अन्वेषण तथा साहित्यमे प्रयत्नपूर्वक ओकर प्रयोग करबाक प्रवृत्ति हिनकामे रहलनि अछि । हिनक कथा, पत्रात्मक शैलीमे लिखित तीनू उपन्यास ओ लोक वृत्तपरक ललित निबन्ध सबमे मैथिलीक लुप्त होइत किंवा कोनो खास व्यवसाय, जाति, संस्कार, कृषि कर्म आदिसँ सम्बद्ध शब्दावलीक प्रयोग जाहि तरहेँ भेटैत अछि ताहिसँ शब्द संग्रहक प्रति हिनक रुचिक अनुमान सहजहि लागि जा सकैत अछि । हिनक **बटगाछक छाहरि** कथामे प्रसव कर्मसँ जुड़ल एकटा जाति विशेषक कार्य-शब्दावली, **फड़िच्छ भऽ गेल छलै** कथामे राज-मजदूरक वृत्ति ओ गृह निर्माणसँ सम्बद्ध शब्दावली, **शहीद चौक** कथामे दुग्ध-व्यवसायमे प्रयुक्त माटिक बासनक यावन्तो अभिधानक कलात्मक विवरण हिनक शब्द संचयनक क्षमता ओ ओकर अवसरानुकूल प्रयोगक प्रति सन्नद्धता साबित करैत अछि ।

डा. रामदेवझा मैथिलीमे एकटा सर्वांगपूर्ण शब्दकोष बनयबाक उद्देश्यसँ निरन्तर सामग्री जमा करैत रहलाह अछि । स्वयं शब्दकोष नहि तैयार कयलनि मुदा अपना निर्देशनमे अनेक शोधप्रज्ञ लोकनिसँ एहि तरहक कार्य करबैत रहलाह, संगहि ग्रियर्सनसँ लऽ कऽ गोविन्दझा पर्यन्तक जे श्ब्दकोष अछि तकरा संबलित करबाक प्रयास करैत रहलाह अछि । अवश्ये मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित शब्दकोष समितिक ई सलाहकार बनाओल गेलाह आ एहि क्रममे शब्दकोष हेतु शब्द-संचयन कऽ कऽ देलनि, मुदा तकर श्रेय हिनका नहि भेटलनि । तथापि एतेक सन्तोष अवश्य भेलनि जे मैथिलीमे एकटा शब्दकोष तँ भेल । एमहर हालमे गोविन्दझाक सम्पादनमे दोसर शब्दकोष 'कल्याणी कोश'क नामसँ प्रकाशित भेल अछि। अवश्ये ई शब्दकोश पूर्वक कोषक तुलनामे बृहत् अछि तथापि बहुतो दृष्टिसँ अपूर्ण अछि। डा. रामदेवझा वर्त्तमानमे एहि शब्दकोषमे छूटल ठेँठ मैथिली शब्द, ओकर कयल गेल त्रुटिपूर्ण किंवा एकांगी अर्थकेँ गम्भीरतापूर्वक विश्लेषण करबाक कार्य सम्पन्न कयलनि अछि आ एहि क्रममे कतोक हजार नवीन शब्द हुनका द्वारा लेखबद्ध कयल गेल अछि। 'कल्याणी कोश'क मार्जनक रूपमे कयल गेल हिनक एहि श्रमसाध्य-समयसाध्य कार्यक महत्ताक आकलन एकर प्रकाशनक उत्तरहि कयल जायब सम्भव होयत । ओना एकर किछु अंश छिटपुट रूपमे प्रकाशितो भेल अछि ।

साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश

डा. झाकेँ साहित्यिक अभिरुचि मातृकसँ प्राप्त भेलनि मुदा साहित्य लेखनक प्रवृत्ति तहिया जगलनि जहिया ई एम.एल. एकेडमीक छात्र भेलाह आ ओतऽ श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क सान्निध्य भेटलनि। सामान्यत: कोनो व्यक्ति कविताक माध्यमसँ साहित्यमे प्रवेश करैत अछि, मुदा ई एकर अपवाद भेलाह। जहिया ई आठम वर्गक छात्र रहथि तहिया 1952 मे हिनक पहिल कथा **चन्द्रहार** हिनक अपन गाम कबिलपुरक प्रसिद्ध 'साहित्य-पुस्तकालय' दिससँ प्रकाशित होइत हस्तलिखित पत्रिका **संक्रान्ति**मे प्रकाशित भेलनि। एकटा कथाकारक रूपमे साहित्यजगतमे ई प्रविष्ट तँ भेलाह, मुदा जानल गेलाह ई अपन कथा **मुदा आब की ?**सँ। आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क सम्पादनमे दरभंगासँ प्रकाशित प्रतिष्ठित मैथिली साप्ताहिक **मिथिला मिहिर**मे जुलाइ 1953मे हिनक ई कथा प्रकाशित भेलनि। पुन: हिनक एक गोट औरो कथा **दू ठोप नोर** 15 अगस्त 1953केँ मिहिरमे प्रकाशित भेलनि। ओहि समयमे स्कूली छात्र होइतो मैथिलीक समकालीन कथाकारक रूपमे साहित्य जगतमे हिनका जानल जाय लगलनि। 1960 अबैत-अबैत निर्माण, वैदेही, पल्लव, इजोत, मिथिला दर्शन, अभिव्यञ्जना आदि प्रत्येक मैथिली पत्रिकामे हिनक अनेकानेक चर्चित कथा सब प्रकाशित भेलनि आ मैथिलीक निविष्ट कोटिक कथाकारक रूपमे ई जानल जाय लगलाह। अपन कथामे मिथिलाक उपेक्षित वृहत्तर समाजक इच्छा-आकांक्षा, ओकर दैन्य ओ पीड़ा, ओकर अभाव भरल जिनगीक सरसता ओ विवशताकेँ जाहि कलात्मक तानी-भरनीक संग अपन कथामे प्रस्तुत कयलनि, ताहि कारणे सभक दृष्टिपर हिनक चढ़ि जायब स्वाभाविक छल। कलमक एहि जादूगरकेँ कोना अपन खेमामे आनल जाय तकर प्रयत्न होअऽ लागल। केओ हिनका मार्क्सवादी छत्ता तर अनबाक प्रयास कयलनि, तँ किनको हिनकासँ अपेक्षा भेलनि जे ई फ्रायडीय कथा लिखथु। ओहि समयक चर्चित कथाकार ललित किछु दिन धरि हिनक शिक्षक सेहो रहल छलथिन, ओ स्पष्ट रूपसँ हिनका कहलथिन- रामदेव तोँ हॉट स्टोरी लिखह।' आर्यावर्तमे हिनक **पहुना** कथाक हिन्दी रूपान्तरण **मेरा पहुना** पढ़ि ओहिसँ प्रभावित भेल राजकमल एकदिन हिनका ताकि कऽ अपन कथामे सेक्सक मशाला देबाक औचित्य बुझौलथिन। सोमदेवसँ जखन भेट होइनि तँ ओ मार्क्सवादक पाठ पढ़बथिन। मुदा कथाकार रामदेवझा हिनका लोकनिक बात सुनितो कोनो झंडा-पताका लगा कऽ लेखन करब, किंवा कोनो धारा विशेषमे दीक्षित होयब वा कोनो गोलमे सम्मिलित होयब नहि गछलनि। कथाक क्षेत्रमे अपन मार्ग अपनेसँ बनबैत ई आगू बढ़ैत रहलाह। हिनक **भितरिया धधरा** कथा ककरो हिनक मार्क्सवादी होयबाक भान करौलक, तँ **मनुक सन्तान** कथा समाजवादी, तहिना **एक खीरा:तीन फाँक** कथा पढ़ि केओ हिनका फ्रायडवादी बुझलक तँ **धरतीमाता** कथा पढ़ि केओ हिनका संघवादी कहलक। मुदा के की कहैत अछि वा नहि कहैत अछि ताहि दिस बिना कोनो ध्यान देने ई विशुद्ध साहित्यवादी बनल,

पूर्णतः सुचिन्तित भावसँ कथा लेखन करैत रहलाह । 1965मे हिनक पहिल कथा संग्रह **एक खीरा : तीन फाँक**, 1966 मे दोसर संग्रह **मनुक सन्तान** प्रकाशित भेलनि । एहि दुहू संग्रहक कतोक संस्करण भेल । हिनक तेसर कथा संग्रह **धरतीमाता** एकटा नमहर अन्तरालक बाद 1988मे प्रकाशित भेलनि ओ चारिम संग्रह **आजी माँ** 2009मे प्रकाशित भेलनि अछि । हिनक एहि संग्रह सभक कतोक कथा मैथिलीक किछु उत्कृष्टतम कथाक रूपमे परिगणित अछि । एहि मध्य हिनक अनेक कथा हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, तेलुगू, पंजाबी आदि भाषामे अनूदित भऽ कऽ मैथिलेतर पाठक वर्ग द्वारा प्रशंसित भेल अछि । रामदेवझा कथालेखनकेँ पतलोक क्षणिक धधरा वा नारेबाजीक पर्याय नहि मानि एकरा साधना बुझलनि तेँ आइयो ओहिना कथा लिखि रहल छथि । मुदा हिनका संग जे लोकनि कथालेखन प्रारम्भ कयलथिन ताहिमेसँ अधिकांश कुंठा, अवसादसँ ग्रस्त भऽ वा अपन उपेक्षाक वेदनासँ त्रस्त भऽ किंवा गोल-गोलैसीमे नहि सकबाक कारणे पस्त भऽ कथा लेखनक क्षेत्रसँ अस्त भऽ गेलाह ।

साहित्य सर्जनक दृष्टिसँ हिनक दू वर्षक (1959-1961) पटना प्रवासक समय अत्यन्त उर्वर रहलनि । एक दिस अध्ययन तँ दोसर दिस ओही गतिमे लेखन चलैत रहलनि । सितम्बर 1960सँ पटनासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरक प्रथमहि अंकमे हिनक **पिपासा** एकांकी प्रकाशित भेलनि । ई एकांकी हिनका बड़ ख्याति प्रदान कयलकनि । मिथिला मिहिरक प्रकाशनक ओहि आरम्भिक समयमे रचनाक घोर संकट रहैत छलैक । तेँ एकर प्रत्येक अंकमे अपन कोनो ने कोनो रचना देब हिनक प्रतिबद्धता रहलनि । कहल गेलैक अछि जे आवश्यकता आविष्कारक जननी होइत अछि । मिहिरकेँ लोकप्रिय बनयबाक हेतु ओ विभिन्न कोटिक पाठक वर्गक रुचिक अनुरूप साहित्य परसबाक प्रयोजनक पूर्त्तिक क्रममे हिनका द्वारा साहित्यमे एकटा चामत्कारिक प्रयोग भेल ।

अंगरेजीफूलक अवतरण

महिला लोकनिक रुचि ओ मानसिकताकेँ प्रतबिम्बित करैत मिहिरक सम्पादकक आग्रहपर रामदेवझा 'स्त्रीगण समाज' स्तम्भक हेतु **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** शीर्षकसँ एकगोट धारावाही लिखब गछलथिन । मुदा मिहिरक प्रायः प्रत्येक अंकमे हिनक कोनो ने कोनो रचना रहिते छलनि । सम्पादकीय दृष्टिएँ एकटा लेखकक दूटा रचना एक संग प्रकाशित होयब नीक नहि मानल जाइछ तेँ सैद्धान्तिक निर्णय भेल जे एहि धारावाहीमे लेखकक नाम नहि रहत । तकर पाछाँ दोसर कारण इहो जे मिहिरक पाठक ओ विशेष कऽ महिला पाठककेँ ई प्रतीति कराओल जाय जे एहि स्तम्भक लेखन कोनो महिले द्वारा कयल जा रहल अछि, जाहिसँ महिला वर्गमे मिहिरक प्रति आकर्षण बढ़य आ एही तरहक लेखनक स्फुरण होइक ।

पोस्टग्रेजुएटक छात्र रामदेवझाकेँ मिहिर-सम्पादक दिससँ ई चुनौतीपूर्ण लेखकीय

दायित्व देल गेल छलनि । पुरुष भऽ कऽ महिलामुखी भाषामे महिलाक मनोवृत्तिकेँ ताहि तरहेँ अभिव्यंजित करब जाहिमे पठनीयता, रोचकता, क्रमबद्धताक संग-संग अग्रिम भाग पढ़बाक हेतु पाठकक मनमे उत्सुकता उत्पन्न कयने रहय । एहि स्तम्भक लेखन कोन शैलीमे होअय से एकटा पैघ समस्या छल । मिहिर सम्पादकक पहिने विचार भेलनि जे एकरा दूटा महिला सखीक बीच गप्प-शप्पक शैलीमे प्रस्तुत कयल जाय ।' एहिपर रामदेवझा हँसैत कहलथिन- तखन तँ ई पटना आकाशवाणीक चौपाल कार्यक्रम भऽ कऽ रहि जायत ।' अन्ततः सम्पादक एहि प्रस्तावित धारावाहीक शैलीक चयनक पूरा भार हिनकहि ऊपर धऽ देलथिन । बहुत चिन्तन-मननक बाद ई पत्रात्मक शैलीमे एकर लेखनक योजना बनौलनि जाहिसँ विछोहक स्थितिमे रहैत दूटा सखी पत्रक माध्यमसँ अपन सुख-दुखकेँ अपनामे बाँटय । एहि शैलीमे नारीमनक टीसकेँ उभारि कऽ प्रस्तुत करबाक प्रचुर अवसर छल, जकरा पढ़लासँ कोनो पाठिकाकेँ एहिमे अपन प्रतिबिम्बक दर्शन भऽ सकैक । एहि दुहू पत्र-लेखिकाक नाम की राखल जाय तँ ताहि सन्दर्भमे श्रीझाकेँ मन पड़लनि मिथिलाक गामघरमे बालिका लोकनिक बीच प्रचलित भैया, बहिना, बहिनपा, गंगाजली, प्रीतम, फूल, पान, सुपारी, लऽङ लगयबाक परिपाटी । ओही समयमे काजी नजरूल इस्लामक एकटा बंगला उपन्यास **बान्धनहारा**क कथावस्तु पढ़बाक हिनका अवसर भेटलनि । ओहिमे एक-दोसरकेँ कलमीलता ओ सोजेनफूल नामसँ सम्बोधित करैत दूटा सखीक बीच पत्राचार छैक । दूनू सखीक नाम हिनका प्रभावित कयलकनि । अपन स्तम्भक दुहू पत्र लेखिका नायिकाक सखीत्व संज्ञामे एकटा अभिनवत्व रहय तँ से हिनका प्रेरित कयलकनि अपन पत्नी योगमाया ओ मैथिलीक प्रसिद्ध गीतकार रवीन्द्रनाथठाकुरक पत्नी प्रेमलताक बीच चलैत पत्राचार । एक-दोसराकेँ दुहू सखी द्वारा अंगरेजीफूलक सम्बोधनक संग लिखल जाइत पत्रक भाषा, वर्त्तनी, शब्दक प्रयोग आ विषय-वस्तु हिनका अतिशय रोचक लगलनि । अन्ततः एहि स्तम्भक नामकरण कयलनि- **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** । एहि स्तम्भक रूप-रेखा एना बनल जे एकटा सखी गाममे रहत आ दोसर पटनामे । एक-दोसरासँ दूर रहैत दूनू सखीक बीच पत्राचार होयतैक जे पाठककेँ वास्तविके पत्राचारक भान करौतैक । एतावता गामवाली अंगरेजीफूलक दिससँ पहिल चिट्ठी लिखल गेल जे मिहिरक विद्यापति अंक (30 अक्टूबर 1960)मे प्रकाशित भेल । तत्पश्चात् उत्तर-प्रत्युत्तरक क्रममे प्रति सप्ताह धारावाही क्रममे एकर प्रकाशन चलऽ लागल । शीघ्रे ई स्तम्भ ततेक चर्चित भऽ गेल जे नारी-पाठकक कोन कथा व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहनझा, डा. सुधाकरझा 'शास्त्री' प्रभृति व्यक्तिकेँ ई अतिशय आकर्षित कयलकनि । आरम्भमे एहि पत्रात्मक उपन्यासक लेखकक नाम गुप्त रहल, मुदा से बेसी दिन नहि चलि सकल । प्रो. श्रीमायानन्दमिश्र ओहि समयमे पटना आकाशवाणीमे छलाह । ओ ओहि समयमे मिहिर-सम्पादकक विरोधी खेमामे छलाह । एक दिन ओ रामदेवझाकेँ पुछलथिन- ऐँ हौ अंगरेजीफूलक चिट्ठी तोँही लिखैत छह ?' ई चुप रहि गेलाह । हम

तँ पहिले दिन पढ़ि कऽ बुझि गेलियह । मौगिआही आहे-माहे बड़ रोचक रहैत छह, मुदा अपन लेखकीय ऊर्जाकेँ एना कऽ उझिलब सेहो ठीक नहि ।' ई हुनक टिप्पणीपर बिहुँसि कऽ रहि गेलाह ।

अंगरेजी फूलक चिट्ठी स्तम्भक लेखकक नाम सामान्य रूपमे गुप्त छल, परन्तु पटनाक अन्तरंग मित्रमण्डली ओ दरभंगाक हुनक शुभेच्छु ओ आप्त जनकेँ ई नीक जकाँ बूझल छलनि जे ई स्तम्भ रामदेव लिखैत छथि । मइ 1961मे मिहिरक व्यवस्थाक सर्वेसर्वा श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार लग एहि स्तम्भक वास्तविक लेखकक नामक खुलासा भेलापर शेखरजीक हेतु किछु अप्रिय स्थिति सेहो उत्पन्न भेलनि । मिहिर सम्पादक सुरूमे जे उत्साह देखौने छलथिन से पछाति देखायब बन्द कऽ देलथिन आ एक दिन बिना कोनो पूर्व सूचनाक, कथानककेँ कोनो निष्कर्षपर पहुँचबासँ पहिने स्तम्भकेँ बन्द कऽ देलथिन । एहि स्तम्भक एकतालिस गोट पत्र प्रकाशित भेल । चारि गोट औरो पत्र जे सम्पादकक लग छलनि, तकरो दाबि कऽ राखि देल गेल ।

हरिमोहनझाक कन्यादानक नायिका बुच्चीदाइ जकाँ अकस्माते अवतरित भेलीह अंगरेजीफूल आ मैथिलीक पाठकक हृदयपर अपन अमिट छाप छोड़ि देलनि । मिहिरक स्त्रीगण समाजसँ अंगरेजीफूलक प्रत्याख्यान करायब पाठककेँ उचित नहि बुझयलैक । मिहिरक प्रति पाठकक आकर्षणक ग्राफ जेना नीचाँ उतरऽ लागल । तखन सम्पादककेँ जेना अपन गलतीक अनुभव भेलनि । अंगरेजीफूलकेँ फेरसँ सुरू करब तँ सम्भव नहि छल, मुदा पाठककेँ बान्हि कऽ रखबाक हेतु अंगरेजीफूल सन कोनो दोसर स्तम्भ यथाशीघ्र सुरू करबाक आवश्यकता हुनका बुझाय लगलनि । एहि तरहक लेखनक क्षमता हिनकेटामे छलनि, नारी मनोविज्ञानक जेहन सूक्ष्म पकड़ ओ ओकरा तद्वते उपस्थापित करबामे जे हिनक सिद्धहस्तता छलनि से तथ्य सर्वज्ञात भऽ चुकल छल । अतः सम्पादक पुनः हिनकासँ एहने सन दोसर स्तम्भ लिखबाक आग्रह कयलथिन । अंगरेजीफूलक संग भेल दुर्घटनासँ क्षुब्ध रहितो श्रीझा सम्पादकक अनुरोधक सम्मान करैत पत्रात्मके शैलीमे दोसर स्तम्भक लेखन सुरू कयलनि जकर शीर्षक भेल- **बहिनाक विरोग** । पुनः तेसरो पत्रात्मक स्तम्भ लिखलनि- **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** । ई तीनू धारावाही मैथिली साहित्यमे अविस्मरणीय बनि गेल । मैथिलीक प्रयोगधर्मी उपन्यासक कोटिमे परिगणित ई तीनू धारावाही, एकरहि अनुकरणपर रचना करबाक हेतु कतेको लेखक-लेखिकाकेँ प्रेरित कयलक । मिहिरमे पश्चात् एहि ढर्रापर अजस्र रचनाक प्रकाशन होइत रहल । एहि अर्थमे रामदेवझाकेँ मैथिली पत्रात्मक साहित्यक अधिष्ठाताक श्रेय देल जाइत छनि तँ से उचिते ।

मिहिरमे धारावाही प्रकाशनक दीर्घ अवधिक बाद पाठकक विशेष आग्रहकेँ देखैत 2002 मे उपर्युक्त तीनू पत्रात्मक उपन्यास मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित कयल गेल आ एकर छुहक्का उड़ि गेलैक । कोलकातासँ प्रकशित

मैथिली दैनिक **मिथिला समाद**मे 2008-10क अवधिमे एहि तीनू उपन्यासकेँ पुनः धारावाही क्रमसँ प्रकाशित कयल गेल जे एकर कालजयिताक परिचायक थिक ।

हिनक दू वर्षक पटना प्रवास साहित्यक यावन्तो विधामे लिखबाक हेतु हिनका अवसर प्रदान कयलकनि । कथा, कविता, एकांकी ओ उपन्यासक अतिरिक्त एहि अवधिमे लोकसाहित्य विषयक हिनक अनेक ललित निबन्ध सब प्रकाशित भेलनि । पटनाक बाद दुमका सन शुष्क क्षेत्रमे सेहो हिनक लेखनी मधुवर्षा करैत रहलनि । दरभंगामे स्थायी रूपसँ अयलाक बाद तँ हिनक लेखनी सर्जनात्मक ओ अनुसन्धानात्मक दुनू क्षेत्रमे एक समान गतिसँ चलऽ लगलनि । से लेखनी पछिला पचपन-साठि वर्षसँ अविराम गतिएँ चलि रहलनि अछि । साहित्यक यावन्तो विधा हिनक लेखनीसँ समृद्ध भेल अछि। मैथिलीक जाही विधाकेँ ई कमजोर बुझलनि तकरे अपन लेखनीसँ समृद्ध करैत रहलाह । वस्तुतः रामदेवझाक रचना-संसार साहित्यकारक ओहि बहुआयामी स्वरूपक परिचायक थिकनि जाहिमे मैथिलीक विरले लेखक सन्तुलन राखि सकल छथि । हिनक लेखनक एही असीम बहुआयामी क्षमताकेँ देखैत मैथिलीमे हिनका **सव्यसाची** साहित्यकारक विशेषणसँ विशेषित कयल जाइत छनि, तँ से उचिते ।

कविता ओ कवि सम्मेलनक मंच

डा. रामदेवझाकेँ आरम्भमे कविता-गीत लेखन दिस सेहो अभिरुचि छलनि । एम.एल. एकेडमीक समारोह सबमे काव्यपाठ करैत छलाह । विद्यापति पर्वमे विभिन्न ठाम आरम्भमे आमन्त्रितो कयल जाइत रहलाह । कवि सम्मेलनक मंचपर हिनक परिचिति एकटा गीतकारक रूपमे बनलनि । ओना कविगोष्ठीमे ई मुक्तक ओ नवकविताक पाठ सेहो करैत रहल छलाह । हिनक पहिल कविता **भ्रान्त कविसँ** 1956मे वैदेहीमे प्रकाशित भेलनि । पटना आकाशवाणीसँ फरवरी 1958मे हिनक पहिल कविता **साँझुक कथाक** प्रसारण भेल छलनि ।

फेर हेतै भोर

1961मे जखन ई प्राध्यापकक वृत्तिमे गेलाह तकर किछु वर्षक बादसँ क्रमशः ई मंचीय कवि सम्मेलनसँ दूर होइत चल गेलाह । एकर पहिल कारण छल विद्यापति पर्वक बढ़ैत भव्यताक संगहि कवि लोकनिक उपेक्षाक क्रमक प्रारम्भ, दोसर गद्यलेखनमे अतिव्यस्त भऽ जयबाक कारणे कवितासँ ई थोड़े दूर होइत चल गेलाह । यद्यपि स्वरुचिसँ यदा-कदा कविता-रचना करैत रहलाह । अनुरोधपर ई फरमाइसी पद्य ओ प्रशस्तिकाव्य सेहो लिखैत रहलाह अछि । नवगीत, गजल, बाल कविता लेखन दिस सेहो प्रवृत्ति रहलनि अछि । बहुत आग्रह भेलापर गोटेक मंचसँ कवितोक पाठ करैत रहलाह अछि । विगत किछु वर्षमे दरभंगामे ऋचालोक संस्थाक सक्रियता बढ़ल रहैक, तँ ओकर मासिक काव्य

गोष्ठीमे ई नियमित रूपसँ उपस्थित भेल करथि । नवागन्तुक कवि लोकनिकेँ काव्य-शिक्षा दैत हुनक मार्गदर्शन करथि। ऋचालोकक एहि आयोजनमे मिथिलामे पूर्वमे प्रचलित समस्यापूर्त्तिक परम्पराकेँ ई प्रारम्भ कयलनि । हिनका द्वारा एक बेर एहने एकटा समस्यापूर्त्ति देल गेल- **फेर हेतै भोर** । एहि समस्यापर कतोक गोटे कविता लिखलनि । ई अपनहुँ एहिपर एकटा मुक्तक लिखने छलाह । एहि टुकड़ीकेँ लऽकऽ हास्य-व्यंग्यक प्रख्यात कवि डा. विद्याधरमिश्र कन्यादान ओ दहेजक समस्यापर जे एकटा मार्मिक व्यंग्य कविता लिखलनि से हिट कऽ गेल । पछाति डा. मिश्र अपन जे नवीन काव्य संग्रह प्रकाशित कयलनि तकर नामे राखि देलनि- **फेर हेतै भोर** ।

हिनक कविताक कोनो संग्रह अद्यावधि प्रकाशित नहि भेलनि अछि, मुदा विभिन्न पत्र-पत्रिकाक माध्यमे हिनक कविता, गीत ओ नवकविता लोकानुरंजन करैत रहल अछि । प्रो. रमानाथझा अपन नवीन गीत संग्रहमे समकालीन मैथिली गीति काव्यक सशक्त हस्ताक्षरक रूपमे हिनक गीतकेँ स्थान देने छलथिन । रामकृष्णझा 'किसुन' जखन नवकविताकेँ आधार प्रदान करबाक हेतु सम्यक विवेचनपूर्वक 'मैथिली नवकविता'क संकलन तैयार कयलनि तँ डा. रामदेवझाकेँ अपन एहि संग्रहमे प्रमुखताक संग स्थान प्रदान कऽ हिनक समकालीनता-बोधकेँ उजागर कयने छलथिन । परवर्त्ती कालमे सेहो ई **वह्निवन्या, कोपड़, उड़ाँत गेल्ह, हमर अहाँ, ले बलैया** सन किछु तेहन आधुनिक कविताक रचना कयलनि जे अपन वैचारिकता ओ गाम्भीर्यक कारणे मैथिली नवकविताक क्षेत्रमे मानक कहल जा सकैत अछि । ओना हिनक कविताक संग्रह आबि गेनहि हिनक कविस्वरूप फड़िच्छ भऽ प्रकट होयत आ कविता सभ सर्वजनसुलभ भऽ सकत ।

साहित्यिक उपनाम

साहित्यकार लोकनि द्वारा उपनाम रखबाक परम्परा रहल अछि । आधुनिक कालमे मैथिलीमे जनसीदन, यदुवर, द्विजवर, भुवन, मधुप, सुमन, किरण, यात्री, अमर, कलेश, मोहन, अज्ञात आदि सन कतोक साहित्यिक उपनाम देखल जाइछ । मुदा ई उपनाम सब ओहि लेखक लोकनिक कवि-व्यक्तित्वहिकेँ मुख्य रूपसँ उद्‌भासित करैत अछि । प्राय: मैथिली साहित्यमे उपनामक एही प्राचुर्यक कारणे अन्य भाषा-भाषी मध्य ई भ्रान्ति पसरल जे आधुनिक मैथिली साहित्यमे मुख्यत: कवितेक सृष्टि भऽ रहल अछि ।

आरम्भमे उपनामक अभिरुचि भेलनि तँ 'राजहंस' उपनाम रखलनि । एहि उपनाम सहित हिनक मात्र एकगोट निबन्ध **1954 ओ मैथिली** 1955मे कानपुरसँ प्रकाशित मिथिलादूतमे प्रकाशित भेलनि । एहि उपनामक प्रयोग आगुओ करितथि, मुदा ओही समयमे मन्त्रनाथझा अपन 'हंसराज' उपनामक संग साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि । राजहंस ओ हंसराज लऽ कऽ साहित्यमे भ्रम उत्पन्न होइतय । अत: एहि नामकेँ ई सर्वदाक लेल

परित्याग कऽ देलनि । मैथिली साहित्यमे हिनक प्रवेशे एकटा गद्यकारक रूपमे भेलनि । उपनाम रखने साहित्य ओ साहित्यकारक व्यक्तित्वक प्रति कोन तरहक धारणा बनैत छैक ताहि खतराक बोध सेहो भेलनि । तेँ पश्चात् अपना नामक संग कोनो उपनाम जोड़बाक पक्षमे ई कहियो नहि रहलाह । अपन मूल नामहिसँ साहित्य क्षेत्रमे जानल जाइ, सैह हिनकर ध्येय रहलनि, जाहिमे ई सफल रहलाह । मैथिलीमे डा. रामदेवझा कहने एकटा सम्पूर्ण सिद्धहस्त साहित्यकारक रूपमे हिनक छवि स्वत: उभरि कऽ सामने आबि जाइत छनि ।

एतावता उपनाम तँ नहि मुदा आवश्यकता पड़लापर किछु छद्मनामसँ ई अवश्य लेखन करैत रहलाह अछि । एहेन हिनक एक गोट छद्मनाम छनि – सपूत । एहि नामसँ निर्माण जो मिथिलामिहिरमे हिनक बहुतो रचना सब प्रकाशित छनि । एहिसँ अतिरिक्त तारापतिसिंह, मुद्राराक्षस, अग्निजिह्व, गौरीपति, महेश्वरझा, बलदेवझा आदि छद्मनामसँ सेहो विभिन्न पत्र-पत्रिकामे गोटपघरा रचना आदि प्रकाशित छनि ।

1955-56क अवधिमे हिनका मार्क्सवादी दर्शन पढ़ौनिहार कथाकार मित्र सोमदेव 'अमृतहसन' नामसँ साहित्यमे लिखबाक हेतु जोर देने रहथिन । उर्दूक सआदत हसन मंटोक तर्जपर अमृतहसन नाम धारण करयबाक पाछाँ हुनक तर्क छलनि जे ई नाम गंगा-जमुनी साझा संस्कृति ओ साम्प्रदायिक एकताक प्रतीक होयत । ई अपन मित्रक एहि परामर्शकेँ नकारैत कहलथिन- साहित्यमे हम एकमात्र अपन नामसँ परिचित होअऽ चाहैत छी, कोनो छद्म-कृत्रिम नाम-उपनामसँ नहि ।'

रंगमंच ओ नाटक

अपन रंगकर्मी माम पं. रामजतनमिश्रक प्रभावेँ हिनकामे बाल्यावस्थहिसँ रंगकर्मक प्रति अभिरुचि भऽ गेलनि । हिनक गाम कबिलपुरमे 'कबिलपुर ड्रामेटिक क्लब' नामक एकगोट संस्था छल । पश्चात् एकर नाम भारती कला परिषद भऽ गेलैक । एहि संस्था द्वारा दुर्गापूजाक अवसरपर गामक भगवती स्थान परिसरमे आयोजनपूर्वक तीन-चारि राति नाटकक मंचन होइत छल । मातृकसँ गाम अयलाक बाद बालक रामदेव स्वत: अपन गामक एहि नाट्य संस्थासँ सम्बद्ध भऽ गेलाह । ओहि समयमे विशेष रूपसँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक सत्य हरिश्चन्द्र, राधेश्याम कथा वाचकक ईश्वर भक्ति, सती-पार्वती, वीर अभिमन्यु, कृष्णावतार, श्रवणकुमार आदि पौराणिक नाटकक मंचन होइत छलैक जाहिमे ई बाल कलाकारक रूपमे सहभागी बनैत रहलाह ।

1951मे एम.एल.एकेडमीमे अयलाक बाद हिनक अभिनय प्रतिभाकेँ एकटा नवीन आयाम भेटलनि । स्कूलमे सरस्वतीपूजाक अवसरपर प्रतिवर्ष नाटकक मंचन होइत छलैक जकर व्यवस्थापक मैथिली शिक्षक श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' रहैत छलाह । 1953मे स्कूलमे मंचित **शहीद भगतसिंह** नाटकमे छात्र रामदेव मि. पिटपिटक अभिनय कयलनि

आ अपन उत्कृष्ट अभिनयक हेतु प्रशंसित ओ पुरस्कृत भेलाह । 1954 मे शेखरजीक **तमासा** नाटक खेलायल गेल जाहिमे मनोहरक भूमिकाक लेल ई भूरिशः प्रशंसाक भागी बनलाह ।

मातृभाषामे नाटक

ताहि दिन लहेरियासरायमे चित्रगुप्त सभा नामक एक गोट संस्था बेस सक्रिय छल । सभा द्वारा चित्रगुप्त पूजाक अवसरपर प्रति वर्ष कमला नेहरू स्मारक पुस्तकालयक परिसरमे नाटकक आयोजन कयल जाइत छलैक । ई संस्था वस्तुतः लहेरियासरायक कन्हैयामिश्र पोखरि, बलभद्रपुर–नवटोलियाक कायस्थ लोकनिक छलनि, तेँ एहिमे स्वभावतः हिन्दी नाटकेटा मंचित होइत छल । छात्र रामदेवझा अपन किछु कायस्थ मित्रक माध्यमे एहि संस्थाक सम्पर्कमे अयलाह । संस्थाक एकटा तेज–तर्रार सदस्य उपेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तवसँ हिनका बेस घनिष्ठता भऽ गेलनि । एक बेर अवसर पाबि ई श्रीवास्तवजीकेँ पढ़ा देलथिन जे सभा द्वारा मातृभाषामे नाटक नहि कयल जाइत अछि से बड़ लाजक बात थिक । श्रीवास्तवजी कहलथिन– बोलो, तुम करोगे मातृभाषामे नाटक, तो इस बार से जरूर मातृभाषामे नाटक होगा ।'

चित्रगुप्त पूजासँ पूर्व सभाक बैसाड़ भेल । ताहिमे श्रीवास्तवजी अड़ि गेलथिन जे– मातृभाषा मैथिलीमे भी होना चाहिए नाटक ।' सदस्य लोकनिकेँ हुनक एहि प्रस्तावकेँ मंजूर करऽ पड़लनि । तकर बाद तँ ई एहि संस्थाक मैथिली नाटकक मंचनक संयोजके बना देल गेलाह । अपन मित्र वर्गक सहयोगसँ रामदेवझा एहि संस्थाक मंचपर छींक, निरक्षरता निवारक पाठशाला, मलरवि, सत्यनारायण पूजा, बौआक दाम आदि कतोक हास्य एकांकीक मंचनेटा नहि कयलनि, अपितु एहि मंचक हेतु स्वयं गोनूझाक कतोक कथाकेँ नाट्य रूपान्तरित कयलनि । सभाक मंचपर मैथिली अभिनय खूब जमल करय । ध्यातव्य जे 1958 मे एही मंचपर सर्वप्रथम मिथिलेश ओ कृष्णकुमारझा नामक छात्र द्वारा लोकनृत्यक रूपमे जटाजटिन नृत्य प्रस्तुत कयल गेल छल जे दर्शककेँ खूब नीक लागल छलैक ।

1956मे दरभंगामे 'वैदेही समिति' द्वारा 'अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन'क आयोजन कयल गेल छलैक। एहि अवसरपर रामकृष्णझा 'किसुन' रचित एकांकी **उदना रे मोर कतए गेला**क मंचन भेल । एहिमे रामदेवझा उदनाक अभिनय कयलनि आ सर्वोत्कृष्ट अभिनेताक पुरस्कार हिनका प्रदान कयल गेलनि । 1958मे कोलकातामे मिथिला संघक अखिल भारतीय आयोजन भेल छलैक । एहिमे कवि रूपमे आमन्त्रित छलाह काशीकान्तमिश्र 'मधुप', श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', सुधांशुशेखरचौधरी ओ रामदेवझा । ओहि समयमे कलकत्ताक रंगमंचक उदय नहि भेल छलैक। बाबूसाहेब चौधरी अमरजीक सुझावपर दरभंगामे जटा–जटिन लोकनृत्यकेँ पहिल बेर प्रस्तुत कयनिहार

मिथिलेश ओ कृष्णकुमारकेँ सेहो आहूत कयलथिन जे ओतऽ पुनः जटाजटिन नृत्य प्रस्तुत कयलनि । सम्मेलनक आयोजक बाबूसाहेबचौधरी ओ प्रो. प्रबोधनारायणसिंहक आग्रहपर श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' ओ शेखरजी द्वारा मूक-बधिरक अभिनय तथा **निरक्षरता निवारक पाठशाला** एकांकीक मंचन भेल जाहिमे रामदेवझा सेहो एकटा पात्र छलाह ।

1959सँ 1961 धरि दू वर्षक अपन पटना प्रवासक क्रममे ई एकटा कुशल अभिनेता ओ नाट्यकारक रूपमे सेहो अपन परिचिति बनौलनि । 1960मे पटना विश्वविद्यालयक मैथिली साहित्य परिषदक वार्षिकोत्सवक अवसरपर रामदेवझा मूक-बधिरक एकल अभिनय कयलनि जे बेस चर्चित भेल । हिनक ई अभिनय प्रो. हरिमोहनझाकेँ ततेक प्रभावित कयलकनि जे ओ विश्वविद्यालयक दर्शन शास्त्र विभागक छात्र लोकनिक विदाइ समारोहक अवसरपर रामदेवझाकेँ विशेष रूपेँ आमन्त्रित कऽ हिनकासँ पुनः ओ अभिनय करौलथिन ।

पटनाक रंगमंचपर

1960मे चेतना समिति, पटना द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व समारोहक अवसरपर पुनः हिनका द्वारा मूक-बधिरक एकल अभिनय प्रस्तुत भेल जे बेस प्रशंसित रहल । संगहि प्रो. हरिमोहनझाक **आदर्श कुटुम्ब** कथाक नाट्य रूपान्तरणक मंचन सेहो भेल । एकर रूपान्तरणकर्त्ता छलाह रामदेवझा । एहि नाटकमे ससुरक भूमिकामे रूपान्तरकर्त्ता स्वयं रहथि । आदर्श कुटुम्बक मंचनक कोनो पूर्व सूचना हरिमोहनबाबूकेँ नहि देल गेल छलनि । जखन नाटकक अभिनय भेलैक तँ दर्शक हँसैत-हँसैत लोटपोट होइत रहलाह । दीर्घामे अगिला पाँतीमे बैसल हरिमोहनबाबूक हँसी रुकबाक नामे नहि लैनि । हुनक बगलमे बैसल बाबूसाहेबचौधरी आदर्श कुटुम्बकेँ एहन सफल नाट्य स्वरूप प्रदान करबाक हेतु जखन हरिमोहनबाबूकेँ साधुवाद देलथिन तँ हठात् ओ अवाक् रहि गेलाह । ई हुनकालेल बड़ पैघ सरप्राइजिंग छलनि जे हुनकहि कृतिकेँ मंचित कयल जा रहल छलनि आ से ओ बिना बुझने तकर आनन्दमे डूबल छलाह । हुनक आँखि छलछला उठलनि । अगिला दिन जखन हुनका रामदेवझासँ भेट भेलनि तँ ओ हुनक दुनू हाथ धऽ लेलथिन आ भावुक होइत कहलथिन- अपन रचना पढ़ि हम अनका हँसैत देखने रहियैक मुदा रातिखन हम स्वयं अपन रचनाक मंचन देखि खुलि कऽ हँसलहुँ अछि, तकर श्रेय तँ अहीँकेँ देब ।'

मूक-बधिरमे बौकाक अभिनय तथा आदर्श कुटुम्बमे ससुरक भूमिकामे उत्कृष्ट अभिनयक हेतु अभिनेता रामदेवझाकेँ हरिनन्दनठाकुर आइ.ए.एस. एवं बाबूसाहेबचौधरी पुरस्कारस्वरूप क्रमशः स्वर्ण पदक ओ रजत पदक देबाक घोषणा कयलथिन । पछाति आदर्श कटुम्बक प्रसारण पटना आकाशवाणीसँ सेहो भेल । हरिमोहनबाबू आकाशवाणीसँ प्राप्त पारिश्रमिकक राशि पुरस्कारस्वरूप एकर रूपान्तरकर्त्ता रामदेवझाकेँ प्रदान कयलथिन ।

रंगकर्ममे मातृभाषाक नाटकक फॉर्मूलाक प्रयोग रामदेवझा अपन गामक नाट्य संस्थामे सेहो कयलनि । अपन गाममे ई प्रयत्नपूर्वक मैथिली नाटकक आयोजन कराबऽ लगलाह । बादमे तँ स्थिति एहन भऽ गेल जे हिनक गाममे मैथिलीये नाटक बेसी जमऽ लागल जे बहुतो गोटाक हेतु ईर्ष्याक कारणो बनल । 1961मे प्राध्यापकक वृत्तिमे अयलाक बाद प्राय: हिनका रंगमंचपर अभिनय करैत नहि देखल गेलनि अछि । तथापि नेपथ्यक अभिनेताक रूपमे तँ क्रियाशील रहबे कयलाह अछि ।

नाट्य क्षति

रंगमंच ओ नाटकक यैह सूक्ष्म ज्ञान ओ दीर्घ अनुभव हिनका एकटा सफल नाटककार बनबामे योग देलकनि । पिपासा, नव बाट नव बटोही, चाननक बसात प्रभृति हिनक एकांकी श्रव्य ओ दृश्य दुहू माध्यमक द्वारा बेर-बेर प्रसारित-मंचित होइत रहलनि । 1959मे महाभारतक कथापर आधारित ई **प्रतिशोध** नामक एकटा पूर्ण नाटकक लेखन कयने रहथि । नाटकक मूल भाव छलैक महाभारतक विभिन्न पात्रक प्रतिशोध भावना आ तकर प्रतिफल ओ महायुद्ध । महाभारतक ओहि समस्त प्रतिशोध कथाकेँ गुम्फित-संयोजित कऽ हिनका द्वारा एकटा नव प्रयोग कयल गेल छल । आनन्दपुर डेउढ़ीक हिनक मित्र रोहितेश्वरसिंह (जामुनजी)केँ ओ नाटक ततेक पसिन्न पड़लनि जे ओ ओकरा डेउढ़ीमे दुर्गापूजाक अवसरपर 1960मे मंचनक हेतु लऽ गेलथिन । ओहि ठाम 'प्रतिशोध'क सफल मंचनो भेल मुदा तकर बाद नाटकक पांडुलिपि कतहु गुम भऽ गेल । नाटककार डा.झाक हेतु ई बड़ पैघ साहित्यिक क्षति साबित भेलनि ।

पसिझैत पाथरक पहिल मंचन

हिनक दोसर प्रयोगधर्मी नाटक **पसिझैत पाथर** सेहो बेस चर्चित भेलनि जकर अनेकश: मंचन भेल । एहिमे 1976मे चेतना समिति, पटनाक मंचपर भेल मंचनकेँ ऐतिहासिक कहल जायत । 1976मे मिथिला विश्वविद्यालयमे युवामहोत्सवक आयोजनमे रामदेवझाक निर्देशनमे विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागसँ मैथिली एकांकीक सफल प्रदर्शन भेल छल जाहिमे छात्रा लोकनि सेहो भाग लेने छलीह । तत्कालीन कुलपति डा. मदनेश्वरमिश्र ओहिसँ प्रभावित छलाह । ओ चेतना समितिमे मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली नाटकक प्रस्तुतिक प्रस्ताव दऽ देलथिन । हुनकहि वचनानुसार मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक छात्र-छात्रा लोकनि पसिझैत पाथर नाटकक संग ओतऽ पहुँचल रहथि । मुदा दरभंगा टीमकेँ ओहि ठाम उचित आतिथ्य देबाक बदला हतोत्साहित करबाक प्रयास कयल गेलैक । पटनाक रंगकर्मी द्वारा सेहो नाट्य प्रस्तुति आयोजित छल । दरभंगा टीमकेँ कखन अवसर देल जायत से कहबालेल केओ तैयारे नहि छल । अस्तु, जेना-तेना टीमकेँ समय भेटलैक आ नाटक सुरू भेल ।

पसिझैत पाथरक पहिल दृश्य नाटकमे नाटक छैक । गामक उत्साही युवक सभ नाटक करबालय एक दिस फाँड़ भिड़ने तँ दोसर दिस गामक किछु गोटा नाटक नहि होअऽ देबऽलय भाला-बरछी तनने । मंचपर धरा-पकड़ीक स्थिति उत्पन्न भऽ गेलैक । दर्शकक भीड़मेसँ किछु गोटा छड़पि कऽ मंचपर चढ़ल । चारू दिस एके बेर हलचल मचि गेलैक । सब एकरा वास्तविके हंगामा बूझि लेलक । महिला लोकनि तँ जान बचा कऽ पड़यबालय उद्यत भऽ उठलीह । एहि कोलाहलक बीच मंचपर नाटकक अभिनय आगाँ बढ़ैत गेल तखन दर्शक समुदायकेँ बुझबामे अयलनि जे मंच आ मंचक नीचाँमे जे हंगामा भेल छल से नाटकक प्रथम दृश्य छल । तकर बाद जे तालीक गड़गड़ाहटि सुरू भेल से बन्द होयबाक नामे ने लेअय । प्रतिद्वन्द्वी नाट्य टीमक पेटक पानि डोलऽ लगलैक । नाटककेँ बीचेमे कोना भाँड़ल जाय, रंगमे भंग कोना कयल जाय तकर षड्यन्त्र नेपथ्यमे सोचल जाय लागल ।

नाटक दर्शककेँ नीक जकाँ बान्हि चुकल छल । नाटकक प्रथम दृश्यमे दर्शक दीर्घासँ छड़पि कऽ जे ग्रामीण युवक मंचपर चढ़ल छल ओकर नाम छलैक चानन । एकटा दृश्यमे शहरक सड़कक किनारमे चानन आ ओकर कमौआ पत्नी चम्पाक बीच रोचक संवाद चलि रहल छलैक । हठात् मंचपर एकटा कुकुरक प्रवेश भेल । ओ कुकुर आबि कऽ चाननक बगलमे पड़ल टिफीन कैरियर सूँघऽ लागल । कुकुरकेँ देखि अकस्मात् चम्पा चाननक दिससँ अपन दृष्टि हटा कुकुरकेँ हट्-हट् कहि रोमैत बाजलि- मार बाढ़नि धऽ कऽ सरधुए के ! तोरो दुख दै लय हमहीं भेटलियह ।' चम्पाक ई संवाद ओ आंगिक अभिनय ततेक स्वाभाविक आ स्वतः स्फूर्त्त छलैक जे दर्शककेँ ई नाटकक हिस्से बुझयलैक । पुनः एक बेर कसगर तालीक गड़गड़ाहटि पड़ल ।

चम्पा आ चाननक भूमिका कऽ रहल (डा.) ललिताझा ओ (डा.) मुरलीधरझा तँ अपन प्रत्युत्पन्नमतित्वसँ स्थितिकेँ सम्हारि लेलनि, मुदा मंचक पाछाँ गल-गुल होअऽ लगलैक । आतिथेय लोकनि नीक जकाँ बूझि गेलाह जे पसिझैत पाथरक मंचनमे जानि-बूझि कऽ व्यवधान ठाढ़ कयल जा रहल छैक । ओ लोकनि सतर्क भऽ गेलाह । तकर बाद विरोधी लोकनिक किछु नहि चललनि । अपना सफलताक झंडा लहरबैत नाटक समाप्त भेल । पटनामे मैथिली रंगमंचक इतिहासमे पसिझैत पाथर अपन अविस्मरणीय छाप छोड़ि गेल । नाटकक समाप्तिक बाद प्रतिद्वन्द्वी नाट्य टीमक एक चर्चित साहित्यकार व्यंग्य करैत प्रो. रामदेवझासँ पुछलथिन- कहिये श्रीमैन ! ई कुकुर दरभंगे से लाये थे ?' प्रो.झा मुस्कियाइत उत्तर देलथिन- नहि-नहि ई कुकुर तँ विशुद्ध पटनियाँ छल ।' व्यंग्यकर्त्ताकेँ अपन व्यंग्यक सटीक उत्तर भेटि गेलनि । ओ सकपकाइत हें हें करऽ लगलाह ।

पत्रकारिता ओ पत्र-सम्पादन

स्कूली जीवनक अन्तरालमे जखन रामदेवझा प्रेस-व्यवसायमे प्रवेश कयने छलाह तखन पत्रकारिताक आरम्भिक संसर्ग भेल छलनि । ओहि समयमे विश्वहितकारक मण्डल नामक एकगोट संस्था छल । ओकर संयोजक-पोषक प्रकाश प्रेसक स्वत्वाधिकारीए छलाह । ओहि संस्थासँ **विश्वशान्ति** नामक हिन्दी मासिक पत्रिका बहराइत छल जे प्रकाशे प्रेसमे छपैत छल । ओहि पत्रिकाक प्रेसस्थ क्रिया-कलापकेँ हिनका लगसँ व्यावहारिक रूपमे देखबाक अवसर भेटल छलनि। अवचेतन मनमे पत्रकारिताक बीज प्रायः ओही समयमे रोपा गेल छलनि ।

एम.एल. एकेडमीक छात्र-जीवन रामदेवझाक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्कारकेँ विकसित होयबाक अवसर प्रदान कयलक । ओही क्रममे हिनका भीतर पत्रकारिताक बीजाङ्कुरण सेहो भेलनि ।

1954मे अमरजीकेँ **वैदेहीक** सम्पादनक दायित्व भेटलनि । अमरजी अपन सम्पादन कालमे वैदेहीकेँ सामग्री ओ स्वरूप दुहू दृष्टिएँ आकर्षक बनौलनि । ओ जखन पटना आकाशवाणी जाथि तँ ओतऽसँ वैदेहीमे प्रकाशन हेतु प्रसारित मैथिली विषयक हिन्दी लेख सभ आनथि । कतिपय मैथिल विद्वान लोकनि द्वारा हिन्दीमे लिखित एहि लेख सभकेँ मैथिलीमे अनुवाद करबाक कार्य छात्र रामदेव कयल करथि । संगहि प्रूफ रीडिंग ओ प्रेसक अन्य काज सभ सेहो देखथि ।

अनुवादक फोका

एतऽ एकटा रोचक रहस्यक उद्घाटन करब अप्रासंगिक नहि होयत । प्रो. जयदेवमिश्रक एकटा हिन्दी वार्त्ता 'मिथिला का हास्य-साहित्य' अकाशवाणी पटनासँ प्रसारित भेल छलनि । छात्र रामदेव ओकर मैथिली अनुवाद 'मिथिलाक हास्य-साहित्य' शीर्षकसँ कयलनि जे मार्च 1954क वैदेहीमे प्रकाशित भेल । एहि निबन्धमे हरिमोहनबाबूक रचनाक प्रसंग एकठाम कहल गेल छल– समाज के जिस अंग पर श्रीहरिमोहनबाबू दिखाने के लिए हँसते-हँसते प्रहार करते हैं वहाँ छाले तक निकल आते हैं ।'

मैट्रिकक फाइनल इयरक छात्र रामदेव अपन सहज बुद्धिसँ एहि अंशक मैथिली अनुवाद कयलनि– समाजक जाहि अंगपर श्रीहरिमोहनबाबू देखैबाक हेतु हँसैत-हँसैत प्रहार करैत छथिन्ह, ओतै फोका धरि बहार भै जाइत छैक ।'

मैथिलीमे 'छाला' शब्दक अर्थकेँ व्यंजित करबाक हेतु कोनो सटीक शब्द प्रायः नहि अछि । अनुवादक एहि 'छाला'क हेतु 'फोका' शब्दक प्रयोग कयलनि । एकर पाछाँ कारण छल ओहि समयमे बेस चर्चित बैजू बाबरा फिल्मक ओ गीत–

किस्मत फूटी आस न टूटी
पावों में पड़ गये छाले
ओ दुनियाँ के रखवाले ।

फिल्मसे उपर्युक्त गीतकेँ फिल्मयबाक क्रममे बैजू बाबराक पैरपर विशेष फोकस करैत ओहिमे पड़ल ढल-ढल फोकाकेँ देखाओल गेल छल । बस अनुवादककेँ 'छाला'क सटीक मैथिली पर्याय 'फोका' भेटि गेलनि । मैथिलीमे फोका पड़ब, फोका उठब वा फोका बहार होयब एकटा वाग्धारा थिक जकर अर्थ अप्रिय वा अधलाह लागब होइछ से अनुवादक तखन बूझि नहि सकलथिन । तहिना हिन्दीक 'तक' लय मैथिलीमे 'धरि' शब्दक प्रयोग अपन सामान्य ज्ञानसँ कऽ देलनि । मुदा जखन जयदेवबाबूक ई निबन्ध हरिमोहनबाबूकेँ पढ़बाक अवसर भेटलनि तँ ओ अपना प्रति एहि रूपक नकारात्मक टिप्पणी देखि क्रुद्ध भऽ उठलाह आ तकर बाद ओ जखन-तखन कहल करथिन– हमर रचना पढ़ि कऽ तँ जयदेवबाबूकेँ फोका बहार भऽ जाइत छनि ।'

1960मे विद्यापति पर्वक अवसरपर चेतना समितिक मंचपर हरिमोहनबाबूक 'आदर्श कुटुम्ब' कथाक नाट्य-रूपान्तरणक मंचन भेल, जे देखि दर्शकगण हँसैत-हँसैत लोटपोट भऽ गेल रहथि । ओकर अगिला दिन हरिमोहनबाबूक डेरापर साहित्यिक लोकनिक जुटान भेल । एहिमे एहि नाटकक रूपान्तरकार ओ अभिनेता एवं पटना विश्वविद्यालयक एम.ए. मैथिलीक छात्र रामदेवझा सेहो उपस्थित रहथि । साहित्यिक लोकनि मंचित नाटकक प्रशंसा करैत कहलथिन जे एखनो हुनका लोकनिक हँसी थम्हल नहि जाइत छनि । एहिपर हरिमोहनबाबू किञ्चित बिहुँसैत कहलथिन– अहाँ लोकनिकेँ हमर रचनाक मंचन देखि जतेक हँस्सी लागल होअय, मुदा जयदेवबाबूकेँ तँ ढल-ढल फोका बहार भऽ गेल होयतनि ।' तखन बहुतो गोटाकेँ हरिमोहनबाबूक एहि टिप्पणीक अर्थ लागल होइनि किंवा नहि से नहि जानि मुदा रामदेवझाकेँ तँ तुरत एकर अर्थ लागि गेलनि आ ओ सकदम्म भऽ उठलाह । तकर बाद जखन कखनो हरिमोहनबाबूक मुँहसँ ओ टिप्पणी बहरानि कि रामदेव अपन अनुवादक त्रुटिक अनुभव करैत संकुचित भऽ उठथि ।

निर्माणक सपूत

लहेरियासरायसँ प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी काँग्रेसी नेता बाबू जानकीनन्दनसिंह द्वारा **निर्माण** प्रकाशित कयल जाइत छल । अगस्त 1954मे साप्ताहिक निर्माणक सम्पादनक दायित्व चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'केँ देल गेलनि । ओ एहि हिन्दी पत्रक स्वरूपमे परिवर्त्तन करैत 'मातृभाषाक पृष्ठ' नामसँ किछु स्थान मैथिलीक हेतु निर्धारित कऽ देलथिन । छात्र रामदेवझा पत्र-सम्पादक अमरजीक आदेशसँ दरभंगा ओ लगपासक

समाचार संकलन कऽ देल करथिन, तदतिरिक्त **सपूत**क छद्मनामसँ **की अहाँकेँ बूझल अछि** शीर्षकसँ स्तम्भ लेखन कयल करथि । एहि स्तम्भमे सामान्य ज्ञानसँ सम्बद्ध सूचनादि रहैत छल । निर्माण ओ वैदेहीक संग ई आरम्भिक जुड़ाव हिनक भीतरक पत्रकारकेँ अभिव्यक्त करबाक अवसर देलक ।

स्वदेशक हॉकर

1955मे 9 अक्टूबरसँ आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क सम्पादनमे दरभंगासँ मैथिलीक पहिल दैनिक पत्र **स्वदेश**क प्रकाशन सुरू भेल । ओहि समयमे रामदेवझा सी.एम. कॉलेजमे आइ.ए.क छात्र छलाह । आचार्य सुमन एही कॉलेजमे मैथिलीक प्राध्यापक । छात्र रामदेवक प्रतिभासँ ओ पूर्वहिसँ अवगत रहथि । ओ हिनका दरभंगाक समाचार संकलनक अतिरिक्त शहरमे स्वदेशक वितरणक दायित्व सेहो दऽ देलथिन । रामदेव प्रतिदिन कॉलेजमे वर्ग समाप्त भेलाक बाद सन्ध्यामे कटहरबाड़ी स्थित सुमनजीक आवासपर जाय संकलित कयल समाचार दऽ देल करथिन । पुनः भोरमे अमरजीसँ साइकिल लऽ सुमनजीक डेरापर जाथि आ ओतऽसँ स्वदेशक बंडल उठाय आनथि । स्वदेशक एकटा बंडल अमरजीकेँ दऽ देथिन जकरा ओ स्वयं बाँटथि । दोसर बंडल लऽ कऽ पैरे-पैरे, डेरे-डेरे जा कऽ बाँटथि । एक दिन लहेरियासरायक एकटा नामी मैथिलीप्रेमी अधिवक्ता हिनका लापरवाह हॉकर बूझि नीक जकाँ फज्झति कऽ देलथिन आ पछाति अमरजीकेँ उपराग दैत सबटा वृत्तान्तो सुना देलथिन । हॉकर रामदेव, स्वदेश हुनक बाहरी बरंडाक टेबुलपर राखि देथिन जकरा हुनक मोकील सब विरहा दैत छलनि । हुनक इच्छा जे स्वेदश देनिहार आवाज दऽ कऽ भीतर दऽ देल करय जे स्त्रीगणलोकनि सेहो पढ़थि । तखन अमरजी स्थिति स्पष्ट करैत कहलथिन जे- स्वदेश पहुँचौनिहार कोनो हॉकर नहि अपितु कॉलेजक छात्र अछि । साइन्ससँ मैट्रिकमे फर्स्ट डिवीजन भेलैक अछि । ओ मातृभाषाक सेवा भावनासँ काज करैत अछि ।' अधिवक्ता महोदयकेँ बड़ कचोट भेलनि । अगिला दिन जखन रामदेवझा स्वदेश देबऽ अयलथिन तँ ओ अत्यन्त स्नेहपूर्वक हिनका बैसाय अपन व्यवहारक हेतु खेद व्यक्त कयलथिन । ई स्वनामधन्य अधिवक्ता छलाह- पं. दिनेश्वर मिश्र ।

1956-57क अवधिमे दरभंगाक नेहरा गामसँ मासिक पत्र **पल्लव**क प्रकाशन होइत छल । एकर सम्पादक छलाह प्रो. शैलेन्द्रमोहनझा । मुदा परोक्ष सम्पादन करैत छलाह हुनक छात्र रामदेवझा । हिनकामे प्रेस ओ प्रूफ रीडिंगक ज्ञान पहिनहिसँ छलनिहेँ संगहि प्रकाशनार्थ आयल रचनाक भाषा ओ वर्त्तनी संशोधनक कार्य सेहो कयल करथि । ई परोक्ष सम्पादन कार्य हिनकामे प्रभूत आत्मविश्वास बढ़ौलकनि ।

1957मे ई अपन एक उत्साही मित्र महेश्वरठाकुर (भीठ-भगवानपुर)क संगे मिलि **भावना** नामसँ एकटा हस्तलिखित पत्रिका प्रारम्भ कयलनि । एहिमे छोट-छोट गीत

ओ गद्य सब रहैत छल । एहि पत्रिका हेतु मधुप, अमर, राधाकान्तदास प्रभृति कवि लोकनि पत्रिकाक आकारक अनुरूप छोट-छोट गीत लिखि कऽ देलथिन । आचार्य सुमन तँ प्रायः दीर्घ मुक्तक रचना करैत रहथि, मुदा एहि उत्साही छात्रक अनुरोधेँ ओ पत्रिकाक हेतु एकटा छोट सन गीत लिखि कऽ देलथिन- मन बसि घर के ऐल उजाड़य ।' सुमनजीक सम्पूर्ण काव्य साहित्यमे गीतक दर्शन दुर्लभे अछि । प्रायः गीत रचनाक ओ हुनक पहिल प्रयोग छलनि, जकर श्रेय 'भावना'केँ छैक । प्रायः दू-तीन अंक निकललाक बाद ई पत्रिका बन्द भऽ गेल ।

1957मे आनन्द मार्ग द्वारा लहेरियासरायसँ मैथिलीमे **नूतन विश्व** नामक एकटा मासिक पत्रिकाक प्रकाशन शुरू कयल गेल । यद्यपि एकर सम्पादकक रूपमे गिरिधर नारायण तथा सहायक सम्पादकक रूपमे डा. सीतारामदास ओ रत्नेश्वर नारायणक नाम छपैत छलनि मुदा परोक्ष रूपसँ एकर सम्पादन रामदेवझा करैत छलाह । मैथिलीक ई प्रथम आध्यात्मिक पत्रिका छल ।

मिहिरकेँ परोक्ष सहयोग

रामदेवझाक सम्पादन-योग्यताक लाभ मिथिला मिहिरकेँ सेहो आरम्भमे भेटलैक । 1960मे जखन मिहिरक प्रकाशनक सूर-सार भेल तँ सम्पादक पदक हेतु शेखरजीक नियुक्तिक पटनामे चतुर्दिक विरोध छल । स्वभावतः एहि विषम परिस्थितिमे हुनका काज करब अबूह बुझना जाइत छलनि । पटनाक निर्जन मरुभूमिमे हताश-निराश ठाढ़ भेल शेखरजीकेँ एकमात्र आशाक किरण दरभंगा निवासी ओ ओहि समयमे चर्चित मैथिली एक्टिविस्ट ओ पटना विश्वविद्यालयक छात्र रामदेवझामे भेटलनि । रामदेवझा ग्रीष्मावकाशमे पटनासँ गाम चल आयल रहथि तँ 29 मइ 1960कँ ओ पटनासँ रामदेवझाकेँ एकटा पत्रमे लिखलथिन - हमर इच्छा अछि जे सहायकक रूपमे अहाँ आबी । सहायककेँ चुनबाक भार सम्पादकजी हमरहि देलनि अछि- ई कहैत जे जकरापर अहाँक पूर्ण विश्वास हो एवं तिकड़मबाज नहि हो ।'

शेखरजीक एहि प्रस्तावकेँ तुरत स्वीकार करब रामदेवझाक लेल तखन तँ सम्भव नहि छलनि, किएक तँ ओ पटना पढ़ऽ लेल गेल छलाह, नोकरी करऽ लेल नहि । मुदा एम.ए. कयलाक बाद तँ कोनो जीविका ग्रहण करबाक छलनिहेँ । अतः मिहिरमे अपन भविष्य देखैत तत्काल निःस्वार्थ भावसँ मिहिरक सेवा ओ शेखरजीकेँ तन-मनसँ सहयोग देबाक आश्वासन देलथिन । तकर बाद जावत धरि ई पटनामे रहलाह मिहिरक सम्पादनमे नेपथ्यसँ सहयोग करैत रहलथिन, एतेक धरि जे शेखरजीक हिन्दी उपन्यास 'दो पाटन के बीच'क किछु आरम्भिक परिच्छेदक ई मैथिली अनुवादो कऽ देलथिन जे शेफालिकादेवीक नामसँ मिहिरमे **तऽर पट्टा उपर पट्टा** शीर्षकसँ धारावाही प्रकाशित भेल ।

ओहू समयमे मैथिलीमे वर्त्तनीक नामपर एखने जकाँ अजराकता व्याप्त छलैक। जतेक लेखक ततेक प्रकारक वर्त्तनी। मिहिरक प्रकाशनसँ पूर्व कतोक विद्वानक सहमतिसँ एकटा समन्वित वर्त्तनी सुनिश्चित कयल गेल। विभिन्न वर्त्तनीमे आयल रचनाकेँ मिहिरक स्वीकृत वर्त्तनीमे परिवर्त्तित करब एकटा कठिन काज छल। मुदा रामदेवझा सन सहयोगी भेटने शेखरजीक ई कार्य सुगम भऽ गेलनि। रामदेवझा राति-राति भरि जागि मिहिरमे प्रकाशनार्थ आयल रचनाक सब दृष्टिएँ संशोधन- सम्पादन करथि। स्वयं शेखरजी अपन मित्र अमरजीकेँ सम्बोधित कतोक पत्रमे एहि बातक उल्लेख करैत लिखल करथिन- फल्लाँ का लेख रामदेवजी को दे के ठीक करा लेंगे तब छापि देंगे।'

यद्यपि रामदेवझाकेँ एम.ए. कयलाक बाद नोकरीक हेतु मिहिरक मुँह नहि ताकऽ पड़लनि, मुदा मिहिरक ई कार्यानुभव हिनक सम्पादन कलाकेँ औरो बेसी परिष्कृत कयलकनि। वर्त्तनीक मामलामे ई कट्टर भऽ गेलाह। अपन निजी लेखनमे तकर बाद ई मिहिरहिक वर्त्तनीकेँ अंगीकार कऽ लेलनि आ अपन पी-एच.डी. थिसिस पर्यन्त एही वर्त्तनीमे प्रस्तुत कयलनि। मैथिलीमे मिहिरक वर्त्तनीमे प्रस्तुत ई पहिल शोध-प्रबन्ध छल जे बड़ पैघ दुस्साहसक काज छल।

वैदेहीक आङनमे

अपन पत्र-सम्पादन- दक्षताक सम्पूर्ण परिचय देबाक अवसर प्रो. रामदेवझाकेँ तखन भेटलनि जखन 1964मे हिनका मासिक वैदेहीक कार्यकारी सम्पादकक दायित्व प्रदान कयल गेलनि। बिहार विश्वविद्यालयक किछु क़ानूनी पेंचक कारणे ई **वैदेही**क सम्पादकक रूपमे अपन नाम छापब नहि स्वीकारलनि, तेँ सम्पादक रूपमे चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क नाम रहलनि, मुदा सम्पादकीय लेखनसँ लऽ कऽ सम्पादनक सबटा कार्य यैह कयल करथि। 1964सँ 1968 धरि पाँच वर्षक हिनक सम्पादन कालमे वैदेहीक स्वरूपमे आमूलचूल परिवर्त्तन भऽ गेल। वैदेही भाषा-साहित्य विमर्शक एकटा प्लेटफॉर्म बनि गेल। समकालीन मैथिली कथाक दशा-दिशापर कथाकार ललित द्वारा हिनका नामे पठाओल गेल दूटा व्यक्तिगत पत्रकेँ अत्यन्त निर्भीकतापूर्वक वैदेहीमे प्रकाशित कयलनि। ललितक ओ दुनू पत्र मैथिली साहित्यक शान्त सरोवरकेँ तरंगित कऽ देलक। एहि दुहू पत्रक प्रतिक्रियामे साहित्यिक विमर्शक जे एकटा प्रक्रिया चलल तकर अनुगूंज मिथिला मिहिर धरि पहुँचल। अपन सम्पादन कालमे ई चन्दाझापर केन्द्रित एकटा विशेषांकक प्रकाशन कयलनि जे संग्रहणीय बनि गेल। एहि विशेषांकक तत्काल लाभ भेल जे बिहार विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली पाठ्यक्रममे विशेष पत्रमे विद्यापतिक संग चन्दाझाकेँ सेहो स्थान देल गेलनि। हिनक सम्पादन कालमे आनन्दमोहनझा (मोहन भारद्वाज), शिवशंकरमिश्र 'नृसिंहन', राजेन्द्र विमल, कपिलदेव प्रभाकर प्रभृति कतोक नवीन साहित्यकार वैदेहीक माध्यमे साहित्यमे प्रवेश कयलनि। कार्यकारी सम्पादक प्रो.

रामदेवझा मिथिला–मैथिलीक तत्कालीन ज्वलन्त समस्या यथा मैथिलीक संवैधानिक मान्यता, बी.पी.एस.सी.मे मैथिली, मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा, चन्दाझापर डाक टिकट, मोहमदपुर स्टेशनक नाम चन्दाझापर होअय आदि सन कतोक विषयपर अनेकानेक सम्पादकीय लिखलनि जे आब ऐतिहासिक दस्तावेज बनि गेल अछि ।

संकल्पक पाँच पुष्प

डा. रामदेवझाक अप्रतिम सम्पादन कौशलक प्रमाण अछि हिनका द्वारा सम्पादित संकल्पक पाँच गोट अंक । संकल्पलोक, लहेरियासरायक वार्षिक मुखपत्रक रूपमे प्रकाशित संकल्पकेँ ई मैथिलीक रिसर्च–जर्नलक स्वरूप प्रदान कयलनि । एहिमे शोधपूर्ण आलेखकेँ सर्वाधिक प्रश्रय देलनि । एहि पत्रमे भोलालालदास, सुरेन्द्रझा 'सुमन', जयमन्तमिश्र, उमानाथझा, सुभद्रझा, चन्द्रनाथमिश्र'अमर', हरिहरझा प्रभृति स्थापित विद्वान लोकनिक आलेख आग्रहपूर्वक लिखबाय प्रकाशित करबैते रहलाह संगहि प्रख्यात चिकित्सक भवनाथमिश्र, इतिहासकार रत्नेश्वरमिश्र, समाजशास्त्री राजेन्द्रझाक संगहि मैथिलीसँ इतर क्षेत्रक भगवतीशरणमिश्र, रघुनाथसिंह पहाड़पुरी आदि लोकनिसँ सेहो मैथिलीमे लिखबौलनि । नवीन शोधकर्त्ता लोकनिक आलेखकेँ सेहो छाँटि–बनाय प्रकाशित कऽ हुनका प्रोत्साहित कयलथिन । एतावता संकल्पक ई पाँच गोट अंक अपन सामग्रीक कारणे स्मरणीय ओ संग्रहणीय कहल जाइत रहल अछि ।

राष्ट्रभाषा सेवा

डा. रामदेवझाकेँ राष्ट्रभाषा हिन्दीसँ कोनो विरोध भाव नहि रहलनि अछि । आरम्भमे तँ ई मैथिलीक समानान्तर हिन्दिअहुमे लिखैत छलाह, पछाति मैथिलीमे ततेक रमि गेलाह जे ओमहर दिस जयबाक अवकाशे नहि भेटलनि ।

अपन स्कूली जीवनकालमे जहिया ई **निर्माण**सँ जुड़ल रहथि तँ हिनक पहिल व्यंग्यात्मक हिन्दी कहानी **जी हाँ** एही पत्रिकामे छपल रहनि । निर्माणमे प्रकाशित हिनक एक गोट लेख **मैथिल हिन्दी सेवी** चर्चित भेल छल । सी.एम.कॉलेजमे छात्र रूपमे अयलाक बाद मैथिलीक संग–संग हिन्दिअहुक साहित्यिक गतिविधिमे ई सक्रिय रहऽ लगलाह । 1957मे कॉलेजक हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दीक कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित भेल रहैक जाहिमे हिनक कहानी **भीतर की गरम लौ** प्रथम स्थान प्राप्त कयलक । पुन: 1958मे दोसर बेरक कहानीक लिखित प्रतियोगिता परीक्षामे हिनक कथा **सुनहला प्रभात** पुन: प्रथम स्थानपर रहल । दुहू बेरक प्रतियोगितामे निर्णायक रहथिन कॉलेजक हिन्दी प्राध्यापक प्रो. सुरेन्द्रमोहनप्रसाद ओ अन्य वरिष्ठ अध्यापकगण । एहि उपलक्ष्यमे धर्मेन्द्र ब्रह्मचारीक हाथेँ ई पुरस्कृत भेल रहथि । ई दुनू कथा सी.एम.कॉलेजक मैगजिन **विदेह**मे 1958 तथा 1959क अंकमे प्रकाशित भेल छल । 1956मे आर्यावर्त

(13.05.1956)मे हिनक हिन्दी कहानी **मेरा पहुना** छपल रहनि । फरवरी ओ मार्च 1961क 'चुन्नू मुन्नू'क दू अंकमे **इजोतीरानी** बाल उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर छपल रहनि जकर मूल रूप बादमे प्रकाशित भेल । दैनिक विश्वमित्र (पटना)मे पं. विनोदानन्दझा पर एकटा परिचयात्मक निबन्ध छपल छलनि (17.04.61) **जननायक कर्मयोगी पं. विनोदानन्दझा** । निबन्ध पढ़ि विनोदाबाबू हिनका बजबाय अपन प्रसन्नता व्यक्त करैत पीठ ठोकि आशीर्वाद देने छलथिन ।

मैथिली भाषा-साहित्यक गरिमा ओ लोकसाहित्यक सौन्दर्यकेँ हिन्दीक पाठकवर्ग धरि प्रेषित करबाक हेतु सेहो ई हिन्दीकेँ अपन अभिव्यक्तिक माध्यम बनौलनि । 1960 सँ 1962-63 क मध्य आर्यावर्तमे हिनक अनेकशः मैथिली विषयक आलेख ओ ललित निबन्ध सब प्रकाशित भेलनि जे विद्वान लोकनिक ध्यान अपना दिस आकृष्ट कयलक । 1960सँ 62 धरि रामनवमीक अवसरपर प्रति वर्ष चन्दाझापर केन्द्रित हिनक निबन्ध प्रकाशित भेलनि । ओहि समयमे चन्दाझाक जन्मतिथिक पता नहि रहनि । रामायणक रचयिता रहथि तेँ रामनवमी दिवसक अवसरपर ओ विशेष निबन्ध रहैत छल । तद्वते **विदेशी विद्वान और मैथिली, मैथिली लोकसाहित्यमे कृष्णजन्म, मिथिलामे सीता संबंधी प्रचलित किंवदंतियाँ** सन कतोक आलेख; तँ **बरसो हे मेघराजा, नाविक नाव चलाये जा, त्योहारों की ऋतु शरद, खिले फूल कचनार के, फागुन में धरती अंगड़ाई** सन कतोक ललित निबन्ध सब प्रकाशित होइत रहलनि । एकर अतिरिक्त धर्मयुग, आज (काशी), दीपशिखा, दरभंगा समाचार, दैनिक नेपाल आदि पत्र-पत्रिकादिमे सेहो हिनक हिन्दी रचना सब प्रकाशित भेलनि ।

हिन्दी काव्य गगनमे

हिन्दीमे गद्य जकाँ पद्यहुमे ई आरम्भमे अपन लेखनी चलौलनि । कवि सम्मेलनक मंचपर हिनक भावप्रवण हिन्दी गीत सब बेस जमैत छलनि । मानव मनक अन्तर्वेदनाकेँ अभिव्यक्त करैत हिनक हिन्दी गीतक टीस सहजहिँ उद्वेलित कऽ दैत अछि । बानगीक रूपमे देखल जा सकैछ एकर किछु पंक्ति-

मेरे सपने तोड़-तोड़ तुम अपना जीवन हार बना लो
मेरे टूटे अरमानोंपर तुम मधुमास विहार बना लो
साँसों के कण जोड़-जोड़कर
जीवनका निर्माण किया है
जीवनके क्षण जोड़-जोड़कर
अपना पथ सन्धान किया है ।
मेरी कुटिया को उजाड़ तुम सोने का संसार बना लो ।

(आर्यावर्त, 6 सितम्बर 1959)

एकटा अन्य गीतमे एकहि संग हर्ष ओ विषादक स्थितिक कलात्मक चित्रण भेल अछि–

जिन्दगी पायी मगर जिन्दादिली ही खो गयी
चाँदके बदले न क्यों यह रात काली हो गयी
आँसुओं से होड़ लेकर
बरसती बेदर्द बदली
रोशनी बदली नहीं पर
आँख में तसवीर बदली
मन शराबी के लिए यह आँख प्याली हो गयी ।

(आर्यावर्त, 15 जुलाइ 1962)

रामदेवझाक हिन्दी गीतमे जँ एक दिस करुणा छनि तँ दोसर दिस पौरुष ओ उत्साह सेहो ततबे । 1958मे लिखित हिनक 'हौसला' शीर्षक गीतक किछु पाँतीकेँ देखल जा सकैत अछि –

प्रखर वेग सा आगे बढ़ता,
रुका न कूल कँगारों से
नहीं जानते पाँव हिचकना,
डरे नहीं अंगारों से
बड़े फफोले पड़े पाँव में, फिर
भी आगे बढ़ता हूँ
पत्थर की चट्टानों से भी
नया आदमी गढ़ता हूँ
मेरी हिम्मत ऊपर चढ़ती,
करती बात सितारों से
प्रखर वेग सा आगे बढ़ता,
रुका न कूल कँगारों से ।

हिन्दीमे धरती ओ मेघक बीच संवादक माध्यमसँ पर्यावरण संरक्षणक सन्देश दैत हिनक 'बादल बोला' कविताक रोचकताकेँ देखल जा सकैछ –

बादल बोला धरती से जी ! कितना पानी दूँ मैं ?
कितने जल से प्यास बुझेगी
कितना सागर बाँट सकेगा
उस सागर से कितना पैंचा बोलो रानी लूँ मैं ?

बोली धरती धीमे-धीमे-
तुलसी का छोटा सा पौधा
काँप रहा 'तुलसी चौरा'पर
दुबला-पतला, सूखा-सूखा
पुरबैया का झोंका आता
आते-आते कहता जाता
'संभल-संभल रे बच्चे मेरे
चन्द दिनों का जीवन तेरा'
यही साध अभिलाष हृदयमे
बच जाये तुलसी का बिरवा
धरती हूँ, इसकी हूँ जननी माँ सम प्राणी हूँ मैं ।
बादल बोला धरती से जी! कितना पानी दूँ मैं ।

रामदेवझाक हिन्दी रचनाक कोनो संग्रह अद्यावधि प्रकाशित नहि भऽ सकलनि अछि । पूर्वमे 'खिले फूल कचनारके' शीर्षकसँ ललित निबन्ध ओ 'जीवन संगीत' शीर्षकसँ गीतक संग्रह संकल्पित छलनि जे मूर्त्तरूप नहि लऽ सकल ।

अंग्रेजी लेखन

मैट्रिक धरि विज्ञानक छात्र ओ इंटरमे एकटा अनिवार्य विषयक रूपमे अंग्रेजी रहबाक कारणेँ डा. रामदेवझाकेँ अंग्रेजी भाषामे सेहो गति रहलनि अछि । हिनक अंग्रेजी लेखन आ वाचन दूनू पक्ष मजबूत छनि जकर परिचय विद्वत् जनकेँ समय-समयपर भेटैत रहलनि अछि । यद्यपि हिनक अंग्रेजी लेखन थोड़ छनि मुदा जतबे छनि से अत्यन्त महत्त्वक छनि । विशेषत: राष्ट्रीय स्तरक सेमिनारमे ई अपन पेपर अंग्रेजियहिमे प्रस्तुत करैत रहलाह अछि । एहि तरहक हिनक किछु प्रसिद्ध अंग्रेजी लेख छनि- **श्रीअरविन्दो'ज एस्थेटिक्स एण्ड मैथिली लिटरेचर** (रमण अभिनन्दन ग्रन्थ, 2004), **इण्डिजीनस नैरेटिव फॉर्म्स इन मिथिला** (डा. मदनेश्वरमिश्र अभिनन्दन ग्रन्थ, 2003), **मैथिली फोक सांग्स** (1990), **फोक लिटरेचर इन मैथिली** (1994), **मैथिली फोक बैलेड्स** (2011) **कीर्त्तनिया थियेटर, मॉडर्न मैथिली ड्रामा** (इंडियन थियेटर, ऑक्सफोर्ड प्रेस, नई दिल्ली) इत्यादि । साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा छओ खण्डमे प्रकाशित **इनसाइक्लोपीडिया आफ इंडियन लिटरेचर**मे मैथिली साहित्य विषयक प्रविष्टिक ई प्रमुख लेखकमेसँ एक छथि । एहि इनसाइक्लोपीडियामे अंग्रेजीमे लिखित हिनक मैथिली विषयक जे प्रविष्टि छनि से निम्न अछि- **रघुनन्दनदास** (वो.-1) **हर्षनाथझा, ईशनाथझा, जीवनझा** (वो-2), **मलार, मान, मर्सिया, मिथिला मिहिर, मिथिला मोद** (वो.-3), **निर्गुण, प्रोज** (गद्य), **हरिनन्दनठाकुर 'सरोज'** (वो.-4), **प्रोवर्स** (वो.- 6) इत्यादि ।

संस्था सहभागिता

डा. रामदेवझामे संस्था संगठनक नैसर्गिक प्रवृत्ति रहलनि अछि । जखन ई स्वतन्त्रतासँ पूर्व मिड्ल स्कूलक छात्र रहथि तहिये 'भारत बालमंडली' सन संस्थाक गठनमे अपन सक्रियताक परिचय दऽ चुकल रहथि । तत्पश्चात् विभिन्न संस्थाक आयोजन-प्रयोजनमे सक्रिय रहैत कतोक संस्थाक विभिन्न पदभार ग्रहण करैत रहलाह अछि ।

साहित्य पुस्तकालय : हिनक गाम कबिलपुरमे 'साहित्य पुस्तकालय' नामक एक गोट जीवन्त संस्था छलनि । एहि संस्था द्वारा प्रतिवर्ष तुलसी आ विद्यापति जयन्ती मनाओल जाइत छलैक । एम.एल.एकेडमीमे अयलाक बाद हिनका जे मैथिलीक लसेढ़ लगलनि तँ साहित्य पुस्तकालयकेँ सेहो मैथिली आयोजन दिस मोड़लनि । ओहि समयमे मैथिली ओ हिन्दीक विवाद चरमपर रहैत छल । हिन्दीवला सब मैथिलीक उपहास करैत कहल करथि जे एहि भाषाकेँ विद्यापति छोड़ि और दोसर छैके के ? एहि अपप्रचारकेँ खंडित करबाक हेतु आधुनिक कालक युगपुरुष चन्दाझाक ध्वज लहरयबाक उद्देश्यसँ छात्र रामदेवझा चन्द्र-जयन्ती मनयबाक निर्णय लेलनि । मुदा तावत धरि चन्दाझाक जन्म तिथिक अन्वेषण नहि भऽ सकल छल । अतः रामायणक रचनाकार होयबाक कारणे चन्दाझाक जन्मतिथि निज रामनवमी दिन होयबाक एकटा विश्वास करैत रामदेवझा कतहुसँ एकर प्रमाणमे एकटा दोहा ऊपर कयलनि-

रामजन्म तिथि चन्द्र ऋषि धयलनि यशक शरीर ।
शिव संगम संवाद सुनि मिथिला परम अधीर ॥

एकरहि प्रमाण मानि साहित्य पुस्तकालय द्वारा ई चन्दाझा जयंती मनायब आरम्भ कयलनि । एहि जयन्ती समारोहक अवसरपर भव्य कवि सम्मेलनक आयोजन होइत छल जाहिमे मधुप, सुमन, किरण, अणु प्रभृति कवि लोकनि आमन्त्रित रहैत छलाह । एही संस्था द्वारा एक बेर सुमन जन्मदिवस समारोहक भव्य आयोजन सेहो भेल छल । विगत शताब्दीक छठम दशकमे साहित्यमे फ्रायडीय दर्शनक हवा बहल छल, ताहि लाथेँ साहित्यक सद्भावकेँ लोप करबाक एकटा प्रवृत्ति जोर पकड़ने जा रहल छल । एहि दृष्प्रवृत्तिक विरोधमे साहित्य पुस्तकालय द्वारा 'अश्लील साहित्य स्वाहा' नामक एक गोट आन्दोलन चलाओल गेल छल जाहिमे ई बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लेने रहथि । एहि आन्दोलनकेँ एतेक बेसी प्रचार-प्रसार भेटल रहैक जे हिन्दीक अनेक नामी-गामी लेखक सहित अन्यहु भाषाक रचनाकार लोकनि अपन पत्र द्वारा एहि आन्दोलनक समर्थन कयने छलथिन ।

विद्यापति गोष्ठी : एक समयमे दरभंगामे विद्यापति गोष्ठी संस्था बड़ जगजियार छल । कमला नेहरू पुस्तकालयमे एकर कार्यालय रहैत छलैक । प्रो. जगन्नाथप्रसादमिश्र,

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' प्रभृति साहित्यकार एहि संस्थाकेँ सक्रिय बनौने रहैत छलाह। एम.एल. एकेडमीमे नामांकनक बाद रामदेवझा अमरजीक सान्निध्यक कारणे स्वतः विद्यापति गोष्ठीसँ सम्बद्ध भऽ गेलाह। एकर मासिक गोष्ठीमे सुधांशुशेखरचौधरी, उपेन्द्र साहित्यालंकार, विश्वनाथ तरुण, बेधड़क बिहारी, मायानन्दमिश्र, इन्द्रनाथझा, श्रीमन्तपाठक, अजेय अर्जुनकुमारवर्मा अनल, सोमदेव आदिक संग रामदेव नियमित रूपसँ अपन हिन्दी-मैथिली कविताक पाठ करैत छलाह।

मैथिली छात्र परिषद : एम.एल. एकेडमीमे सहपाठी सभक सहयोगसँ ई मैथिली छात्र परिषदक स्थापना कयने छलाह। 1953क उद्धरार्द्धमे सुरेन्द्रझा 'सुमन'क नियुक्ति सी.एम. कालेजमे मैथिली विभागमे प्राध्यापक पदपर भेलनि। विद्यालयक अध्यापक श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क प्रेरणा ओ पथप्रदर्शनमे मैथिली छात्र परिषद द्वारा कमला नेहरू स्मारक पुस्तकालय लहेरियासरायमे सुमनजीक सम्मानमे एक गोट गोष्ठीक आयोजन कयल गेल छल जकर अध्यक्षता बाबू भोलालालदास कयने छलाह।

मैथिली साहित्य परिषद : 1953-57क अवधिमे प्रो.सुरेन्द्रझा 'सुमन' अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क प्रधानमंत्री छलाह। सी.एम. कॉलेज दरभंगाक भवन (ओवल मार्केट बिल्डिंग)मे दक्षिण दिसक द्वारसँ पश्चिम रूम न.2मे अ.भा. मैथिली साहित्य परिषदक कार्यालय छलैक जाहिमे परिषदक पुरान-दिबड़लग्गू पोथीक ढेरी ओ उपस्कारादि राखल रहैक। रामदेवझा जखन ओहि कालेजक छात्र भेलाह आ सुमनजीक निकट सम्पर्की, घनिष्ठ एवं प्रिय छात्र बनलाह तँ सुमनजी हिनका कार्यालयक चाभी सुपुर्द कऽ देलथिन। ई गर्दा जमल कोठलीकेँ साफ-सुथरा कऽ अपन कालेजक मैथिली छात्रकें संग लीजरवला घंटीमें आबि कऽ बैसथि। नियमित सफाइ करथि जेना परिषदक आदेशपाल वा कार्यालय सचिव होथि। मार्च 1957मे अ.भा. मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशन भेल छल। एहि समय धरि हिनक परिचिति एकटा ऊर्जस्वल लेखक-कार्यकर्त्ताक रूप स्थापित भऽ गेल छलनि। परिषदक बहेड़ा अधिवेशनमे आद्यानाथझा निरंकुश ओ रामदेवझा निर्विरोध संयुक्त मन्त्री निर्वाचित भेलाह आ एहि पदपर दिसम्बर 1957 धरि रहलाह। परिषद कार्यालयक चार्ज 1959क दिसम्बरमे नव निर्वाचित प्रधानमंत्री प्रो. श्रीकृष्णमिश्रकेँ दऽ देलथिन।

अ.भा. मैथिली साहित्य परिषदक संयुक्त मन्त्रीक रूपमे हिनक परिचय-फलक एवं कार्यक्षेत्रक खूब विस्तार भेलनि। यैह कारण भेल जे अत्यन्त युवा होइतो परिषदक अगिला प्रधानमंत्री प्रो. श्रीकृष्णमिश्र ओ प्रो. शंकरकुमारझाक, क्रमिक प्रधानमन्त्रित्वक कार्यकाल धरि तथा डा. गणपतिमिश्रक प्रधानमन्त्रित्वक प्रथम कार्यकाल धरि ई अ.भा. मैथिली साहित्य परिषदक कार्यकारिणी समितिक सदस्य होइत रहलाह। मुदा अपन मुखरताक कारणे बादमे परिषदसँ ई सर्वथा बारि देल गेलाह।

मिथिला रिसर्च सोसाइटी : सी.एम.कॉलेजमे प्राध्यापक पदपर नियुक्तिक बाद प्रो. रामदेवझा 1964मे मैथिलीक प्राचीनतम संस्था मिथिला रिसर्च सोसाइटीकेँ पुनर्जीवित कयलनि । 1905मे स्थापित ई संस्था निष्क्रिय भऽ गेल छल । प्रो. रामदेवझा सर्वप्रथम 1965मे एहि संस्थाक नामपर स्वसम्पादित पोथी 'नन्दीपति गीतिमाला' क प्रकाशन कयलनि । तकर बादसँ निरन्तर एहि संस्था द्वारा साहित्यिक आयोजन सब कयल जाइत रहल अछि आ कतोक उत्कृष्ट पोथीक प्रकाशनक द्वारा ई अपन नामकेँ सार्थक बनौने अछि ।

संकल्प लोक : लहेरियासरायक सांस्कृतिक चुप्पीकेँ भंग करबाक हेतु 1974मे संकल्पलोक नामक एकगोट संस्थाक स्थापना कयल गेल । एहि संस्थाकेँ डा. रामदेवझाक कुशल मार्ग निर्देशन प्राप्त भेलैक । कठोर अनुशासन ओ नियमबद्धताक कारणे ई संस्था अल्पे समयमे अपन एकटा इतिहास बना लेलक । संकल्पलोक नहि केवल प्रतिवर्ष विद्यापति पर्वक भव्य आयोजन, अपितु अपन विशिष्ट मुखपत्र संकल्प एवं दू-दूटा साहित्य अकादेमी पुरस्कृत पोथीक प्रकाशन एवं बहुआयामी सांगठनिक क्षमताक कारणे एखनहुँ मन पाड़ल जाइत अछि । एकर मूलमे डा. झाक श्रेयकेँ अपवारित नहि कयल जा सकैछ । ई संकल्पलोकक उपाध्यक्षो निर्वाचित भेल छलाह ।

मैथिली अकादमी : डा. रामदेवझा मैथिली अकादमी, पटनासँ विभिन्न रूपेँ सम्बद्ध रहलाह अछि । एकटा रचनाकारक रूपमे तँ सहजहिँ, एहि संस्थाक स्थापनाक बाद एकर प्रथम अध्यक्ष पं. श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार हिनका अकादमीक मैथिली लेखन शैली निर्धारण समितिक सदस्य बनौने छलथिन । शैली निर्धारणक हेतु भाषिक प्रकृतिक विश्लेषणपूर्वक प्रदत्त हिनक अनुशंसा एखनो अकाट्ये मानल जाइत अछि । अकादमी द्वारा मैथिली शब्दकोष निर्माण समितिक सेहो ई सदस्य रहलाह । एहि रूपमे ई विशेषज्ञक अभिमतक रूपमे अपन मूल्यवान सहयोग दैत रहलथिन । ईहो एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे 2005मे जखन तत्कालीन बिहार सरकार मैथिली अकादमीकेँ भंग करबाक निर्णय लेलक तँ एहि निर्णयक विरोधमे सबसँ पहिल उठल स्वर हिनकहि छलनि । समाचार पत्रमे हिनक वक्तव्य छपलाक बाद ई जनान्दोलनक रूप धारण कऽ लेलक ।

साहित्य अकादेमी : देशक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ हिनक परोक्ष जुड़ाव पूर्वहिसँ रहलनि अछि मुदा प्रत्यक्ष जुड़ाव 1988सँ भेलनि । आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क द्वितीय संयोजकत्व कालमे डा. रामदेवझा मैथिली परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनाओल गेलाह । पुनः 1993मे डा. सुरेश्वरझाक संयोजकत्व कालमे सेहो ई सदस्य रहलाह । एहि दस वर्षक अवधिमे मैथिली भाषा-साहित्यक हिनक गम्भीर अध्ययनं ओ कार्य-दृष्टिक लाभ अकादेमी ओ मैथिलीकेँ प्राप्त भेलैक ।

1998मे डा. रामदेवझा स्वयं अकादेमीक सदस्य मनोनीत भेलाह । हिनका

अकादेमीमे मैथिली परामर्शदातृ समितिक संयोजक पदक दायित्व देल गेलनि आ पदेन ई साहित्य अकादेमीक कार्यसमितिक सदस्य बनलाह । मुदा दुर्भाग्य जे हिनक परामर्शदातृ समिति वाम-दक्षिण विचारधारा द्वारेँ सन्तुलित नहि रहलनि । तथापि एहि प्रतिकूलताक बादहु संयोजक डा. रामदेवझा जाहि धैर्य ओ सूझ-बूझक संग अपन दायित्वक निर्वहन कयलनि से हिनक आत्मबलक धनी होयबाक परिचायक थिकनि । अपन पाँच वर्षक कार्यकालमे ई जतेक ओ जाहि तरहक काज सब करौलनि तकरा ऐतिहासिक उपलब्धि मानल जाइत अछि ।

हिनक कार्यकालमे मैथिलीमे लगभग साठि गोट पोथीक प्रकाशन भेल । एहिमे वर्णरत्नाकर, मिथिलाभाषा रामायण, रमेश्वरचरित मैथिली रामायण सन गौरव ग्रन्थ पुनःप्रकाशन योजनाक अन्तर्गत प्रकाशित भऽ कऽ एक बेर पुनः सर्वजन सुलभ भऽ गेल तँ विद्यापति गीत संचय, कीर्त्तिपताका ओ अन्यान्य महत्त्वपूर्ण पोथी सब प्रकाशित भेल । मैथिलीमे अनुवादक कार्य खूब प्रगति कयलक । बहुतो वृहदाकार विशिष्ट ग्रन्थक मैथिली अनुवादक पथ प्रशस्त भेल । अपना समयमे ई 'मैथिली कथाक विकास, मैथिली पत्र-पत्रिका, मैथिली नाटकक विकास ओ मैथिली लोकसाहित्य' विषयक चारि गोट राष्ट्रिय संगोष्ठी ओ मैथिली कथाक अंग्रेजी अनुवादक कार्यशालाक सफलतापूर्वक आयोजन करौलनि जकर ज्वलन्त प्रमाण अछि एतद् विषयक प्रकाशित पाँच गोट ग्रन्थ । हिनक कार्य कालमे मैथिलीक तीन गोट विशिष्टतम साहित्यकार पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', डा. जयकान्तमिश्र ओ पं. गोविन्दझापर केन्द्रित 'मीट द' ऑथर' कार्यक्रम आयोजित भेल । संगहि एकटा जे महत्तम उपलब्धि मैथिलीकेँ भेटलैक ओ थिक मैथिलीक आद्य इतिहासकार डा.जयकान्तमिश्रकेँ अकादेमी द्वारा मध्यकालीन साहित्यक क्षेत्रमे काज कयनिहार विद्वानकेँ देल जायवला विशिष्ट 'भाषा सम्मान'क प्राप्ति । ई अपन कार्यकालमे प्रयत्न कऽ साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित मैथिली ग्रन्थक पहिल बेर स्वतन्त्र पुस्तक (विवरणी) सूची प्रकाशित करबौलनि ।

उपर्युक्त संस्था सबसँ इतरो अनेकानेक संस्था सबसँ हिनक सम्बद्धता रहलनि अछि । 1955सँ 58 धरि ई सी.एम. कॉलेजक मैथिली साहित्य परिषदक संयुक्त सचिव रहलाह । 1960-61मे पटना कॉलेज मैथिली साहित्य परिषदक महासचिव छलाह । 1977सँ 80 धरि ई ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक सिनेटक सदस्य रहलाह । मैथिली साहित्य संस्थान, पटनासँ हिनक प्रगाढ़ सम्बद्धता रहलनि । संस्थानक मुखपत्र 'मिथिला भारती'क सम्पादक मंडलक प्रथम सदस्यक रूपमे हिनक नाम पत्रिकामे अंकित कयल जाइत रहलनि । ऋचालोक, दरभंगाक ई उपाध्यक्ष छथि । विद्यापति सेवा संस्थानक स्थापना ओ संचालनमे निरन्तर योगदान दैत रहलाह अछि । संस्थान हिनका आजीवन सदस्यता प्रदान कयने छनि । वैदेही समिति, मैथिल महासभा, संस्कार भारती आदि कतोक संस्थाक संग हिनक सम्बद्धता रहलनि अछि ।

मैथिली मनीषाक संग्राहक

मैथिलीमे एकटा कहबी अछि– कागत, कपड़ा ओ कुलकेँ जेहन सुरक्षित राखी तेहन नीक । डा. रामदेवझाक सम्बन्धमे उक्त कहबी सद्य: चरितार्थ होइत छनि । 'कागत'केँ कोना ऊपर कयल जाय आ ओकरा कोना सुरक्षित राखल जाय ताहि दृष्टिसँ ई मैथिली संसारमे प्राय: एकमात्र छथि । मैथिलीक कोनो दुर्लभ पत्रिका, कोनो प्राचीन पोथीक प्रयोजन हो तँ हिनका घरक आलमारी वा ताखापर जुगता कऽ राखल भेटि जायत । मैथिलीसँ सम्बद्ध कोनो सरकारी कागत, मैथिलीमे छपल परचा-पोस्टर, मैथिलीसँ सम्बद्ध समाचार सभक कटिंग, पुरानसँ पुरान चिट्ठी-पत्री, आमन्त्रणपत्र ओ कार्ड पर्यन्तकेँ ई सुरक्षित रखैत अयलाह अछि ।

मैथिलीसँ सम्बद्ध वस्तुक अन्वेषण ओ संग्रहक ई प्रवृत्ति हिनका छात्रहि जीवनसँ रहलनि अछि । पहिने छायाप्रति करबाक सुविधा नहि छलैक तेँ अध्ययनक क्रममे मैथिलीसँ सम्बद्ध जे कोनो सूचना भेटैत रहलनि तकरा टिपने चल जाथि । विभिन्न ठामसँ चन्दाझाक पोथाक अन्वेषण कऽ ओकर प्रतिलिपि हिनका द्वारा कयल छनि । सम्पूर्ण साहेबरामदास गीतावलीकेँ ई हाथसँ उतारि कऽ रखने छथि । एमहर आबि कऽ जखन जेरॉक्सक तकनीक विकसित भेलैक तकर बादसँ दुर्लभ सामग्री सभकेँ परिश्रमपूर्वक ताकि-ताकि ओकर छायाप्रति कराय ओकरा अपन निजी पुस्तकालयमे सुरक्षित रखैत छथि । नेपालीय मैथिली साहित्यक बहुतो विशिष्ट कृतिक व्यय साध्य प्रतिलिपि ओ माइक्रोफिल्मकेँ ई सुरक्षित रखने छथि । हिनक संग्रहमे मैथिली ओ संस्कृतक बहुतो प्राचीन पांडुलिपि सुरक्षित राखल अछि । मैथिलीसँ इतरहु अंग्रेजी हिन्दी, बंगला, असमी आदि भाषाक कोनो पोथी वा पत्रिकामे जँ मिथिला-मैथिलीसँ सम्बद्ध कोनो विचार भेल छैक आ तकर सूचना हिनका भेटैत छनि तँ ई ओकरा कीनि कऽ मङबा लैत छथि । हिनक पुस्तकालय जिज्ञासु ओ गवेषक लोकनिक हेतु सतत फूजल रहलनि अछि । तमिलनाडुसँ आयल विद्वान डा. एस. भूपति, कनाडासँ आयलि रिसर्चर आयलीस डेविस, एलिजावेथ स्मिथ, मिरियम वीबर, मैथिलीक विद्वान पं. गोविन्दझा, अनुसन्धाता मेघन प्रसाद सहित कतोक गोटा हिनक पुस्तकालयक उपयोग करैत रहलथिन अछि तकर लेखा-जोखा देब कठिन अछि ।

हिनका द्वारा मैथिली मनीषाक संग्रहक जे ऐतिहासिक उपयोग भेल ओ थिक मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक लेल चलल प्रयासक क्रममे तैयार कयल गेल वृहदाकार मेमोरेंडम । 2001मे अष्टम अनुसूचीक हेतु नव ढंगसँ अभियान प्रारम्भ कयल गेल । मैथिलीक प्रश्न सोझे तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी ओ उपप्रधानमन्त्री लालकृष्ण आडवाणीक समक्ष उपस्थित कयल गेल । मैथिली भाषाक प्राचीनता, एकर अपन स्वतन्त्र लिपि, एकर क्षेत्र, एहि भाषाभाषीक संख्या, एकर साहित्यक प्राचीनता, एहि

भाषाक प्रचलन, एहि भाषाकेँ समय-मयपर भेटल सरकारी मान्यता आदि प्रश्नक समाधानमे आवश्यक समस्त दस्तावेज अपन निजी संग्रहमेसँ निकालि कऽ डा. रामदेवझा जे मेमोरेंडम तैयार कयलनि तकरा अद्वितीय कहल जयबाक चाही । एहि मेमोरेंडमक कारणेँ मैथिलीक पक्ष ततेक प्रबल भऽ गेलैक जे सरकारकेँ संविधान संशोधन कऽ कऽ 23 दिसम्बर 2003केँ अन्य भाषाक संग मैथिलीकेँ संवैधानिक मान्यता देबऽ पड़लैक ।

विभागीय पुस्तकालयक श्रीवृद्धिकर्त्ता

डा. रामदेवझा अपन निजी पुस्तकालय जकाँ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक पुस्तकालयकेँ सेहो तद्वते समृद्ध करबाक प्रयास करैत रहलाह । 1963मे सी.एम. कॉलेजमे मैथिली विभागमे, पश्चात् कालेजसँ फराक भेलापर स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे 1996मे सेवानिवृत्ति धरि विभागीय पुस्तकालयकेँ मैथिलीक कैम्ब्रिज बनयबाक अभियानमे लागल रहलाह । मुदा दुर्भाग्यवश हिनका ओतऽसँ हटलाक बाद मैथिली विभाग जेना श्रीहीन भऽ गेल, अध्ययन-अध्यापनक संस्कृतिये जेना समाप्त भऽ गेल । एहनामे पुस्तकालयक सारस्वत निधिक प्रयोजनीयते नहि रहि गेल अछि ।

पूर्वाञ्चलीय भाषा ओ साहित्यक विशेषज्ञ

मैथिली भारतक पूर्वाञ्चलीय भाषा परिवारक श्रेष्ठ सदस्या थिक । मैथिली, बंगला, उड़िया, असमी ओ नेपालीमे भाषिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक तीनू स्तरपर बहुत किछु समानता छैक । स्वभावत: मैथिलीक विद्वान ओ मध्यकालीन साहित्यक विशेषज्ञ होयबाक कारणे डा. रामदेवझाकेँ पूर्वाञ्चलीय भाषा ओ संस्कृतिक विशेषज्ञता अर्जित भऽ गेल छनि । तिरहुताक ज्ञान रहबाक कारणे बंगला, उड़िया ओ असमी साहित्यकेँ ई सहजतापूर्वक पढ़ैत रहलाह अछि। स्वाध्यायक बलेँ एहि तीनू भाषापर हिनका अधिकार प्राप्त छनि । नेपालक प्राचीन लिपि नेवारीक तँ हिनका विशेषज्ञे मानल जाइत छनि । नेवारीमे लिखित अनेकश: मध्यकालीन मैथिली कृतिक ई देवनागरी लिप्यन्तरण कयने छथि । शंकरदेवक रामविजय अंकिया नाट ओ वरगीतकेँ असमीसँ देवनागरीमे लिप्यन्तरित कऽ ई सर्वप्रथम प्रकाशित करौलनि। हिनक अनुसन्धान कार्यसँ पूर्वाञ्चलक अन्यहु भाषा लाभान्वित भेल अछि । नेपालमे अनुसन्धानक क्रममे हिनका बंगलाक चण्डीदासक एकटा अभिनव पदावली प्राप्त भेलनि जकरा ई सम्पादित कऽ **मिथिला प्रकाश** (कोलकाता) मे प्रकाशित करौलनि जे बंगाली विद्वान लोकनिक ध्यान आकृष्ट कयलक । एहिना ई अपन अनुसन्धानसँ साबित कऽ देलनि जे **हरिचरितम्** नामक संस्कृत कृतिक रचयिता मैथिल नहि अपितु बंगाली चतुर्भुज छथि । हिनक इहो खोज बंगला साहित्यमे चर्चाक विषय बनल । कैम्ब्रिजसँ मङा कऽ अत्यन्त परिश्रमपूर्वक

सम्पादित **हरगौरी विवाह नाटक** तँ समस्त पूर्वाञ्चलमे चर्चित भेल। प्रख्यात भाषाविद् डा. सुनीतिकुमारचटर्जी अपन 'द ओरिजिन एण्ड द डेवलपमेंट ऑफ बंगाली लैंग्वेज'क नव्य संस्करणमे डा. रामदेवझा द्वारा सम्पादित-प्रकाशित हरगौरी विवाहकेँ मध्यकालीन महत्त्वपूर्ण भाषिक अभिलेखक रूपमे चर्चा कयने छथि। पूर्वाञ्चलीय भाषा सभपर हिनक समाने अधिकार रहबाक कारणे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे कतोक बेर हिनका बंगला ओ नेपालीक उत्तरपुस्तिकाक परीक्षक बनाओल जाइत रहलनि। पूर्वाञ्चलीय भाषाक बीच व्याप्त सांस्कृतिक समरूपताकेँ गम्भीरतापूर्वक विश्लेषित करबाक उद्देश्यसँ ई साहित्य अकादेमीक अपन सदस्यता काल (1998-2002)मे पूर्वाञ्चलीय भाषा समूहक समितिक संयोजकक रूपमे प्रयत्नपूर्वक कोलकातामे 'इम्प्रिंट ऑफ मैथिली ऑन द परफार्मिंग आर्ट्स ऑफ ईस्टर्न इंडियन लैंग्वेज' विषयक पूर्व क्षेत्रीय संगोष्ठी आयोजित करबौलनि। एहि संगोष्ठीमे मैथिली सहित बंगला, असमी, उड़िया, नेपाली ओ मणिपुरीक प्रख्यात विद्वान लोकनि भाग लेने रहथि।

मैथिलीक प्रहरी

1947मे चन्द्रनाथमिश्र'अमर'क आगमनक संग एम.एल. एकेडमी मैथिलीक केन्द्र बनि गेल छल। अमरजीक मातृभाषा प्रेमक 'ट्रेनिंग कैम्प'सँ प्रशिक्षित भऽ निकलल रंगरूट सब समस्त देशमे मैथिलीक ध्वज फहरौलक। रामदेवझा सेहो एही कैम्पसँ जुड़लाह। हिनकापर तेहन मातृभाषा-प्रेमक गाढ़ रंग पड़ि गेलनि जे हिन्दी-मैथिलीक प्रश्नपर ककरहु संग अड़ि जयबामे ई संकोच नहि कयलनि।

मैथिलीक प्रति अपप्रचार कयनिहार हिन्दीक विद्वान लोकनिकेँ ठामहि मुँहतोड़-उत्तर देबाक जेना ई संकल्प लऽ लेलनि। जाहि समयमे ई दशम-एगारहम वर्गक छात्र रहथि ताहि समयमे अर्थात् 1954मे पटनाक **पाटल** पत्रिकामे हिन्दीक विद्वान डा. रामविलासशर्मा एकटा लेख लिखि मैथिलीक विरोधमे अनर्गल प्रलाप कयलनि। हुनका द्वारा मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहल जयबाक विरोधमे मिथिलामे तीव्र प्रतिक्रिया उभरल। हिन्दीक लेखक नागार्जुन (यात्री) पर्यन्तकेँ डा. शर्माक ओ प्रलाप खलबला देलकनि। ओ 'हिन्दी और मैथिली' शीर्षकसँ एकटा लेख लिखि डा. शर्माक विचारक प्रतिवाद कयलथिन। अमरजी सेहो डा. शर्माक जबाबमे एकटा लेख 'भ्रम इसे ही कहते हैं' तथा 'भ्रम एकरे कहल जाइछ' लिखलनि। स्कूलक छात्र रामदेवझा अपन मैथिलीप्रेमी मित्र लोकनिक संग एकटा योजना बनौलनि तदनुसार मैथिलीकेँ एकटा सर्वसामर्थ्यपूर्ण भाषा होयबाक सम्बन्धमे प्रमाण उपस्थित करैत ओहिपर अपन अभिमत देबाक हेतु हिन्दीयहिक तत्कालीन मुखर-प्रखर विद्वान ओ साहित्यकार लोकनिकेँ लिखलथिन। एकर पाछाँ उद्देश्य ई छल जे हिन्दीक विद्वान लोकनिसँ प्राप्त होअऽवला अभिमतक आधारपर ई साबित होयत जे हिन्दीक कतेक विद्वान डा. शर्माक विचारक विरोधी किंवा

पक्षधर छथिन । रामदेवझाक ई पत्र अभियान आशातीत रूपसँ सफल रहलनि । डा. रामधारीसिंह दिनकर, आचार्य हजारीप्रसादद्विवेदी, महादेवीवर्मा, शिवदानसिंहचौहान प्रभृति कतोक विद्वान मैथिलीकेँ एकटा स्वतन्त्र भाषा होयबाक पक्षमे अपन अभिमत पठौलथिन, जकरा सबकेँ पुनः डा. शर्माकेँ पठा देल गेलनि ।

किशोरीदास वाजपेयीक पत्र

रामदेवझाक द्वारा किशोरीदास वाजपेयीकेँ सेहो पत्र पठौल गेल छलनि । मुदा हुनक अभिमत हिनका समयपर नहि प्राप्त भऽ सकलनि । पुनः हुनका स्मारपत्र देल गेलनि तँ एक सालक बाद हुनक एकटा पोस्टकार्ड 'पं. रामदेवझा'क पतासँ पहुँचल । हिन्दीक अन्य विद्वान लोकनिक मूल पत्र तँ डा. शर्माकेँ पूर्वहि पठा देल गेलनि । एहि अभियानक एकमात्र किशोरीदास वाजपेयीक ओ पत्र एखनहुँ धरि हिनक संग्रहमे सुरक्षित राखल छनि, जे निम्न प्रकारक अछि–

कनखल– 02.07.56

प्रिय बन्धु,

पत्र मिला । पहले पत्र का उत्तर दे दिया था । पता नहीं क्यों नहीं मिला । मैथिली को मैं एक स्वतन्त्र भाषा मानता हूँ, जिसे कई कारणों से हिन्दी की एक बोली समझा जाता है । 'बोली' और 'भाषा' में अन्तर है । किसी लेख में स्पष्ट करूंगा । ऐसी बातें यों व्यक्तिगत पत्र व्यवहार में नहीं लिखी जाती ।

–कि.दा.वाजपेयी

हिन्दीभक्त लोकनिक संग शास्त्रार्थ

मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहनिहार विद्वानकेँ पहिनहुँ जबाब देल जाइत छलनि मुदा ओ जबाब भावनात्मक बेसी रहैत छल । प्रयोजन छल जे एहि तरहक अपप्रचारी लोकनिकेँ वैज्ञानिक ओ तार्किक पद्धतिसँ निरुत्तर कयल जाय । ताहि समयमे विद्यापति स्मृति पर्वक अवसरपर हिन्दिअहुक विद्वान ओ कवि लोकनिकेँ बहुधा आमन्त्रित कयल जाइत छलनि, जाहिमेसँ गोटेक कुच्चर स्वभावक हिन्दी शिक्षक साहित्यकार अवसर पबितहिँ मंचेपर मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहि मैथिलीभाषी लोकनिक कुचेष्टा सुरू कऽ दैत रहथि । अध्यापक बनलाक बाद प्रो. रामदेवझा एहि तरहक मैथिली विरोधी विद्वानकेँ हतोत्साहित करबाक एकोटा अवसर छोड़लनि नहि ।

1965मे सिंहवाड़ामे विद्यापति पर्व भेल छल । अध्यक्ष रहथि प. जानकीवल्लभशास्त्री, उद्घाटक छलाह प्रो. रमानाथझा, मुख्य अतिथि रहथि बिहार विश्वविद्यालयक एकटा हिन्दी प्राध्यापक प्रो. वचनदेवशर्मा 'प्रलयंकर' ओ मुख्य वक्ता

रहथि प्रो. रामदेवझा । प्रो. रमानाथझा अपन उद्घाटन भाषणमे मैथिलीक पछुअयबाक कारणपर प्रकाश दैत तिरहुता लिपिकेँ फेरसँ जिअयबाक आवश्यकतापर बल देलनि । प्रो. वचनदेवशर्मा 'प्रलयंकर'केँ जखने बजबाक अवसर भेटलनि कि ओ अपन भाषणक प्रारम्भे 'मैथिली हिन्दीक बोली थिक' ताहिसँ कयलनि । मैथिली ओ तिरहुताकेँ फेरसँ ठाढ़ करबाक प्रयासक ओ हँसी उड़ौलनि आ विद्यापतिकेँ हिन्दीक कवि रूपमे भेटि रहल प्रतिष्ठाक स्थानपर हुनका मैथिलीक तथाकथित संकीर्ण परिधिमे बान्हल जयबाक प्रवृत्तिक सोझे-सोझे निन्दा कऽ देलनि ।

प्रो. शर्माक बाद मुख्य वक्ताक रूपमे जखन प्रो.रामदेवझाकेँ बजबाक अवसर भेटलनि तँ ओ हिन्दी शिक्षकक ज्ञानपर प्रश्नचिह्न ठाढ़ करैत कहलथिन- लगैत अछि जे हिन्दीक शिक्षक आइ धरि छात्रकेँ भाषा विज्ञानक अशुद्धे पाठ पढ़बैत रहलथिन अछि । विद्यापति मैथिलीक कवि छथि आ मैथिलीक कवि रूपमे हुनका अखिल भारतीय स्तरपर जानल जाइनि, नहि की हिन्दीक कवि रूपमे ।' प्रो. झा सवा घंटा धरि बजैत रहलाह । जनसमुदाय स्तब्ध भेल हिनक भाषण सुनैत रहल । प्रो. शर्मा मुँहचुरू बनल बैसल रहलाह । बादमे जानकीबल्लभशास्त्री सेहो अपन अध्यक्षीय भाषणमे मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ताक समर्थन करैत हिन्दीक दिससँ एहि तरहक विवाद उठौल जयबाक प्रवृत्तिक प्रति अपन अरुचि व्यक्त कयलनि ।

हमरो मातृभाषा मैथिलीये छै

एकटा दोसर घटना अछि 1967 क । बेगूसरायमे विद्यापति पर्वक उद्घाटक छलाह जी.डी.कॉलेज, बेगूसरायक हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. रामेश्वरमिश्र । ओ अपन भाषण हिन्दीमे दैत कहलथिन जे बेगूसरायक भाषा मैथिली नहि छैक, हुनका मैथिली नहि अबैत छनि, तेँ ओ हिन्दीमे बजलाह । हुनक भाषणक बाद मुख्य अतिथिक रूपमे प्रो. रामदेवझाकेँ बजबाक अवसर भेटलनि तँ ओ प्रो. मिश्रकेँ इंगित करैत कहलथिन जे ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक अइसन, जइसन, तइसन, विद्यापति पदावलीक हमे आ तोँहे, उमापतिक गीतक 'हुनि'सन शब्दक प्रयोग एखनहुँ बेगूसरायमे धुरझाड़ होइत अछि । आब प्रो. मिश्र कहथु जे ई सब कवि किनकर छथिन ओ मैथिली किनका लोकनिक भाषा छनि ।'

प्रो. रामदेवझाक तर्कपूर्ण भाषण समाप्तिक बाद प्रो. मिश्र आह्लादित भेल उठि माइकपर आबि कहलथिन- प्रो रामदेवबाबू जे तर्क सब देलका से अकाट्य छै, हमे आर मानी लेलियै जे हमरो मातृभाषा मैथिलीये छै ।'

मैथिलीक झंडा इम्फालमे

15-17 जून 1990केँ इम्फालमे साहित्य अकादेमी द्वारा 'फोक सौंग्स इन ईस्टर्न इंडियन लैंग्वेजेज' विषयपर क्षेत्रीय संगोष्ठी आयोजित छल । मैथिलीमे आचार्य सुरेन्द्रझा

'सुमन', प्रो.रामदेवझा, प्रो.प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन' आमन्त्रित छलाह । प्रो. मौनक जखन आलेख वाचन समाप्त भेलनि तँ मणिपुर विश्वविद्यालयक उत्तरप्रदेश निवासी एकटा हिन्दी-प्राध्यापक प्रश्नोत्तर कालमे एकटा मणिपुरी श्रोताकेँ ठाढ़ कऽ प्रश्न करबौलथिन- मैथिली ओ भोजपुरीकेँ हिन्दीक बोली कहल जाइछ ताहिपर अपनेक की विचार ?' प्रो. मौन सोझे कहलथिन जे- हम एकर कोनो उत्तर नहि देब' आ ओ अपन आसनपर जा कऽ चुपचाप बैसि रहलाह । मणिपुरी आर्येतर परिवारक भाषा थिक । अत: मणिपुरीक बेसी विद्वानकेँ मैथिली स्वतन्त्र भाषा थीक आ कि हिन्दीक बोली, एहि विवादक अभिज्ञान नहि । तेँ प्रश्नक मर्मोकेँ ओ लोकनि नहि बूझि सकल रहथि । अध्यक्षता कऽ रहल विद्वान ओ अन्य प्रतिभागी लोकनि मंचपर स्थित संयोजक आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क मुँह दिस ताकऽ लगलथिन । सुमनजीक ललाटपर पसेना बुनबुना गेलनि । मैथिलीक प्रतिष्ठाक प्रश्न ठाढ़ भऽ गेल छल । तखन मंचपर स्थित प्रो. रामदेवझा कहलथिन जे एकर उत्तर हम देब मुदा एखन नहि, अपना समयमे ।

जखन हिनक सत्र सुरू भेलनि तँ अपन आलेख पाठक बाद सर्वप्रथम तँ डा. रामदेवझा ओहि प्रश्नहिकेँ संगोष्ठीक निर्धारित विषयसँ असम्बद्ध, तेँ अप्रासंगिक सिद्ध कयलनि तथापि ओकर समीचीन उत्तर दैत मैथिलीक उत्पत्ति, शौरसेनी ओ मागधी परिवारक विभिन्न भाषाक बीचक दूरी ओ निकटता आदि विविध पक्षपर एक घंटा धरि अंग्रेजीमे भाषण दैत रहलाह । हिनक उत्तरक अनुकूल प्रभाव श्रोतापर पड़लैक । अकादेमीक क्षेत्रीय सचिव प्रो. निर्मलकान्ति भट्टाचार्य हिनक उत्तरसँ प्रभावित भेल आभार व्यक्त करैत कहलथिन- झा साहेब आइ अहाँ पूर्वाञ्चलीय भाषा परिवारक लाज राखि लेलहुँ ।' पछाति ओ हिन्दीक प्राध्यापक सेहो आबि कऽ हिनकासँ भेट कयलथिन आ गछलथिन जे मैथिलीकेँ लऽ कऽ हुनक मोनमे बनल भ्रम दूर भऽ गेलनि ।'

इम्फालसँ दरभंगा घुरलाक बाद आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' एकदिन भरल सभामे कहलथिन जे– हमरा नहि बूझल छल जे रामदेवबाबू एहन नीक, एहन धाराप्रवाह अंग्रेजी बाजि सकैत छथि । इम्फालमे ई मैथिलीक झंडा गाड़ि साबित कऽ देलनि जे मैथिली मौन लोकक नहि मुखर लोकक भाषा थीक ।'

वस्तुत: डा. रामदेवझाकेँ एहि तरहक अवसरक कतोक बेर सामना करऽ पड़लनि । प्रत्येक बेर ई मैथिलीक प्रहरी बनल एहि भाषाक निन्दक ओ विरोधी लोकनिकेँ शास्त्रार्थमे पराजित कऽ मैथिलीक स्वाभिमानकेँ झुकऽ नहि देलनि ।

मैथिली आन्दोलनक पथ प्रदर्शन

डा. रामदेवझा मैथिलीक समुचित अधिकारलेल भेल आन्दोलन सबमे अपन सक्रिय सहभागिता दैत रहलाह अछि । यावत् स्वयं छात्र रहथि तावत मैथिलीक प्रश्नकेँ

लऽ कऽ धरना-प्रदर्शन, देवाल-लेखन आदि सन कार्य करबामे सदिखन आगाँ रहलाह। अध्यापन वृत्तिमे अयलाक बाद जहिना-जहिना हिनक शिष्य ओ शिष्योपशिष्यक विस्तार होइत चल गेलनि, तहिना-तहिना आन्दोलनक मशाल नव पीढ़ी सम्हारऽ लागल। तखन ई अभिभावक किंवा पथ-प्रदर्शकक भूमिकामे आबि गेलाह। मैथिली आन्दोलनक एहि पचास वर्षमे ई कतेक तरहक संगठन करैत रहलाह, कतेक आन्दोलनक रणनीति बनबैत रहलाह, कतेक बेर कतेक तरहक ज्ञापन ओ स्मारपत्र तैयार कयलनि, कतेक परचा-पोस्टर लिखलनि, कतेक नारा गढ़लनि तकर ठेकान नहि अछि।

पोस्टकार्ड अभियान

1963-64मे साहित्य अकादेमीमे मैथिलीकेँ स्थान दिअयबाक हेतु तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरूक नामे पोस्टकार्ड अभियान प्रारम्भ कयल गेल। प्रो. रामदेवझा ओहि समयमे गामे-गाम घूमि प्रयत्नपूर्वक लोक सबसँ हजारोक संख्यामे पोस्टकार्ड लिखबाय पठौलथिन। ई अभियान आशातीत ढंगसँ सफल रहल। डा. जयकान्तमिश्रक कथनानुसार प्रधानमंत्रीक कार्यालयमे पोस्टकार्ड सबकेँ पढ़बाक हेतु दुइटा मैथिलीभाषी कर्मचारीक बहाली भेल आ अन्ततः अकादेमीमे मैथिलीकेँ मान्यता भेटलैक।

नारा लेखनसँ मेमोरेंडमक तैयारी धरि

1977मे जखन बिहारमे जनतापार्टीक सरकार बनल तँ एहि सरकार द्वारा मैथिलीपर अभिघात करैत मैट्रिक्यूलेशनक मातृभाषापत्रसँ एकरा हटा देल गेलैक। स्वाभाविक रूपसँ एकर विरोधमे चतुर्दिक स्वर उभरल। सरकारक एहि अविवेकपूर्ण निर्णयक विरोधमे आन्दोलनक मेघ उमड़ऽ-घुमड़ऽ लागल। ओहि समयमे हिनक आवासपर युवा आन्दोलनी सभक जुटान भेल करय। आन्दोलनक क्रममे देवाल लेखनक हेतु नारा तैयार करबाक दायित्व हिनका भेटलनि। ओहि निमित्त ई जे नारा सब बनौलनि तकर किछु बानगी देखल जा सकैत अछि -

'मैथिल मुँहक बोल छिनै छेँ रे सरकार कसाइ रे :
मायक चीर हरण होइत छौ सूतल नहि रह भाइ रे'
'मातृभाषा पत्रमे मैथिली पढ़ाइ हो : ताहि हेतु पटनासँ दिल्ली धरि चढ़ाइ हो'
'मैथिलीक ई नारा : बाजल युद्ध नगाड़ा'
'जन्मसिद्ध अधिकार हमर छी : मातृभाषा मैथिली'
'तीन कोटि मिथिलाकेर वासी : जागू-जागू-जागू'
'तीन कोटि जनताकेर भाषा : मैथिली थिक मातृभाषा'

हिनका द्वारा तैयार कयल गेल ई नारा सब बेस चर्चित भेल, विभिन्न ठाम देवालपर लिखल गेल। मैथिलीक कवि ओ प्राध्यापक, हिनक शिष्य प्रो.शिवाकान्तपाठक आन्दोलनक अगुआ रहथि। डा. रामदेवझा ई सबटा नारा हुनका देलथिन जे हुनका पसिन्न पड़लनि। एकटा नाराक आधा भाग लिखल छलनि– मिथिलापर जे करय प्रहार' एकर तुकबन्दी नहि भेटि रहल छलनि। डा. रामदेवझा शिवाकान्तपाठक लग ई अपूर्ण नारा रखलथिन की ओ तपाकसँ एकर तुक मिलबैत कहलथिन- ताहि व्यक्तिकेँ जूता मार।' डा. रामदेवझा हँसि देलथिन आ कहलथिन- एहि तुकबन्दीसँ गरिमा घटैत अछि।' शिवाकान्त पाठक कहलथिन– आब गरिमा त्यागबेमे मैथिलीक कल्याण छैक।' डा. रामदेवझा एहिसँ सहमत नहि भेलथिन। पुनः ओ अपूर्ण नाराकेँ निम्न तरहेँ परिवर्त्तित कयलथिन- मैथिलीक रोकय अधिकार : से तानाशाही सरकार।'

1982मे जखन बिहारक तत्कालीन कांग्रेसी सरकार मैथिलीक अवहेलना करैत उर्दूकेँ प्रदेशक द्वितीय राजभाषा बना देलक तकर विरोधमे चलल आन्दोलनक ई पथप्रदर्शन कयलनि। एहू आन्दोलनमे हिनका द्वारा तैयार नारा सब छल– जे क्यो छथि मिथिलावासी : सब क्यो छथि मैथिलीभाषी, मिथिलाक भाषा की : शत-प्रतिशत मैथिली, मिथिलाक राजभाषा : मैथिली हो मैथिली आदि।

मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक हेतु चलि रहल प्रयासक क्रममे अगस्त 2003मे तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणीक दरभंगा आगमनक अवसरपर हुनक ध्यान आकृष्ट करयबाक हेतु ई एकटा नारा बनौलनि जकरा सभा स्थलसँ लऽ कऽ शहर भरिमे विभिन्न ठाम बैनरपर लिखि कऽ टाँगल गेल छल। ओ नारा अछि–

हमहूँ सब छी भारतवासी हमर अपन अछि वाणी।
मैथिलीक अधिकार दियाबथु लालकृष्ण अडवाणी ॥

मैथिलीक संवैधानिक मान्यतालेल हिनका जे कोनो मंच वा अवसर प्राप्त भेलनि तकर ई सदुपयोग करैत रहलाह। 2001 मे भाजपा नेता डा. सी.पी. ठाकुरक नेतृत्वमे जखन मैथिलीक संवैधानिक मान्यता हेतु प्रयत्न सुरू भेल ताहिमे हिनक योगदान अभूतपूर्व रहलनि। मैथिलीक समस्यासँ अनभिज्ञ डा. ठाकुरकेँ ई विस्तारसँ मैथिलीक केस हिस्ट्री बुझौलथिन, मैथिलीकेँ संविधानमे स्थान भेटला उत्तर मिथिलाकेँ भेटऽवला लाभ सभक चर्च कयलथिन। तखन डा. ठाकुर सन्तुष्ट होइत कहलथिन– मैथिली संविधानमे स्थान पयबाक सबटा योग्यता रखैत अछि, एकरा तँ बहुत पहिने स्थान भेटि जयबाक चाहैत छलैक। मुदा ठीक ढंगसँ एकर केओ पैरवीये नहि कयलकैक। जँ अहाँ लोकनि संग दी, हमरा मैथिलीसँ सम्बद्ध सब कागज-पत्र जुटा दी तँ हम मैथिलीक लड़ाइ लड़ब आ जितलाक बादे दरभंगा आयब।' एकर पश्चात् डा. ठाकुर दिल्लीसँ फोन द्वारा हिनकासँ मैथिलीक सम्बन्धमे जखन जे-जे कागज ओ प्रमाण सब मङथिन तकरा ई ताकि-ताकि

जुटौलनि आ तकर बाद ओ ऐतिहासिक मेमोरेंडम तैयार भऽ सकल । वस्तुतः एकटा आन्दोलनीक रूपमे हिनक ई योगदान मैथिली भाषा-साहित्यक इतिहासमे अविस्मरणीय रहत ।

पुरस्कार ओ सम्मान

डा. रामदेवझा अपन लेखनीक बलपर छात्रहि जीवनसँ अनेक सम्मान ओ पुरस्कार प्राप्त करैत रहलाह अछि। साहित्यक सर्वोच्च सम्मान साहित्य अकादेमी पुरस्कारक हिनका भेटल छनि । ई पुरस्कार हिनका 1991मे नाट्य संग्रह 'पसिझैत पाथर' पर प्रदान कयल गेलनि । अपन प्रयोगधर्मिता, शिल्प ओ प्रभान्वितिक कारणे एहि कृतिकेँ भारतीय साहित्यमे अनुपम योगदान मानैत अकादेमीक प्रशस्तिवाक्यमे कहल गेल अछि–

पसिझैत पाथर सातगोट नाटकक संकलन अछि, जाहिमेसँ छओटा एकांकी थिक । विविध ऐतिहासिक, पौराणिक वा समकालीन सामाजिक विषयपर आधारित एहि नाटकमे लेखकक उद्देश्य प्रायः शिक्षात्मक छनि । एहि विधाक उपयोग लेखक सामाजिक कुरीतिसँ लड़बाक हेतु कयलनि अछि । नाटककारक भाव-प्रयोजन ओ तकनीक आधुनिक छनि, संगहि भाषा सहज सोझ आ सम्प्रेषणीय । व्यापक विषय वस्तुक कुशल निर्वाह, समाज सुधारक प्रति अपन प्रतिबद्धता ओ अभिव्यक्तिक निपुणताक लेल ई कृति मैथिलीमे लिखित भारतीय साहित्यक हेतु विशिष्ट योगदान मानल गेल अछि ।

डा. रामदेवझा मैथिलीक निविष्ट अनुवादको रहल छथि । हिनका द्वारा राजेन्द्रसिंह 'बेदी'क उर्दू उपन्यास 'इक चादर मैली सी'क मैथिली अनुवाद **सगाइ** नामसँ कयल गेल अछि । पंजाबक जनजीवनपर उर्दूमे लिखित एहि उपन्यासकेँ ताहि कुशलताक संग मैथिलीमे अनूदित कयल गेल अछि जे पाठककेँ ई मौलिके उपन्यास होयबाक प्रतीति दैत अछि। अनुवादक एहि उत्कृष्टताक कारणे 1994मे साहित्य अकादेमी द्वारा हिनका अनुवाद पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि । एहि अनूदित पोथीक सम्बन्धमे अकादेमीक प्रशस्तिवाक्यमे कहल गेल अछि–

पुरस्कृत कृति सगाइ राजिन्दरसिंह बेदीक प्रतिष्ठित उर्दू उपन्यास 'इक चादर मैली सी'क मैथिली अनुवाद थिक । अनुवादक मूल कृतिक कलात्मक ऊष्माकेँ उल्लेखनीय सफलताक संग रूपान्तरित कयलनि अछि । मानवीय सम्बन्धक संवेदनशील चित्रण, लोकोक्तिक तीक्ष्ण ओ सटीक प्रयोग तथा अपन सशक्त पात्रांकनक लेल एहि कृतिकेँ मैथिली अनुवादमे भारतीय साहित्यकेँ एक उल्लेखनीय देन मानल गेल अछि ।

अकादेमी पुरस्कारसँ इतर विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थादि द्वारा हिनका विभिन्न सम्मानोपाधिसँ अलंकृत कयल जाइत रहलनि अछि । 2001 मे साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा हिनका एकटा विशेष समारोहमे 'महाकवि विद्यापति राष्ट्रिय शिखर

साहित्य सम्मान' प्रदान कयल गेलनि । विद्यापति समिति, समस्तीपुर 2003मे एवं विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा हिनका 2004मे 'मिथिला विभूति' सम्मानोपाधिसँ समलंकृत कयलकनि । साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली 6 मइ 2006 केँ हिनक सम्मानमे राष्ट्रिय स्तरक 'मीट द' ऑथर (रचनाकारसँ भेट) कार्यक्रम आयोजित कयलक । अन्तरराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन हिनका मिथिला-मैथिलीक विशिष्ट सेवाक उपलक्ष्यमे 2008मे 'मिथिला रत्न' सम्मानोपाधिसँ सम्मानित कयलकनि । साहित्य अकादेमी द्वारा 2009मे हिनका 'स्कालर्स एट रेजीडेंस' प्रदान कयल गेलनि । चेतना समिति, पटना द्वारा 2010 मे हिनका मिथिला विभूति सम्मान ओ ताम्रपत्र प्रदान कयल गेलनि । कवीश्वर चन्दा सेवा संस्थान, पिण्डारूच (दरभंगा) द्वारा हिनका 'कवीश्वर चन्दाझा सम्मान- 2011' प्रदान कयल गेलनि अछि ।

वस्तुत: डा. रामदेवझाक जे बहुआयामी सेवा ओ विराट उपलब्धि छनि से देखैत कोनो पुरस्कार किंवा सम्मान न्यूने बुझना जाइत अछि । हिनका सन विद्वान-साहित्यकारकेँ सम्मानित कऽ कोनो संस्था स्वयं गौरवान्वित होइत रहल अछि, हिनक आश्रय ग्रहण कऽ स्वयं ऊर्जान्वित होइत रहल अछि । हिनक वास्तविक पुरस्कार ओ सम्मान तँ थिकनि मैथिलीप्रेमी समुदाय, अपन शिष्योपशिष्यक विशाल समूह ओ पाठकवर्गक हृदयमे बनल असीम सम्मान, श्रद्धा, स्नेह ओ सद्भावना ।

प्रखर शिक्षाविद्

डा. रामदेवझा एकटा निविष्ट अध्यापक होयबाक संगहि एकटा प्रखर शिक्षाविद् सेहो छथि । स्वयं लोअर प्राइमरीसँ लऽ कऽ स्नातकोत्तर धरि जाहि नैरन्तर्यक संग ई शिक्षा ग्रहण कयलनि तकर सूक्ष्म अनुभवसँ हिनका ज्ञात छनि जे कोन वयक ओ कोन वर्गक छात्र हेतु कोन तरहक पाठ्य सामग्री प्रस्तुत कयल जाय । हिनक एहि अनुभव ओ दृष्टिबोधक लाभ प्राथमिकसँ लऽ कऽ उच्च शिक्षा धरिक पाठ्यक्रम निर्धारण ओ पाठ्य पुस्तक सम्पादनक क्रममे लेल जाइत रहलनि अछि । उच्च शिक्षाक मैथिली पाठ्यक्रमक निर्माणक क्रममे अपन विश्वविद्यालयमे तँ सहजहि ई अपन योगदान करैत रहलाह, अन्यहु विश्वविद्यालयमे हिनक अभिमत लेल जाइत रहल आ ओ पाठ्यक्रम आदर्श ओ मानक मानल जाइत रहल ।

बालवर्गक पोथीक लेखन-सम्पादन

उच्च शिक्षासँ बेसी कठिन अछि प्राथमिक ओ माध्यमिक शिक्षाक हेतु पाठ्य सामग्रीक चयन ओ सम्पादन करब । जनिकालेल ई कार्य अर्थोपार्जन ओ पोथीपर अपन नाम छपायब उद्देश्य मात्र धरि सीमित छनि तनिकालेल ई कोनो कठिन काज नहि । मुदा बाल ओ किशोर मनोविज्ञानक अनुरूप पाठ्य-सामग्रीक चयन, नवीनतम अवधारणा ओ

प्रयोजनक समायोजन, क्षेत्रीयता ओ राष्ट्रियताक बीच सन्तुलन तथा स्वस्थ ओ ज्ञानवर्द्धक विचारक प्रतिपादनक संगहि पाठ्यपुस्तकक अन्यान्य अवयवकेँ वैज्ञानिक ढंगसँ प्रस्तुत करब अवश्ये एकटा दुरूह ओ चुनौतीपूर्ण दायित्व थिक । डा. रामदेवझा अनेक बेर एहि दायित्वक निर्वहन कऽ कुशल शिक्षाविद् होयबाक परिचय दऽ चुकल छथि ।

1984मे बिहार टेक्स्ट बुक कमिटीक आग्रहपर ई छठम वर्गक मैथिली पाठ्य पुस्तक 'मैथिली भाषा सरिता' (भाग-4)क सम्पादन कयलनि । एहि पोथीमे जाहि परिश्रमक संग ई सामग्रीक चयन कयलनि ताहि रूपमे ई मैथिलीक आदर्श पाठ्यपुस्तक सिद्ध भेल । 1988 मे बी.टी.सीक लेल ई जीव विज्ञान (प्रथम भाग) ओ पृथ्वी परिचय (भाग चारि)क अनुवाद मैथिलीमे प्रस्तुत कयलनि । हिन्दीसँ अनूदित एहि दुहू पोथीमे विषयसँ सम्बद्ध प्रचलित हिन्दी तकनीकी शब्द सभक मैथिली पर्यायक अन्वेषण ओ नवीन शब्द सभक निर्माण कऽ कऽ जाहि रूपमे ई पोथी प्रस्तुत कयलनि से निश्चये मैथिलीमे साहित्येतर विषयक लेखन लेल एकटा गाइड लाइनक काज कऽ सकैत अछि ।

1994मे बिहार टेक्स्ट बुक कमिटी द्वारा हिनका पहिल आ दोसर वर्गक हेतु मैथिली पाठ्य पुस्तकक लेखन ओ तिसरा वर्गक पोथीक सम्पादनक दायित्व देल गेलनि । मिथिलाक शैक्षणिक परिपाटी ओ आधुनिक शिक्षण प्रणाली दुहूकेँ समन्वित करैत लगभग छओ मासक अथक परिश्रमक बाद ई तीनू पोथी तैयार कयलनि । पहिल ओ दोसर वर्गक पोथी हेतु कोमलमति बच्चाक ग्रहणशक्तिक अनुरूप छोट-छोट कविता, रोचक बाल कथा, पर्यावरण संरक्षण, ग्राम्य परिवेशक चित्रण, मिथिलाक संस्कृतिक परिज्ञान, विज्ञानक अवबोध, पत्रात्मक लेखन आदिसँ सम्बद्ध छोट-छोट रचना सब देलथिन । तेसर वर्गक पोथीमे ताकि-ताकि कऽ विभिन्न लेखकक बालोपयोगी रचनाकेँ माँजि-तरासि संकलित कयलनि । मैथिली भारती भाग 1, 2 एवं 3 शीर्षकसँ तैयार तीनू पोथीक पाण्डुलिपि प्रकाशनार्थ टेक्स्टबुक कमिटीमे जमा कयलनि । मुदा एक तँ तत्कालीन बिहार सरकारक मैथिलीक प्रति वक्रदृष्टि आ दोसर मैथिलीक बीच व्याप्त अन्तर्विरोध, अनकर कयल-धयलक श्रेय स्वयं लऽ लेबाक किछु गोटाक दुष्प्रवृत्तिक झमेलमे पड़ि कऽ ओ तीनू बाल पोथी प्रेससँ छपि कऽ बाहर नहि निकलि सकल । एहि घटनाकेँ हिनक परिश्रमक अपव्यय ओ 'साहित्य-क्षति' कहल जा सकैत अछि । मुदा जँ ओ तीनू पोथी प्रकाशित भऽ जैतय तँ हिनक शिक्षा-दृष्टिक परिचायक होयबे करितय संगहि प्राथमिक वर्गक मैथिली पाठ्य पुस्तक निर्माणक कड़ीमे ओ एकटा आदर्श ओ मानक रूपमे सोझाँ अबितय ।

शिक्षण संस्थान स्थापनामे सहयोग

डा. रामदेवझा शिक्षाक विस्तार हेतु सदिखन चिन्तनशील रहलाह अछि आ तेँ लहेरियासरायमे अनेक शिक्षण संस्थानक स्थापनाक ई प्रेरणास्रोत रहलाह अछि । 1970सँ

पूर्व दरभंगा जिला मुख्यालय लहेरियासरायमे कॉलेज नहि छल। एहि परिसरक छात्रकेँ दरभंगा जा कऽ पढ़ऽ पड़ैत छलैक। 1970मे डा. रामदेवझा अपन मित्र सेवानिवृत्त समाजशास्त्रक प्राध्यापक डा. राजेन्द्रझाक संग एहि प्रसंगपर विचार कऽ कऽ प्रख्यात अधिवक्ता ओ शिक्षाविद् नागेश्वरमिश्रसँ भेट कयलथिन। कॉलेज स्थापनाक दिशामे प्रयास सुरू भेल आ धीरे-धीरे बहुतो गोटा एहि अभियानक सहभागी बनि गेलाह। एम. एल एकेडमीमे पं. ललितनारायणमिश्रक हाथेँ 1970मे महारानी कल्याणी महाविद्यालय, लहेरियासरायक उद्घाटन कराओल गेल आ एहि नवस्थापित कॉलेजक पहिल वर्ग लेलनि डा. रामदेवझा। आइ ई कॉलेज लहेरियासराय नगरक एकटा प्रमुख शिक्षण संस्थानक रूपमे अपन परिचिति बना चुकल अछि।

लहेरियासरायमे एकटा महिला कॉलेज सेहो हो ताहि व्यग्रताक अनुभव हिनका होइत रहलनि। अत: वैद्यनाथचौधरी 'बैजू'केँ प्रेरित कऽ एतऽ मिथिला महिला कॉलेजक स्थापना करौलनि। चिकित्सक डा. भवनाथमिश्रक बेलवागंज स्थित आवासमे कॉलेजक उद्घाटन भेल आ एहू कॉलेजक पहिल वर्ग डा. रामदेवझा लेलनि। एहि कॉलेजक पहिल छात्रा छलीह मैथिलीक दिवंगता कवयित्री वाणीमिश्र। रामदेवझा अपना स्तरसँ बहुतो दिन धरि अपन छात्रवर्ग ओ स्वतन्त्र परीक्षार्थी लोकनिसँ स्वेच्छया देल चन्दाक संकलन कऽ कॉलेज प्रबन्धककेँ दैत रहलथिन किन्तु एहि कॉलेजकेँ स्थायित्व प्रदान करबाक दिशामे अनेक बाधा ओ एकर संचालक लोकनिक बहुतो दिन धरि प्रमादक कारणे लहेरियासरायमे महिला कॉलेजक अभावक पूर्त्ति ई नहि कऽ सकल। डा.रामदेवझा पुन: चिन्तनशील भेलाह। अनेक इष्ट-मित्र ओ कर्मठ कार्यकर्त्ताकेँ महिला कॉलेजक स्थापनाक हेतु प्रेरित करैत रहलाह। तखन 1984मे एकटा दोसर शिक्षण संस्थान नागेन्द्रझा महिला कॉलेजक स्थापना भेल। संकल्प लोक संस्थाक गर्भसँ निकलल एहू कॉलेजक प्रथम वर्ग लेबाक सौभाग्य डा. रामदेवझाहिकेँ प्राप्त भेलनि। एहि कॉलेजमे नामांकन हेतु लोककेँ प्रेरित करबाक हेतु ई सर्वप्रथम अपन कन्या कविता कुमारीक नामांकन करौलनि। वर्त्तमान समयमे सर्वसाधन सम्पन्न ई कॉलेज लहेरियासरायक प्रमुख शिक्षण संस्थानक रूपमे मान्य भऽ चुकल अछि।

दरभंगाक एम.एल.एस.एम कॉलेजक स्थापनाक प्रेरक लोकनिमे सेहो ई रहलाह अछि। हड़ाही पोखरिक मोहारपर जाहि भवनमे ई कॉलेज अछि से पहिने दरभंगा राजक धर्मशाला छल। कालान्तरमे ई धर्मशाला असामाजिक तत्त्वक अड्डा ओ कबाड़खानाक रूप धारण कऽ लेलक। दरभंगामे नाक परक एहि जमीन ओ भव्य भवनक उद्धार कोना हो ताहि हेतु ई एकर संस्थापक वैद्यनाथचौधरीकेँ प्रेरित कयलथिन जे जँ एहि जमीनपर शिक्षाक मन्दिर बना देल जाय तँ बेजाय की ?' हिनक यैह प्रेरणा एम.एल.एस.एम. कॉलेजक स्थापनाक कारक बनल। पछाति एही कॉलेजक गर्भसँ निकलल विद्यापति सेवा संस्थान सन संस्था।

उद्घाटन : लहेरियासरायमे एम.एल. एकेडमी सन स्कूल तँ छल मुदा एहि स्कूलमे सभक नामांकन कठिन छलैक आ पुनः एकरहु अपन सीमा छलैक । एहनामे एहि परिसरक विशाल आबादीक छात्रवर्गकेँ हाइस्कूलमे नामांकन हेतु बौआय पड़ैत छलैक । एहि शैक्षणिक समस्याक आंशिक समाधान हेतु 1976-77मे डा. रामदेवझा स्थानीय बुद्धिजीवी लोकनिकेँ एकत्रित कऽ लहेरियासरायक रेलवेलाइनक पूर्वी क्षेत्रमे एकटा हाइस्कूल स्थापनाक प्रयत्नक निर्णय कयलनि आ तकर बाद 'पूर्वाञ्चल उच्च विद्यालय'क नामसँ एकर स्थापना भेल जे आब राजकीयकृत भऽ चुकल अछि । एही विद्यालयक पृष्ठभूमिपर हिनक 'उद्घाटन' नामक कथा प्रकाशित भेल छलनि ।

वस्तुतः हिनक प्रेरणा ओ सहयोगसँ बहुतो शिक्षण संस्थानक स्थापना भेल अछि जे शिक्षाक ज्योति पसारऽमे अपन योगदान दऽ रहल अछि ।

घर-परिवार

ई जखन इंटरक छात्र रहथि ताही समयमे मैथिलीक एकटा प्रख्यात कवि अपन कन्याक हेतु प्रस्ताव लऽ कऽ हिनक पिता लग पहुँचलथिन । मुदा हिनक शिक्षानुरागी पिता ओहि प्रस्तावकेँ सविनय अस्वीकृत कऽ देलथिन आ कहलथिन जे-एखन विवाह करौलासँ हिनक आगाँक पढ़ाइ प्रभावित होयतनि ।'

दुर्भाग्यवश 1956मे हिनक पिताक निधन भऽ गेलनि, अपन पुत्रक विवाह देखब हुनक भाग्यमे प्रायः नहि लिखल छलनि । हिनक स्कूलक गुरु श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' हिनक तेजस्वितासँ पहिनहिसँ प्रभावित छलथिन । हिनक शालीनतासँ अमरजीक समस्त परिवार सेहो तहिना प्रभावित । अमरजीक माय अपन मृत्युसँ पूर्व किछु संकेत देने छलथिन । तदनुसार अमरजी अपन जेठ कन्या योगमाया जनिक दुलारक नाम बसुली छनि तनिका प्रसंगे कथाक उपन्यास कयलथिन। एहि लऽ कऽ अमरजीकेँ अपन सम्बन्धी वर्गक कटु निन्दा सेहो सहऽ पड़लनि जे स्वयं भलमानुस भऽ कऽ जयवारमे कुटमैती कऽ रहल छथि । मुदा अमरजी कुलीनताक एहि बन्धनकेँ तोड़ि मात्र मेधाकेँ महत्त्व दैत रामदेवझाकेँ अपन जमायक रूपमे वरण कयलनि आ 18 जून 1959केँ योगमायाक संग हिनक विवाह भेलनि । संयोग एहन जे विवाहक दोसर दिन हिनक स्नातक प्रतिष्ठाक रिजल्ट बहरयलनि । 19 जून 1959क अखबारमे मैथिली विषयमे प्रथम वर्गमे प्रथम । ई स्थिति हिनकालेल हर्षमय ओ विषादमय दुनू छल । विवाहक संग नवजीवनमे प्रवेश आ परीक्षामे टॉप दुनू एकहि संग मुदा ई शुभ कार्य देखबाक ओ पुत्रक उपलब्धिक बखान सुनबाक लेल हिनक पिता कपिलेश्वरझा एहि संसारमे नहि रहि गेल छलथिन ।

24 नवम्बर 1961केँ एस.पी कॉलेज दुमकामे प्राध्यापक पदपर योगदानक संगहि हिनक आर्थिक समस्याक समाधान भऽ गेलनि । विवाहक तेसरे वर्षे योगमाया

दुरागमन भऽ कऽ अपन सासुर कबिलपुर चल अयलीह । ओ अपन घर-गृहस्थी सम्हारि लेलनि । 1965मे हिनक जेठ सन्तान कृष्णदेवझाक जन्म भेलनि । कृष्णदेवक दुलारक नाम ललनजी छनि । ललनजी फिजिक्समे एम.एस-सी. छथि, फर्स्ट क्लास फर्स्ट । एकटा शिक्षक पिताक सन्तान होयबाक कारणेँ शिक्षणे वृत्तिमे जायब ई बेसी पसिन्न कयलनि । वर्त्तमानमे ई मध्य विद्यालय सहोड़ा (दरभंगा)मे पदस्थापित छथि । 1998 मे हिनक विवाह कसेरा (मधुबनी) निवासी श्रीकृष्णकान्तझा ओ एम. आर. एम. कॉलेज, दरभंगामे मैथिलीक प्राध्यापिका डा. इन्दिराझाक द्वितीया कन्या नीतूक संग सम्पन्न भेलनि । हिनका एकटा बालक प्रशान्त ओ एकटा कन्या रुचि छथिन । ललनजीकेँ सेहो साहित्यमे रुचि छनि आ यदा-कदा हिनक रचना सब पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहैत छनि ।

डा. रामदेवझाक दोसर पुत्र शंकरदेवकझाक जन्म 1969मे भेलनि । ई इतिहास विषयमे एम.ए. ओ पी-एच.डी. छथि । ई राँची विश्वविद्यालय, राँचीसँ पत्रकारिता ओ जनसंचार (बी.जे.एम.सी)मे पी.जी. डिप्लोमा सेहो कयने छथि । वर्त्तमानमे ई पत्रकारिता वृत्तिसँ जुड़ल छथि । 2000मे हिनक विवाह एस. पी. कॉलेज, दुमकामे मैथिलीक विभागाध्यक्ष पश्चात् प्रधानाचार्य डा. विद्यानाथझा 'विदित'क मध्यमा कन्या जाह्नवीक संग भेल छलनि । विवाहक मात्र सवा सालक बाद जाह्नवी एकटा नवजात पुत्रीकेँ जन्म दऽ कऽ अप्रैल 2001मे दिवंगता भऽ गेलथिन । ई दुर्घटना डा.रामदेवझाक परिवारकेँ जेना झकझोरि कऽ राखि देलकनि । 2004मे शंकरजीक विवाह मोहन-बढ़ियाम (मधुबनी) निवासी राजकुमारचौधरीक जेठ पुत्री कंचनमालाक संग सम्पन्न भेलनि । हिनका दूटा पुत्री जूही (रश्मिप्रिया) आ लिपि छनि । शंकरजी अपन पिताक साहित्यिक परम्पराकेँ आगू बढ़यबाक दिशामे प्रयत्नशील छथि । हिनक चारि गोट पोथी ओ कतोक शोध-समालोचनापरक आलेख, इतिहास विषयक रिसर्च पेपर सब पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित छनि । कतोक साहित्यिक पुरस्कार सेहो हिनका भेटलनि अछि ।

तेसर पुत्र विजयदेवझा छथिन । हिनका घरक नाम बच्चामे परागजी छलनि किन्तु आब राजू भऽ गेल छनि । हिनक जन्म 1977मे भेलनि । पटना विश्वविद्यालयसँ अंग्रेजीमे एम.ए.कयलाक बाद हैदराबाद विश्वविद्यालयसँ अनुवाद कोर्स आ पुनः जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, नई दिल्लीसँ जर्नलिज्म एंड मास-कम्युनिकेशनक कोर्स कयलनि । वर्त्तमानमे विजयदेव राँचीसँ प्रकाशित अंग्रेजी समाचार पत्र 'द पायोनियर'मे जीविकापन्न छथि । मैथिली ओ हिन्दीसँ अंग्रेजीमे अनुवाद करबामे हिनक विशेष रुचि छनि । हिनका द्वारा अंग्रेजीमे अनूदित कतोक रचना राष्ट्रिय ओ अन्तराष्ट्रिय स्तरक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भऽ चुकलनि अछि ।

जेठ कन्या ममताक जन्म 1967मे भेलनि । मैथिलीसँ स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त

ममता, बिहार सरकारक प्रशासनिक सेवामे वर्त्तमानमे दरभंगा जिलाक मनीगाछी प्रखंडमे महिला प्रसार पदाधिकारीक पदपर पदस्थापित छथि। हिनक विवाह सवास (मुजफ्फरपुर) निवासी ओ पटना आवासी पी. एच. ई. डी. क संयुक्त सचिव पदसँ सेवानिवृत अभियन्ता सत्यनारायणझाक जेठ अभियन्ता पुत्र भारतेन्दुकुमारझाक संग 1986मे भेलनि। हिनका तीन गोट कन्या शिल्पी, तूलिका ओ प्राची छनि जे सभ युगानुकूल तकनीकी ओ व्यावसायिक शिक्षा दिस अग्रसर छथिन।

मध्यमा कन्या कविता कुमारीक जन्म 1971मे भेलनि। ई इतिहास ओ संगीतमे एम. ए. ओ पी-एच.डी. छथि। हिनक विवाह मछैता (दरभंगा) निवासी जे. एन. कॉलेज, नेहरा (दरभंगा)सँ सेवानिवृत्त मैथिली विभागाध्यक्ष डा. भोलाझाक दोसर बालक सतीशकुमारझाक संग 1998मे भेलनि। सतीशजी जे.एन.बी., परतूर (महाराष्ट्र)मे भौतिक विज्ञानक शिक्षक (पी.जी.टी.) छथि। हिनका एक गोट कन्या कृतिका छवि ओ एकटा बालक अभिनव भास्कर (बिट्टू) छथिन।

सबसँ छोटि कन्या कल्पनाक घरक नाम विद्या छनि। हिनक जन्म 1974मे भेलनि। प्राचीन भारतीय इतिहास ओ संस्कृतिमे एम.ए. तथा बी.लिस.क डिग्री प्राप्त विद्याक विवाह 2005मे शोभेपट्टी-रामभद्रपुर (दरभंगा)क शोभाकान्तमिश्रक छोट बालक प्रभुकान्तमिश्रक संग भेलनि। प्रभुकान्तजी कोटेक महेन्द्रा बैंकमे मुम्बइमे रिजनल मैनेजर छथि आ ओतहि स्थायी रूपसँ रहैत छथि। हिनका दू गोट कन्या अनन्या ओ साम्या छनि।

आदर्श गृहणी

डा. रामदेवझाक छबहु सन्तान उच्च शिक्षा प्राप्त छथिन। सब साहित्यिक रुचिसँ सम्पन्न। तीनू कन्या संगीत ओ चित्रकलामे विशेष निपुण छथिन ओ विभिन्न प्रतियोगितामे ई लोकनि प्रशंसित-पुरस्कृत होइत रहलीह अछि। ई संस्कार हिनक सब पौत्र-पौत्री ओ दौहित्र-दौहित्रीमे सेहो क्रमशः विकसित भऽ रहल छनि। अपन धियापुताकेँ अनुशासित ओ संस्कारित करबाक दिस हिनका लोकनिक माय योगमाया आरम्भेसँ विशेष सचेष्ट रहलीह। हिनक अपन पढ़ाइ विवाहक कारणेँ बीचेमे छूटि गेल छलनि, तथापि आगाँ पढ़बाक हिनक सेहन्ता समाप्त नहि भेलनि। धियापुताक छेँटगर भेलाक बाद योगमाया पुनः एकबेर नवसँ अपन पढ़ाइ प्रारम्भ कयलनि आ मैथिलीमे स्नातकोत्तर धरि कऽ गेलीह। तदुपरि 'मैथिली साहित्यमे गंगा' विषयपर पी-एच.डी. कयलनि। हिनक ई मूल्यवान शोधप्रबन्ध आब प्रकाशनक पथपर छनि। डा. योगमायाझाक रचना सब सेहो यदा-कदा पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहलनि अछि। अपन पति डा. रामदेवझाक प्रत्येक गतिविधिमे हुनक संग पुरैत रहलथिन अछि। हिनकालेल परिवार सर्वोपरि रहलनि अछि। एम. ए. कयलाक बाद किछु दिन मिथिला महिला महाविद्यालय, लहेरियासरायमे

अध्यापन सेहो कयलनि । मुदा जखन ई अध्यापन हिनक अपन पारिवारिक दायित्वक निर्वहनमे बाधक बनऽ लगलनि तखन ई स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लऽ लेलनि। डा. योगमायाझाकेँ धर्म-कर्म, व्रत-उपवासमे विश्वास छनि । अतिथि सत्कारमे सेहो ई ततबे अग्रणी रहैत अयलीह अछि । डा. रामदेवझाक अध्यापन वृत्तिमे अयलाक बादसँ हिनका ओतऽ शिष्य, गवेषक, जिज्ञासु लोकनिक सतत आवाजाही लागल रहैत छनि । डा. योगमायाझा एहि अतिथि लोकनिक हेतु चाह, जलपान, भोजन आदिक प्रबन्ध करबामे दत्तचित रहैत अयलीह अछि । यद्यपि अतिथि सत्कारक निरन्तरताक कारणे हिनक अपन लेखन प्रभावित भेलनि । 1960-61मे ई मिहिरक माध्यमसँ लेखन सुरू कयने रहथि आ ओही गतिसँ लिखैत रहितथि तँ आइ कतेक आगू गेल रहितथि । तथापि एहि बातक हिनका कनेको कचोट नहि रहलनि । अपन पति ओ सन्तानक साहित्यिक उपलब्धियहिकेँ ई अपन चरम उपलब्धि मानैत छथि आ प्रसन्न रहैत छथि ।

डा. झाक अनुज बलदेवझाक पारिवारिक जीवन सुखद छनि । एकरा संयोग कहक चाही जे 24 नवम्बर 1961केँ दुनू भाय एके संगे नोकरी ज्वाइन कयने रहथि । 1963मे बलदेवझाक विवाह ढंगा-हरिपुरक गोवर्द्धनमिश्रक पुत्री मनोरमादेवीसँ भेलनि । हिनक चारि गोट सन्तानमे पुत्र द्वय इन्द्रदेवझा (सुमन) तथा चन्द्रदेवझा (रमण), पुत्री द्वय विभा (गुड्डी) ओ निभा (पुतली) उच्च शिक्षा प्राप्त छथिन । चारू भाय-बहिन अपना-अपना स्थानपर सुखी ओ प्रसन्न छथिन ।

घर-आश्रम

गाममे हिनक जे अपन पैतृक डीह छलनि ताहिमे देयाद लोकनि हिस्सा नहि देलथिन । पहिने जे मालक घर छल तकरे वास घर बना कऽ माता-पिता निर्वाह कयलथिन । मुदा दुनू भायक विवाहक बाद परिवार बढ़ला उत्तर ओहि संकीर्ण घराड़ीपर निर्वाह होयब कठिन होअऽ लगलनि । गाममे एकटा दोसर खतियानी जमीन छलनि ताहिपर घर बनयबाक सूर-सार कयलनि कि पुनः ओ देयाद लोकनि बाधा ठाढ़ कऽ देलथिन । तखन गाममेमे एकटा फराकसँ जमीन किनलनि । ओहिपर मकान बनायब प्रारम्भ कयलनि । खिड़की-केबाड़ी सब लागि गेल । मात्र छत देब शेष रहि गेल छलनि की बीचेमे एकदिन हिनक एकटा एहन प्रतिवेशी घनिष्ठ मित्र जनिका ई जी-जानसँ बढ़ि कऽ उपकार करैत रहलथिन, से हिनका संग विश्वासघात करैत जमीनपर जायवला सरकारी रस्तापर देबाल जोड़ि बाट बन्द कऽ देलथिन । ई तकर बाद एको बेर हुनकासँ एहि बातक चर्चो नहि कयलथिन आ ओहि अर्द्धनिर्मित घरकेँ ओहिना छोड़ि देलथिन जे औखन पर्यन्त ढहल-ढनमनायल पड़ल अछि । ओहि दुष्ट ओ कृतघ्न मित्रक मित्रताक फल यैह भेटलनि जे ओहिमे लागल जमा-पूजी पानिमे डूबि गेलनि ।

एहि दुर्घटनाक बाद पुनः एक बेर साहस जुटौलनि आ गामसँ उत्तर चन्द्रधारीसिंहक कॉलोनीमे मुख्य सड़कक कातमे एकटा पुरान मकान सहित जमीन कीनलनि । एही मकानक मरम्मति कराय 1975क जलप्लावनहिमे 11 अगस्तकेँ घरवास लेलनि । जमीन–मकानक एहि हेराफेरीक कारणेँ एहि नवका घराड़ीपर सुनियोजित ढंगसँ पक्का मकान नहि बना सकलाह । तथापि ओहि विषाक्त वातावरणसँ बाहर निकलि गेलाह, से कम सन्तोषप्रद बात हिनकालेल नहि छलनि। पछाति एही ठाम एकटा औरो भूखंड किनलनि ।

परिजन ओ कुटुम्ब

रामदेवझाक पिता कपिलेश्वरझा अल्पायु नहि, तँ दीर्घायु सेहो नहि भेलथिन । जखन ई इंटरक छात्र रहथि तहिये 1956मे आँखि मूनि लेलथिन । फलतः समस्त परिवार ओ कौटुम्बिकताक निर्वाहक दायित्व हिनक कान्हपर पड़ि गेलनि ।

हिनक पिता कपिलेश्वरझाक एकटा पिउसि सुसारीमे छलथिन, तनिक पुत्र अर्थात पिताक पिसियौत नरसिंहझा आ पश्चात् हुनक सन्तति लोकनिक संग पुरान सम्बन्धक निर्वहन करैत रहलाह अछि । सुसारीमे हिनक अपन सबसँ जेठ पिउसि पार्वतीक विवाह छलनि । ई अपन जेठ पिउसिकेँ देखनहुँ नहि छलाह । हुनका चारि गोट पुत्र क्रमशः पं. सूर्यनारायण, पं. सुबुधझा, पं. अनिरुद्धझा ओ पं. राजेन्द्रझा । ई सब पिसियौत विख्यात पंडित ओ बहुत वयसक छलथिन । प्रत्युत सबसँ जेठ सूर्यनारायणझा तँ हिनक पिताक समवयस्के छलथिन । सुसारीमे पंडित परिवारक नामसँ ख्यात हिनक पिउसिक दलानपर चौपाड़ि चलैत छलनि । आइयो ओहि गाममे हुनक दलानपरक माटिसँ बच्चाकेँ अक्षराम्भ कराओल जाइत छैक । हिनका दोसर पिउसि रामरतीक सासुर नवादा (दरभंगा)क एकटा गृहस्थ परिवारमे छलनि । तेसर पिउसि रामसखीक सासुर, नेनापट्टीक प्रसिद्ध विद्वान ओ दरभंगा महाराज महेश्वरसिंहसँ पुरस्कृत–सम्मानित प. भवदत्तझाक परिवारमे छलनि । हिनका घरमे प्राचीन पांडुलिपि ओ पोथीक नीक संग्रह छलनि । नेनापट्टीवाली पिउसि अपन सासुरक सारस्वत निधिक किछु अंश अपन भातिज रामदेवकेँ देलथिन जकरा ई आइ धरि सुरक्षित रखने छथि। एहि पीसीक बालक पं. रत्नेश्वरझा एखनहुँ छथिन । सबसँ छोट पिउसि रामसतीक सासुर सेहो सुसारी । रामसखी ओ रामसतीक मित्रता अधिवक्ता बाबू ब्रजकिशोर प्रसादक पुत्री ओ जयप्रकाशनारायणक पत्नी प्रभावतीक संग छलनि ।

डा. रामदेवझाक चारू पिउसि सखा-सन्तान सबसँ भरल-पुरल । हिनका लोकनिक पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र, आदि लोकनिक संग आइयो ई ओहिना सम्बन्ध बना कऽ रखने छथि । 1976मे जखन ई अपन नवीन आवासपर अपन बालक लोकनिक उपनयन

कयने रहथि ताहि अवसरपर तीनू परमवृद्धा पिउसि लोकनिकेँ लेयाओन करा कऽ अनने छलथिन। एहिना हिनक माय पूर्णायु प्राप्त कऽ कऽ 27 मइ 1999कें दिवंगता भेल छलथिन तँ हुनक श्राद्धक अवसरपर सब पिउसिक सखा-सन्तान लोकनि उपस्थित भेल छलथिन ।

डा.झाक बाल्यावस्थाक अधिकांश समय अपन मातृकहिमे बितलनि तेँ माम ओ मौसी लोकनिसँ विशेष स्नेह रहलनि । हिनक माय तीन बहिन ओ एक भाय । एकमात्र माम पं. रामजतनमिश्र परम वृद्ध भऽ कऽ 91-92 वर्षक वयसमे 1984मे दिवंगत भेलथिन। हिनका तीन गोट पुत्र ओ एक कन्या । ममियौत लोकनिमे जेठ पं रामसुजानमिश्र आब नहि छथिन। दोसर आ तेसर ममियौत तेजनारायणमिश्र ओ उदयकान्तमिश्र नीक स्थितिमे छथिन । ममियौत बहिन रामकलाक विवाह हिनक अपनहि गाम कबिलपुरक पुबारि टोलक परमेश्वरसँ छलनि । परमेश्वरझा अपना समयक नामी लोक आ गामक मुखिया रहथि। अपना सहोदर बहिन नहि रहलाक कारणेँ बहिन-बहिनोइक सौख-मनोरथ हिनकहि लोकनिसँ पुरैत रहलनि ।

हिनक माय बहिनमे सबसँ जेठि । ताहिसँ छोट हिनक मझिली मौसी राजकिशोरीक विवाह हिनक पार्श्ववर्त्ती गाम डरहारमे । सबसँ छोट मौसी रामकिशोरीक सासुर सहोड़ाक बगलेमे माखनपुर । हिनक मायहि जकाँ दुनू मौसी दीर्घजीवी भऽ कऽ मुइलथिन । मसियौतमे माखनपुरक रामकुमारचौधरी ओ डरहारक रामप्रीतचौधरी ओ राजकुमारचौधरी लोकनिक संग निरन्तर प्रगाढ़ सम्बन्ध बनल रहलनि अछि । मामा पं. रामजतनमिश्र तँ अपन वार्द्धक्यवस्थामे विशेष काल कबिलपुरहिमे हिनका ओतऽ रहल करथिन ।

विवाहक बाद डा. रामदेवझाक कौटुम्बिकताक पसार औरो बढ़लनि । हिनक श्वसुर पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क फराकसँ कोनो परिचय देबाक प्रयोजन नहि अछि । आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक पर्याय बनल अमरजीकेँ तीन गोट सन्तान । दूटा कन्या ओ एकटा बालक । डा.रामदेवझाक पत्नी योगमाया सबसँ जेठ ताहिसँ छोट सावित्री । सावित्रीक विवाह बलभद्रपुर निवासी स्टेट बैंकमे अधिकारी महेन्द्रझाक संग भेलनि । सावित्री सर्वगुण सम्पन्ना होइतो सन्तान-सुखसँ वंचित रहि गेलीह आ यैह कमी हिनका रुग्णा बना देलकनि जाहि कारणे मइ 2005मे हिनक निधन भऽ गेलनि । सम्बन्धे सारि होइतो डा. रामदेवझा सावित्रीकेँ सब दिन अपन सन्तानवत् बुझैत रहलथिन । सावित्री अपन मृत्युकालमे हिनका लोकनिसँ दूटा वचन लेलथिन । प्रथम ई जे हुनक मृत्युक बाद हुनक पति महेन्द्रझाक दोसर विवाह करा देल जाइनि, दोसर 'मैथिली गद्य साहित्यक विकासमे सुरेन्द्रझा सुमनक योगदान' विषयपर जे हुनक पी-एच. डी.क थीसिस छनि तकरा प्रकाशित करा देल जाइनि । डा. रामदेवझा सवित्रीकेँ देल ओहि दुनूटा वचनक

निर्वाह कयलनि । अपन साढ़ू महेन्द्रझाक विवाह नरहा (सीतामढ़ी) निवासी कालीकान्तझाक कन्या विभासँ करा देलथिन । महेन्द्रझाक घर एक बेर फेर बसि गेलनि । हिनका एकटा पुत्री मेधा आ एकटा बालक छनि । सावित्री तँ नहि रहलीह मुदा हुनक छवि विभामे देखैत ई अपन सम्बन्ध तद्वते बनौने छथि । महेन्द्रबाबू सेहो हिनका साढ़ूसँ बेसी अभिभावकक सम्मान दैत छथिन । सावित्रीक शोध-प्रबन्धकेँ ई अस्वस्थ रहितो परिश्रमपूर्वक 2008 मे 'आचार्य सुरेन्द्रझा सुमनक गद्य-गरिमा' नामसँ प्रकाशित करा देलथिन । ई ग्रन्थ मानस सन्तानक रूपमे सावित्रीकेँ अमरत्व प्रदान कऽ देलकनि अछि ।

हिनक एकमात्र सार शम्भुनाथमिश्रक जन्म हिनक विवाहक बाद भेलनि । जहिया अमरजी अपन कन्याक प्रसंग हिनका ओतऽ कथाक उपन्यास कयने छलथिन तहिया रामदेवझाक मायक मोन एहि लऽ कऽ छोट भऽ गेल छलनि जे हुनका बेटाकेँ सासुरमे सार नहि छनि । ओ छठि परमेश्वरीकेँ कबुला कयलथिन जे हुनका बेटाकेँ जँ सार होयतनि तँ ओ कोनियाँक अर्घ्य चढ़ौथिन । एकरा छठि परमेश्वरीक कृपा कही, हिनक मायक आशीर्वाद कही, 1962मे शम्भुनाथजीक जन्म भेलनि । हिनक दुलारक नाम मुन्नूजी छनि । डा. रामदेवझा मुन्नूजीकेँ सन्तानतुल्ये मानैत रहलथिन अछि । मैट्रिकसँ लऽ कऽ एम. ए. (मैथिली) धरि सर्वत्र प्रथम श्रेणी प्राप्त कयनिहार मुन्नूजी यद्यपि अपन कौलिक परम्पराक अनुसार शिक्षण-वृत्तिमे नहि जा सकलाह तथापि स्टेट बैंकक नोकरी करितो ई साहित्यसँ विशेष रुचि रखैत छथि, लेखन करैत छथि, मंचपर सस्वर कविताक पाठ कयल करैत छथि । 'मैथिली दधीचि बाबू भोलालादास' नामसँ हिनक एकगोट पोथी सेहो प्रकाशित छनि । हिनक विवाह कटैया (मधुबनी) निवासी जगन्नाथझाक कन्या अपर्णासँ भेल छनि । हिनका दू गोट बालक आदित्य ओ विभूति छथिन । दुनू भाय समकालीन शिक्षाक हेतु दत्तचित्त रहितो साहित्यकर्मसँ जुड़ल छथि ।

अमरजीक जेठ भाय गणेशमिश्रक जेठ पुत्र रमानाथमिश्र मिहिर मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार ओ प्रकाशक छलथिन । घरमे बचकुन नामसँ जानल जाइत मिहिरजीकेँ अमरजी अपनहि संग राखि कऽ पढ़ौलथिन-लिखौलथिन । रामदेवझाक जखन विवाह भेलनि तखन सारक रूपमे मिहिरेजी छलथिन । सार-बहिनोइक सम्बन्धक सेहन्ता हिनकहिसँ पूर्ण भेलनि । अतः दुनू गोटाक मध्य जतबे अत्यन्त माधुर्यपूर्ण घनिष्ठता रहलनि ततबे साहित्यिक क्षेत्रमे प्रतियोगिता सेहो । मुदा दुर्भाग्यवश 1999मे मिहिरजीक असमय निधन भऽ गेलनि । मिहिरजीक छोट भाय कलानाथमिश्र छथिन जनिक घरक नाम टुनटुन छनि । ई गृहस्थ छथि । गणेशमिश्रक दुइ गोट कन्यामे जेठकीक विवाह सनहा (बेगूसराय) ओ छोटकीक विवाह श्याम सिधप । हिनकहु लोकनिक संग डा. रामदेवझाक मधुर सम्बन्ध बनल रहलनि अछि । एतबे नहि अमरजीक दूरक सम्बन्धी लोकनि यथा हुनक भातिजक सम्बन्धमे अबैत डा. जयकान्तमिश्र, डा. कृष्णकान्तमिश्र, प्रो. रमाकान्तमिश्र (सी.

एम. कॉलेजसँ सेवानिवृत्त अंग्रेजीक प्राध्यापक), अमरजीक सम्बन्धेँ माम प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी ओ साहित्यकार डा. सुभद्रझा, अमरजीक सम्बन्धेँ भागिन प्रसिद्ध कवि वैद्यनाथमिश्र 'यात्री', गुरु-शिष्यक सम्बन्धेँ भातिज प्रसिद्ध गीतकार रवीन्द्रनाथठाकुर, एहिना दूरक सम्बन्धेँ अमरजीक भातिज सुधांशु शेखर चौधरी इत्यादि लोकनिक संग हिनक मधुर सम्बन्ध रहलनि ।

वेश-भूषा, परिधान ओ रहन-सहन

छात्र जीवनसँ लऽ कऽ प्राध्यापकीय जीवन ओ साहित्य अकादेमी सन संस्थाक सदस्य होयबा धरि डा. रामदवेझाक जीवन शैलीमे कोनो विशेष परिवर्त्तन नहि अयलनि । ई सब दिन सादगी-पसन्द व्यक्ति रहलाह अछि । छात्र जीवनमे हिनक परिधान धोती आ कमीज छलनि । दहिना कानमे कनौसी । पछाति आइ. ए.क बाद कनौसी निकालि लेलनि । परिधान मुदा पूर्ववते । माथपर शिखा बेस मोटगर । हिनक एही स्वरूपकेँ लक्ष्य करैत गोपालजीझा 'गोपेश' मिथिला मिहिरमे प्रकाशित अपन **अंगरेजीफूलक डायरीमे** हिनक धोती ओ शिखापर व्यंग्य कयने छलथिन । प्राध्यापक बनलाक बाद कमीजक स्थान कुरता लऽ लेलक । टीक स्वतः पतराइत चल गेलनि । चप्पलक स्थानपर पैरमे हाफ-शू पहिरऽ लगलाह । आवागमनक माध्यम साइकिल रहलनि । सी. एम. कॉलेजसँ लऽ कऽ नरगौना पैलेस स्थित स्नातकोत्तर मैथिली विभाग धरि वर्ग लेबाक हेतु साइकिलसँ जाइत रहलाह आ से सब दिन नियते समयपर पहुँचल करथि । हिनक साइकिल सवारीकेँ लऽ कऽ बहुधा व्यंग्यो कयल जाइनि । फगुआक अवसरपर पत्र-पत्रिकामे हिनक नामक आगाँ 'साइकिलसँ विश्व भ्रमण' सन उपाधि जोड़ल जाइनि । पछाति 1986मे एकटा स्कूटर किनलनि । किछु दिन एकरा चलयबाक अभ्यासो कयलनि मुदा पुनः अपन पुरने सवारीपर चल अयलाह ।

मिथिलाक भोजन परिपाटीक अनुरूपेँ हिनक खान-पान छनि । माछ-मांस खाइतो ओकर विशेष प्रेमी नहि । प्रायः मातृकक वैष्णवी परम्पराक किछु प्रभाव हिनक संस्कारपर छनि । दूध, दूधसँ बनल वस्तुक विशेष प्रेमी । धात्रीक चटनी ओ तेतरिक खटमिट्ठी विशेष प्रिय छनि ।

धार्मिक आस्था ओ कर्मकांड

धर्म-कर्ममे हिनक आस्था छनि, मुदा बहुत बेसी धार्मिक कर्मकांडक आडम्बर पसारबाक हिनका पलखतिये नहि रहलनि अछि । स्नानक बाद विधि-विधानपूर्वक सन्ध्यावन्दन तँ नहि मुदा गायत्री ओ सावित्री मन्त्रक जाप अवश्य करैत छथि । दीक्षित भेलाक बादसँ अपन इष्ट मन्त्रक जाप सेहो करैत छथि ।

धार्मिक दृष्टिसँ तीर्थाटन करबाक अभिरुचि नहि रहलनि, मुदा देशाटनक क्रममे

मार्गमे जे कोनो प्रसिद्ध तीर्थस्थान ओ मन्दिर भेटलनि तँ ओतऽ जा कऽ आवश्यक रूपसँ दर्शन-पूजन करितहिटा छथि । जावत ई दुमकामे रहलाह तँ ओतऽसँ गाम अयबा काल वैद्यनाथधाममे रुकि कऽ पूजा-अर्चना करैत रहलाह । गीता, रामायण, पुराण किंवा कोनो अन्य धर्मग्रन्थकेँ ई पुण्यलाभक दृष्टिसँ नहि अपितु साहित्यिके दृष्टिसँ पढ़ल करैत छथि । पितृपक्षमे ई तर्पण-पार्वण करैत छथि । पहिने आर्द्राक (अरदारा) पार्वण सेहो कयल करैत छलाह । पटना ओ दुमका प्रवासक क्रममे ओ छूटि गेलनि से छुटले रहि गेलनि । माता-पिताक बरखी प्रति वर्ष ई विधानपूर्वक करैत छथि ।

राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघसँ सम्बद्धता

डा. झाक आस्था प्रखर राष्ट्रवादक प्रति छनि , तकर कारण अछि संघसँ हिनक प्रत्यक्ष सम्बद्धता । ई अपन छात्रहि अवस्थासँ संघक शाखामे जाइत रहलाह । हिनक पैतृक गाम कबिलपुरमे संघक जड़ि बड़ मजबूत छलैक । किछु वर्ष धरि ई शाखाक मुख्य शिक्षक सेहो रहलाह । बादमे व्यस्तता बढ़लाक बाद ई संघक शाखामे जायब छोड़ि देलनि । आरम्भमे राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघकेँ राष्ट्रभाषा हिन्दीपर अत्यन्त जोर तथा मैथिलीक प्रति विरक्ति जकाँ रहल करैक । इहो कारण छल जे पश्चात् शाखाक नियमित उपस्थितिसँ विरत रहऽ लगलाह । गुरु पूर्णिमाक अवसरपर ई नियमित रूपसँ गुरुदक्षिणा देबाक हेतु संघ कार्यालय जाइत रहलाह अछि । अनेक बेर संघ द्वारा हिनका बौद्धिक व्याख्यानक हेतु सेहो आमन्त्रित कयल जाइत रहलनि अछि ।

राजनीतिमे रुचि

डा. रामदेवझा कहियो प्रत्यक्ष रूपसँ ने तँ राजनीतिमे रहलाह आ ने कोनो राजनीतिक दलक सदस्यते ग्रहण कयलनि । देशक जे कोनो सर्वमान्य नेता पं. जवाहरलालनेहरू, लालबहादुरशास्त्री, विनोवाभावे, राममनोहर लोहिया, अब्दुलगफ्फार खाँ (सीमान्त गान्धी) इन्दिरागाँधी, अटल बिहारी वाजपेयी आदिक जँ कहियो दरभंगामे सभा भेलनि तँ पलखति भेटलापर ई भाषण सुनबाक हेतु अवश्य जाइत रहलाह । राजनीतिक घटनाचक्रपर ई अपन तीक्ष्ण दृष्टि रखैत छथि, राजनीतिक प्रश्नपर खुलि कऽ विमर्श करैत छथि ।

आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क संग अत्यन्त निकटता रहबाक कारणेँ हुनक चुनाव अभियानमे हिनक सघन सहभागिता देखल गेलनि । एकटा मैथिलीक विद्वान द्वारा चुनावी समर क्षेत्रमे उतरबाक कारणेँ एहिमे सक्रिय रूपसँ भाग लेने रहथि ।

1977मे आपातकालक समाप्तिक बाद भेल लोकसभा चुनावमे आचार्य सुमन दरभंगा लोकसभा क्षेत्रसँ जनतापार्टीक प्रत्याशी बनाओल गेलाह । सुमनजीक संग घनिष्ठता ओ राष्ट्रव्यापी राजनीतिक परिवर्त्तनक आकांक्षाक अनुरूपे ई ओहू चुनावमे हुनका संग अभियानमे भाग लेलनि ।

ई सतत एहि बातक पक्षधर रहलाह अछि जे मतदान प्रत्येक भारतीय नागरिकक जन्मसिद्ध अधिकार ओ कर्त्तव्य थिकैक । एकर प्रयोग अवश्य करबाक चाही । मत योग्ये व्यक्तिकेँ देबाक चाही आ अवश्य देबाक चाही ।

शुभमस्तु

डा. रामदेवझा अपन जीवनमे निरन्तर अबैत विभिन्न प्रकारक विघ्न-बाधाक उपरान्तो कहियो अपन लक्ष्यसँ विचलित नहि भेलाह । सव्यसाची अर्जुन जकाँ अपन लक्ष्यक सन्धान करैत रहलाह अछि । एकटा सामान्य परिवारमे जन्म लऽकऽ पालित-पोषित भेनिहार ई जँ स्वयंकेँ मात्र एकटा सामान्ये व्यक्ति जकाँ ठाढ़ कऽ लितथि तँ तकरो छोट उपलब्धि नहि कहल जैतय । मुदा ई अपन संघर्ष ओ आत्मबलसँ जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे जे प्रतिष्ठा ओ सम्मान अर्जित कयलनि से समाजमे एक मानदण्डे मानल जाइत अछि । अपन जीवनक आरम्भहि कालमे जँ ई विद्या व्यसनकेँ अपन जीवनक चरम लक्ष्यक रूपमे देखलनि तँ फेर दोसर दिस घूरि कऽ तकबो नहि कयलनि । एकनिष्ठ भऽ सरस्वतीक आराधना करैत सफलतम प्राध्यापक रूपमे मान्य भेलाह आ मैथिलीक 'आचार्य' ओ 'पंडित' सन विभूषणसँ विभूषित भेलाह । अपन बाल्यावस्थहिमे लेखनी गहि कऽ साहित्यदेवताक जे आराधना प्रारम्भ कयलनि ताहि बलेँ आइ ई साहित्यक चरमोत्कर्षपर पहुँचल छथि । मैथिलीये नहि अपितु भारतीय साहित्य हिनक लेखनीसँ समृद्ध ओ गौरवान्वित भेल अछि । यैह एकनिष्ठ साधना हिनक सर्वोच्च गुण थिकनि आ यैह हिनक जीवनक चरम सफलता थिकनि । डा. रामदेवझाक जीवन दर्पणक अवलोकन कयला उत्तर चाणक्यक एकटा नीतिक स्मरण भऽ अबैत अछि जे हिनकापर शब्दशः बैसैत छनि–

स जीवति गुणा यस्य यस्य धर्म स जीवति ।
गुण धर्म विहीनस्य जीवितं निष्प्रयोजनम् ॥

अर्थात् जकरामे गुण ओ धर्म छैक वैह मनुष्य वास्तवमे जीवित अछि । गुण आ धर्मसँ हीन मनुष्यक जीवन व्यर्थ अछि । शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥





डा. शंकरदेवझा

एम. ए. (इतिहास), पी-एच.डी.
कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-1

प्रकाशन :

1. अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार (पत्र साहित्य), 2001
2. सन्धि-समास (कथा संग्रह), 2008
3. व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहनझा (जीवनी), 2008
4. कवीश्वर स्मरणिका (सम्पादन), 2008
5. तर्पण (सह-सम्पादन), 2010
6. छाहक डड़ीर (अंग्रेजी उपन्यास 'द शैडो लाइन्स'क मैथिली अनुवाद), 2011
7. सुरेन्द्रझा सुमन रचना संचय (सह-सम्पादन), 2011
8. संत लक्ष्मीनाथ मैथिली-पद-संचय (सम्पादन), 2011
9. स जीवति गुणा यस्य (जीवन रेखाङ्कन), 2011
10. सप्तपदी (सात गोट मैथिली कथाक संस्कृत अनुवाद), 2011

